प्रश्नोत्तर लेखक- आगम मनीषी श्री तिलोक मुनि जी

प्रकाशक-मुद्रक-प्राप्ति स्थान-

मनीष चोपडा
माणक ऑफसेट प्रिन्टर्स
दैनिक जनगण भवन
महात्मा गाधी अस्पताल रोड
पोस्ट - जोधपुर - ३४२००१ (राजस्थान)

मूल्य- १०/-

१५ अगस्त- १९९६

प्रति- ३०००

३२ आगमों के प्रश्नोत्तर ३२ पुस्तकों में
संपूर्ण सेट अग्रिम ग्राहक- ५००/- रूपये

ड्राफ्ट एवं M.O. भेजने का नाम- ललित चन्द्र मणीलाल सेठ
पता- शंखेश्वर नगर- रतनपर, P.O. जोरावर नगर- ३६३०२०
जिला-सुरेन्द्रनगर (गुजरात)

लीबडी अजरामर सम्प्रदाय के गादी पति पूज्य महाराज

श्री नरसिंह स्वामी जी के

आशीर्वचन

बतीस जैनागमो ना रहस्य ने सामान्य पाठको अने विशेष करीने जैन
साधु-साध्वीजीओ सरल भाषामां समझी सके, ऐवा पवित्र आशय
श्री ३२ शास्त्रो नो दोहन करी आपणी समक्ष एनो सार टूकमा श्री
तेलोक मुनिजी ए प्रकट करेल छे। हवे तेओ एज जैनागम
नवनीत ने सरल प्रश्नोत्तर रूप मां संवाद बणावी जैन
समाज ने समर्पित करवानु भगीरथ पुरुषार्थ उपाडी
रह्या छे। मुनि श्री ना आ महान उपकारी कार्य ने
शीघ्र पूर्ण सफलता मले एवा म्हारा अतरना
शुभाशीर्वाद पाठवु छुं अने एवी आशा
राखू छूँ के आगम मनीषी मुनिराज
श्री आगमों नो मथन करी ने जैन
समाज ने नवा नवा रुपमा
आगम अमृतरस नु पान
उदारता पूर्वक
करावता रहे।
एज अतर नी भावना !

—नरसिंह मु

दिनाक २-८-९६, सुरेन्द्रनग

प्रकाशकीय

आज का मानव वैज्ञानिक साधनो के माध्यम से जीवन के अमूल्य समयो को बचाने का ज्यो ज्यो प्रयत्न करता है टेलीफोन वाहन आदि विविध सफल यंत्रो का उपयोग करता है फिर भी स्वाध्याय सदनुष्ठान के लिये प्रेरणा पाने पर अधिकांशत. भाग्यशाली धर्मेच्छुक सज्जन युवा आदि के मुख से समयाभाव का उत्तर ससकोच निकलता पाया जाता है ।

ऐसे इस भौतिक युग मे भी स्वाध्याय प्रेमी आगम रसिक आत्माओ का एकांत अभाव नही माना जा सकता । हर क्षेत्रो के अदर स्त्री पुरुष बाल युवा प्रौढ एवं वृद्ध श्रावक श्राविका साधु साध्वी कोई न कोई जिज्ञासु मिल ही जाते हैं। वह सख्या भले एक प्रतिशत से भी बहुत कम हो सकती है फिर भी उसे नकारा नही जा सकता, यह अनुभव सिद्ध बात है ।

स्वाध्याय मे भी कथा या उपदेश की रूचि वालो से आगम की रुचि वाले कम मिलेगे । उसमे भी आगम तत्त्वो को कुछ रूपांतरित या सरलीकृत करके प्रचार माध्यम से जन जन तक पहुचाया जाय तो वह प्रयत्न अधिक उपयोगी हो सकता है ।

इसी दृष्टिकोण को ध्यान मे रखकर बतीस आगमो का साराश जैनागम नवनीत के रूप से सरल भाषा मे पाठको तक पहुंचाया गया । अल्प समय मे ही वह कार्य पूर्ण हुआ और उसके मौलिक उद्देश्य मे

आशातीत सफलता पाई गई। कई पुस्तको की द्वितीयावृत्ति तृतीयावृत्ति भी निकालनी पडी।

जैनागम नवनीत के प्रचार प्रसार एवं अध्ययन अध्यापन से जिज्ञासु सज्जनो की जिज्ञाशाएं आने लगी। उन्हे यथा समय समाधान लिखित भेजा गया अथवा प्रत्यक्ष मौखिक भी दिया गया। धीरे-धीरे सकलन बढ़ता गया। साथ ही हित सूचक महानुभावो का यह संकेत निर्देश मिला कि आगमिक तत्त्वो को प्रश्नोत्तर के माध्यम से स्वाध्याय प्रेमी सज्जनो तक पहुचाया जाय।

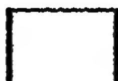
इसीलिये आगम अध्ययन की भावनाओ को बल मिले इस हेतु एव साराश लेखक आगम मनीषी मुनिराज श्री के आगम ज्ञान का उपयोग लेने की भावनाओ की अभिवृद्धि हेतु पाठको के प्रेरक पत्राशो से सयुक्त यह प्रश्नोत्तर का उपक्रम प्रारभ किया गया है। पाठको से यह संबोधन सूचित किया जाता है कि वे प्रश्नोत्तरो के मूल आशय मे आगम महत्व को सदा आगे रख कर हृदयंगम कर कुछ ज्ञान पाने का प्रयत्न करेगे। किन्तु आगम कथन एवं आगम आज्ञाओ से अधिक धारणा परपराओ को महत्व न दे। आगम महत्व सर्वोपरी है व्यक्ति महत्व अपनी सीमा तक रहे, आगम से भी अधिक स्थान न ले, यह सदा ध्यान रखना चाहिये।

सक्षेप मे समझना यह है कि धारणा, परम्परा या व्यक्तिगत चितन आगम निरपेक्ष नही होना चाहिये एव आगम आशय से और आगम

वाक्यो से विपरीत प्ररुपणा कभी भी नही करनी चाहिये। भूल से नासमझी से या परम्परा से कोई आगम विपरीत प्ररुपणा की जाती हो तो आगम की जानकारी मिलते ही समझ मे आ जाने के बाद वैसी प्ररूपणा का आग्रह कदापि नही रखना चाहिये। इस विवेक को रखते हुए अध्ययन करने पर इस हमारे उपक्रम से अवश्य लाभ प्राप्त किया जा सकेगा।

लीबडी अजरामर संप्रदाय के गादी पति पूज्य महाराज श्री नरसिह जी स्वामी ने आशीर्वचन लिख कर एवं पूज्य श्री प्रकाशचन्द्र जी स्वामी ने प्रस्तावना लिखकर इस पुष्प की महत्ता में चार चाद लगाये है उनके प्रति मैं हार्दिक उल्लास के साथ कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। साथ ही जिन जिन धर्म श्रद्धालु सज्जनो श्रमण श्रमणियो के पत्राशो का यहा संकलन दिया है उनके प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

मनीष चोपडा
जोधपुर



प्रस्तावना

- मुनिश्री प्रकाशचन्द्र जी स्वामी

(अजरामर सम्प्रदाय)

पडिपुच्छणयाए ण भते ! जीवे किं जणयइ ?

पडिपुच्छणयाए ण सुत्तत्थतदुभयाइ विसोहेइ। कंखा मोहणिज्ज कम्म वोच्छिदइ। *(उतरा. अ २९ प्रश्न २०)*

प्रतिपृच्छना - शास्त्र विषयो की चर्चा से जीव को क्या लाभ होता है ?

जिज्ञासा बुद्धि से प्रश्न चर्चा करने से जिज्ञासु सूत्र व उसके अर्थ और रहस्यो को खोज पाते है तथा काक्षा मोहनीय कर्म को (मतिविपर्यास) को दूर करते है।

शास्त्रो के प्रश्न जिज्ञासा बुद्धि से पूछने से कितना लाभ होता है, यह भगवान श्री महावीर ने फरमाया है। शकाओ का समाधान होने से आत्मा को बडा ही आनद आता है।

आगम मनीषी पू श्री तिलोकमुनि जी हमे पाच वर्ष पूर्व अहमदाबाद मे मिले थे। चार दिन नारायणपुरा स्था. जैन उपाश्रय मे साथ रहे। बहोत प्रश्नोत्तर हुए। आप श्री आगम शास्त्रो के प्रखर विद्वान ही नही अपितु खोजी भी है। प्रत्येक विषय मे गहरा चिंतन भी करते है। प्रत्येक प्रश्न का वास्तविक शास्त्रानुसार समाधान करने की आपकी कला अवर्णनीय है अर्थात् इस विषय मे आपकी मास्टरी है।

दो वर्ष पूर्व आपका चातुर्मास माणसा (उ० गुज०) मे था तब आपको हमने कच्छ मे विद्याध्ययन-शास्त्रो की वाचना कराने के लिये बुलाया। आपश्री ने सरलता से हमारी अर्ज को स्वीकार किया और शास्त्रो की वाचना कराते हुए यह दूसरा वर्ष चल रहा है। अजरामर सप्रदाय के बहोत सत सतियो ने और श्रावको ने काफी लाभ लिया। आपने हमारे सप्रदाय के उपर महान उपकार किया है। आपको अजरामर सघ कभी भूल नही सकता।

शास्त्र वाचना की इस अवधि मे जो जो प्रश्नोत्तर प्रत्यक्ष होते और बाहर से सत सतिया जी और स्वाध्यायी पत्र से पूछते, उनका अच्छा सकलन होता गया। मेरी भावना और आवश्यकता को लक्ष्य मे रख यह सार्थक नामवाली 'जैनागम नवनीत प्रश्नोत्तर' पुस्तक तैयार कर प्रेरणा दाई पुरुषार्थ श्री तिलोक मुनि जी ने किया है। इसमें मुख्य-मुख्य और आवश्यक प्रश्नोत्तरो का सकलन किया है। जिससे जिज्ञासुओ का समाधान अच्छा हो सकेगा।

आगमो की अटल एव शुद्ध श्रद्धा के साथ खोज पूर्ण चिंतन से दिये हुए ये सभी उतर शाति से पढ़ने जैसे हैं। चतुर्विध सघ इस प्रश्नोत्तरो का बहुत लाभ लेकर पुच्छणा स्वाध्याय द्वारा ज्ञानावरणीय कर्मो की निर्जरा करे, ऐसी शुभ भावना.

सुज्ञेषु किं बहुना?

दि १-८-९६ सुरेन्द्रनगर

अवश्य पढ़े - अवश्य पढ़े

उदारमना महानुभाव एक एक पुस्तक
का सपूर्ण खर्च सहयोग करने की
उदारता करेगे तो ३२ सूत्रो के
प्रश्नोत्तरो की ३२ पुस्तको का
सुदर सपादन हो
सकेगा ।

नोट -१. एक पुस्तक का सम्पूर्ण सहयोग १५०००/- रु रखा है दो हजार प्रति का ।
उदारमना सज्जन द्वारा प्रेसित फोटो सहित परिचय पुस्तक मे दिया जायेगा ।

२. एक पुस्तक में तृतीयाश सहयोगी फोटो नाम युक्त लेने के प्रावधान में ५०००/- रु भेजने वाले उदारमना सज्जनो को मौका दिया जायेगा ।

ड्राफ्ट एवं M.O. भेजने का पता- ललित चन्द्र मणीलाल सेठ
पता- शंखेश्वर नगर- रतनपर, P.o. जोरावर नगर- ३६३०२०
जिला- सुरेन्द्रनगर (गुजरात)

आवश्यक शिक्षा- वाक्य

- शब्दो को न देखो भावो को देखो ।
- अवगुण की चर्चा न करो गुण ग्रहण करो ।
- परम्पराओ के दुराग्रह मे न फसो ।
- उदारहृदयी बनकर नूतन तत्त्वो का अनुप्रेक्षण करो ।
- समभाव और समाधि भावो को मत गुमावो ।
- किसी के प्रति वैर विरोध या कलुष भाव को मत रखो ।
- आगमो के प्रति सर्वाधिक सम्मान हो ।
- आगम निरपेक्ष परम्पराओ को पकडे रहना मूर्खता है ।
- आगम विपरीत परपराओ का दुराग्रह करना महामूर्खता है ।
- उत्कट त्याग मे भी धर्म विवेक होना आवश्यक है ।
- अनुकपा तो समकित का मुख्य लक्षण है ।
- हिसा एव आडबर की प्रवृतिये धर्म नही कितु धर्म मे आई हुई वि परम्पराए हे वे त्याज्य हैं ।
- अखूट समभाव की उपलब्धि होना ही धर्म साधना की सच्ची सफलता है
- कही भी किसी से भी कर्म वध नही करे यही ज्ञान का सार है ।
- भावो की शुद्धि एव हृदय की पवित्रता यही साधना का प्राण है ।
- आगम निरपेक्ष चितन नही होना चाहिये ।
- आगम ही छद्मस्थो के लिये सर्वोपरि है ।
- जो आगम प्रमाण के सामने आने पर भी परपरा और पूर्वजो की दुहाई दे हे उन्हे आगे करते है वे धर्म के मर्म से दूर है ।

विषयानुक्रमणिका

विषयानुक्रमणिका

जैनागम नवनीत प्रश्नोत्तर

१ पच परमेष्ठी पद के कितने गुण आगम-शास्त्रो मे बताये है ?

नमस्कार मत्र मे आये पच परमेष्ठी पदो का गुणो की अपेक्षा मूल दो पदो मे समावेश किया जा सकता है यथा- १ सिद्ध २ साधु । शास्त्रो मे इन दो पदो के गुणो का स्पष्ट सख्या के साथ कथन हुआ है । अन्य तीन पदो के गुणो का वर्णन शास्त्रो मे अलग-अलग आया है किन्तु कोई भी प्रचलित सख्या का कथन आगम मे नही हैं ।

शास्त्रो मे सिद्धो के ३१ गुण और साधुओ के २७ गुण की सख्या कही गई है । अरिहत आचार्य उपाध्याय भी श्रमण तो है ही । उनमे भी साधु के २७ गुण तो होना आवश्यक है ।

प्रश्न- २. सिद्धो के गुण ८ है या ३१ ?

उत्तर- समवायाग सूत्र ओर आवश्यक सूत्र मे सिद्धो के गुणो की सख्या ३१ कही है । उसी को सक्षिप्त करने से आठ हो जाते है ।

प्रश्न- ३ अरिहत के १२ आचार्य के ३६ उपाध्याय के २५ गुण की सख्या किस शास्त्र मे है ।

उत्तर- ये सख्याए परपरा से चल रही है आगम मे ये सख्याए नही है ।

प्रश्न- ४ सामान्य केवली नमस्कार मत्र के किस पद मे है ?

उत्तर- नमस्कार मत्र का पहला पद तीर्थकरो का हे । जो कि सिद्धो से पहले नमस्करणीय हे, उपकारी सघ सस्थापक होने से ।

सामान्य केवली सिद्धो से भी पहले नमस्करणीय नही हो सकते। अत सामान्य केवली पाचवे पद में है। क्यो कि तीसरा ओर चौथा पद तो जिनको सघ व्यवस्था के लिये आवश्यक होने से दिया गया हो वे ही उस मे गिने जाते है।

५. **वदना तीन बार करने का किस शास्त्र में लिखा है ?**

तिक्खुत्तो के पाठ से वदन करने का वर्णन अनेक शास्त्रो मे है। वहा तीन बार आवर्तन करने का पाठ है। तीन बार उठ बैठ करने का नही।

६ **ज्ञान दर्शन चारित्र तीन गुणो की अपेक्षा तीन बार वंदन करते है ?**

अपेक्षा से ऐसी कथन परपरा चल रही है। सिद्धों मे ज्ञान दर्शन दो ही है और गुण ३१ है तो भी तीन बार ही वदन किया जाता हें अत विनयभाव के पूर्ण प्रकटीकरण के लिये तीन त्रार वदन किया जाता है। लोकिक व्यवहार मे भी किसी बोली को निश्चित करने के लिये तीन बार कही जाती हैं।

आगम रायप्पसेणीय सूत्र मे सूर्याभ देव का वर्णन है। उसने जब अपने विमान मे रहे हुए तीर्थकर प्रभू को वदन किया था उस वर्णन मे भी उसके तीन वार भूमि पर मस्तक लगाने का कथन हे। किन्तु तीन बार उठ बेठ करने की परम्परा आगम पाटो से नही निकलती हे। फिर भी तीन की सख्या का महत्व आगम मे और लोकिक मे दोनो मे होने से विनय के पूर्ण प्रकटीकरण के लिये तीन वार उठ वेठ कर वदन करने की परपरा को अनुचित या व्यर्थ नही कहा जा सकता। किन्तु उससे आगे वढ़कर जो तीन की सख्या का उल्लघन कर १०८ या १००८ या अन्यान्य सख्या में वदन करने की कायिक

प्रवृति बढाई जाती है वह प्रवृति अवश्य विचारणीय हे ।

प्रश्न- ७ आज्ञा सीमधर स्वामी की लेनी चाहिये या महावीर स्वामी की ?

उत्तर- अपनी अपनी परपरा के अनुसार किसी की भी आज्ञा ले ली तो उसमे विरोध करने या खडन करने जैसी कोई बात नही है । किन्तु चितन दृष्टि से अपने शासन पति की आज्ञा ले लेना उपयुक्त है ।

एक महाविदेह क्षेत्र मे चार तीर्थकर हैं । उनमे से किसका नाम लिया जाय और कौन भरत क्षेत्र से सबधित है ? यह प्रश्न होगा जब कि शास्त्रो में वर्णित परोक्ष वदन मे दूसरा णमोत्थुण अपने शासन पति तीर्थकर मोजूद है तो उनको दिया जाता है और वे निर्वाण प्राप्त हो चुके हो तो दूसरा णमोत्थुण अपने धर्माचार्य को दे दिया जाता है किंतु महाविदेह के विहरमान तीर्थकर को कहीं भी णमोत्थुण नही दिया जाता हैं । इससे भी यह स्पष्ट होता है कि शासन पति की आज्ञा लेना विशेष उपयुक्त है ।

प्रश्न- ८. हमारे भरत क्षेत्र से ज्यादा निकट विहरमान तीर्थकर कौन से है ?

उत्तर- महाविदेह में विचरण करने वाले विहरमान तीर्थकरो के नाम शास्त्र मे नही है और उनका वर्णन विस्तार भी नही है । ग्रथो मे बीस विहरमान के नाम है यथा- १ सीमधर २ युगमधर ३ बाहु ४ सुबाहु आदि । ये चार तीर्थकर हमारे जम्बूद्वीप के महाविदेह मे है । इनमें से ९ वी विजय मे जो तीर्थकर हे वे हमारे क्षेत्र की अपेक्षा निकट होते है । ज्ञानादि गुणों की अपेक्षा सभी समान हे और उपकार की अपेक्षा अपने अपने शासन

पति तीर्थकर निकट गिने जाते है ।

९. **तीर्थकर सिद्ध एक समय मे कितने होते है ?**

जघन्य एक उत्कृष्ट चार तीर्थंकर सिद्ध एक समय मे हो सकते है। भरत एरावत क्षेत्र के दो तीर्थंकर सिद्ध एक समय मे हो सकते है। स्त्री तीर्थंकर सिद्ध भी उत्कृष्ट दो भरत एरावत की अपेक्षा हो सकते है। सपूर्ण लोक की अपेक्षा जघन्य एक उत्कृष्ट चार तीर्थंकर सिद्ध एक समय मे हो सकते हैं।

१० **बीस विहरमान सभी एक साथ मोक्ष जायेंगे ?**

एक साथ एक दिन सभी मोक्ष जा सकते है किंतु सूक्ष्म एक समय मे बीसो एक साथ सिद्ध नही होगे। क्यों कि उत्कृष्ट अवगाहना वाले एक समय मे उत्कृष्ट दो ही सिद्ध हो सकते है। बीसो विहरमान ५०० धनुष्य की उत्कृष्ट अवगाहना वाले है।

११. **ऋषभ देव भगवान १०८ के साथ मोक्ष गये ? वे कौन-कौन है ?**

जिस समय ऋषभदेव भगवान सिद्ध हुए उसी सूक्ष्म समय मे अन्य १०७ जीव भी सिद्ध हुए। वे सभी उत्कृष्ट अवगाहना वाले थे। अनतकाल से कभी ऐसा आश्चर्य भूत होता है। (१) ऋषभदेव (२) एरावत के तीर्थकर (३-१००) अठाणवे पुत्र और आठ पौत्र = १०८। ब्राह्मी सुदरी भरत बाहुबली ये चारों भगवान के साथ मोक्ष नही गये। बाद मे ८४ लाख पूर्व की आयु पूर्ण होने पर मुक्त हुए।

१२ **सिद्धो की सख्या कितनी है ?**

सिद्धो की सख्या पाचवें अनत मे मानने की परपरा है किन्तु आठवे अनत मे मानना तर्क सगत है। ससार के जीव, काल,

और भवीजीव ये सभी बोल आठवे अनत मे होना उपयुक्त है।

१३ स्त्रीलिंग सिद्ध अधिक या पुरुष लिंग सिद्ध अधिक है?

एक समय मे सिद्ध होने की सख्या की अपेक्षा स्त्रीलिंग सिद्धा से पुरुषलिग सिद्धा सख्यात गुणा है। क्योकि स्त्री एक समय में उत्कृष्ट २० और पुरुष १०८ सिद्ध होते हैं। किन्तु समस्त लोक के भूत कालिक सिद्धो की अपेक्षा सिद्ध क्षेत्र मे स्त्रीलिंग सिद्ध जीव पुरुष लिंग सिद्ध से सख्यात गुणा हो जाते है। अत दोनो अपेक्षाओ को अलग-अलग समझ लेना चाहिये। क्यो कि प्रत्येक तीर्थकर के शासन मे और प्रत्येक पृच्छा समय मे साध्वी की सख्या ज्यादा ही होती है। केवली की सख्या मे भी साध्वी ज्यादा होती है।

१४. सिद्ध क्षेत्र मे सिद्ध आत्मा का अस्तित्व खडे रूप मे है या कैसे?

तेरहवे गुणस्थान के अतिम मुहूर्त मे जब योग निरोध पूर्ण हो जाता है, १४ वे गुण मे प्रवेश होता है उस समय आत्म प्रदेश अपनी अवगाहना के २/३ भाग मे हो जाते है। उस समय शरीरस्थ आत्मा खडे हो या बैठे, सोये कोई भी अवस्था मे हो आत्म प्रदेश शरीर निरपेक्ष होकर खड़े रूप मे हो जाते हैं। १४ वे गुणस्थान मे इन आत्म प्रद्रेशो का अपनी अवगाहना स्थान मे स्थिरीकरण हो जाता है। योग निरोध के पूर्व ये आत्म प्रदेश शरीर मे उपर से नीचे भ्रमण करते रहते हैं। सिद्ध क्षेत्र मे सभी सिद्धात्मा का मस्तक विभाग अलोक से स्पर्श किया हुआ होता है।

१५. सभी सिद्धो की अवस्थिति सिद्ध सिला पर होती है?

सिद्ध भगवान सिद्ध सिलापर नही होते है किंतु सिद्ध सिला की सीध में ऊपर लोकाग्र में स्थित रहते है। वह लोकाग्र स्थान सिद्ध शिला से १ योजन ऊचा दूर होता है।

१६. **लोक मे शुद्ध सयमी ज्यादा होते है या अशुद्ध संयमी ?**

भगवती सूत्र श० २५ उ० ६ के अनुसार बकुश प्रतिसेवना निर्ग्रथ दोष सेवी अशुद्ध नियठे है और कषाय कुशील निर्दोष सयम वाला होने से शुद्ध सयमी है। लोक मे बकुश प्रतिसेवना निर्ग्रथ उत्कृष्ट अनेक सौ करोड मिलते है और कषाय कुशील निर्ग्रथ उत्कृष्ट अनेक हजार करोड मिलते है। इसलिये लोक में शुद्ध सयमी ज्यादा है और शाश्वत है। अशुद्ध सयमी उनसे कम है। सख्यात गुणा फर्क होता है।

१७. **भाववदन शुद्ध सयमी को होता है या अशुद्ध संयमी को ?**

जिन अशुद्ध सयमी को भगवती श २५ उ० ७ मे निर्ग्रथ की कोटी मे गिना है उन अशुद्ध सयमियो में भी गुणस्थान तो छठा और सातवा दो होते है और छठे सातवें गुणस्थान वालों को भाव वदन हो जाता है।

१८. **साधु के लिये व्यवहार से वंदनीय अवंदनीय कौन ?**

स्वगच्छ के पर्याय ज्येष्ठ सभी साधु वदनीय होते है तथा गच्छ गुरु की आज्ञा से सभी शुद्ध व्यवहार वाले अर्थात् जिनशासन की प्रभावना करने वाले यश फैलाने वाले अनिंदित आचार वाले अन्य भी पर्याय ज्येष्ठ साधु-वदनीय होते है।

जो साधु स्वच्छदाचारी और स्वच्छद प्ररुपणा करने वाले, निर्ग्रथ प्रवचन की श्रद्धा से च्युत, निंदित और अयोग्य आचरण वाले हैं वे साधु अवदनीय होते है।

१९. **श्रावक के लिये व्यवहार से वदनीय अवदनीय कौन ?**

श्रावक के लिये गृहस्थ जीवन होने से उसका कोई गच्छ नही होता। कुल गण सघ ये साधु की अपेक्षा शास्त्र मे कहे है। अत श्रावक के लिये सभी गच्छ के हीनाधिक आचार वाले साधु-साध्वी सभी वदनीय होते हैं।

निर्ग्रथ प्रवचन के विपरीत प्ररुपण करने वाले दर्शन (श्रद्धा) से पतित हो ऐसे साधु-साध्वी की सगति से दूर रहना समकित की सुरक्षा के लिये उपयुक्त है।

निंदा तिरस्कार अपमान आदि दुर्व्यवहार किसी के साथ भी नही करना चाहिये।

२०. वंदन की विधि क्या है और पाठ क्या है?

आगमो मे आये वर्णनो के अनुसार प्रत्यक्ष वदन तिक्खुत्तो के पाठ से किया जाता है। इसमे तीन आवर्त्तन करके मस्तक भूमि पर लगाकर पचाग वदन किया जाता है।

प्रतिक्रमण के समय तीन बार वदन उत्कृष्ट वदन के पाठ से किया जाता है जिसमे १२ आवर्तन करना ४ बार मस्तक भूमि पर लगाना आदि विधि समवायाग सूत्र मे बताई है।

परोक्ष वदन का प्रसग आने पर णमोत्थुण के पाठ से वदन किया जाता है यथा- प्रदेशीराजा, धर्म रुचि अणगार, अबड जी के शिष्यो ने, सथारा करते समय और कोणिक राजा, चित्त सारथी ने सदेशवाहक द्वारा सूचना मिलने पर अपने घर पर से परोक्ष वदन णमोत्थुण के पाठ से किया।

इस परोक्ष वदन में बाया घुटना ऊचा करके दाहिना घुटना भूमि पर दबाते हुए रखा जाता है। तीन बार मस्तक भूमि पर लगाया जाता है फिर सिद्धों को णमोत्थुण देकर फिर गुरु आदि जिनका प्रसग है उनको दूसरा णमोत्थुण दिया जाता है।

यह परोक्ष वदन विधि उववाई, रायप्पसेणी, ज्ञाताधर्मकथा आदि सूत्रो में है।

२१. **प्रतिक्रमण का समय कौन सा है ? सप्रमाण बतावे ?**

दो समय प्रतिक्रमण किया जाता है। रात्रि प्रतिक्रमण का समय सूर्योदय के पूर्व का करीब एक मुहूर्त समय जो लाल दिशा के कारण असज्झाय का समय होता है।

सूर्यास्त के बाद जो करीब मुहूर्त भर लाल दिशा का समय होता है वह दैवसिक प्रतिक्रमण का समय है।

उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन २६ के वर्णन से यह समय स्पष्ट होता है।

रात्रि के अधकार के समय और असज्झाय के समय का सदुपयोग हो जाने से यह समय बुद्धिगम्य भी होता है।

२२. **अन्य किसी समय प्रतिक्रमण नही किया जा सकता ?**

उभय काल आगमोक्त सैद्धातिक व्यवहारिक समय तो उक्त दोनो सध्या का ही मान्य करना एव पालन करना योग्य है। साधु-साध्वी के लिये तो नियमित ये दोनों समय है। श्रावक के लिये किसी विशेष परिस्थिति वश व्यक्तिगत किसी भी समय प्रतिक्रण करके आत्म शुद्धि करली जा सकती है। किन्तु वह प्ररुपण और प्रचारित करने योग्य नही है। यथा-विहार करते हुए कभी साधु को सूर्यास्त के आधा घटा बाद तक चलना पड जाय तो प्रतिक्रमण के समय का उल्लघन हो जाने पर भी प्रतिक्रमण कर लिया जाता है। इत्यादि परिस्थिति से श्रावक भी कभी विवेक पूर्वक नियम का पालन कर सकता है।

२३ **प्रतिक्रमण करने मे समय कितना लगना चाहिये ?**

ऐसा आगम मे कोई स्पष्ट सिद्धान्त नही बताया गया है। क्षेत्र

काल के परिवर्तनों से कभी प्रतिक्रमण का समय छोटा होता है कभी बड़ा होता है। कोई कालांतर होता है कोई मन्द भाषण होता है। अतः [illegible] समय लगे तो कोई अन्तर पड़ने जैसी बात नहीं है।

आगमिक अपेक्षा से [illegible] प्रतिक्रमण का समय ३० मिनिट से लेकर ६०-७० मिनिट भी हो जाता है। अतः प्रतिक्रमण का समय भी ३० मिनिट से लेकर ६०-७० मिनिट का माना जा सकता है। सामूहिक व्यवस्था की दृष्टि से ४८ मिनिट में प्रतिक्रमण पूर्ण हो जाना चाहिये।

२४. कोई छोटे प्रतिक्रमण की बात करते है क्या वह ठीक है ?

प्रतिक्रमण जो किया जाता है उसका मौलिक आधार आगम आवश्यक सूत्र है। उसमे ६ अध्याय आवश्यक है। उन छहों मे मिलकर कुल २३ पाठ मूल मे होते है। आदि और अंत मगल पाठ नमस्कार मत्र और णमोत्थुणं का पाठ मिलाने पर कुल २५ पाठ होते है। हमारे प्रचलित प्रतिक्रमण मे जितने भी पाठ बाद के बढ़ाये हुए होने से प्रतिक्रमण बड़ा लगता है।

आवश्यक सूत्र श्रमणो की मुख्यता से होने से उसमे श्रमण प्रतिक्रमण के योग्य पाठ है। श्रावक प्रतिक्रमण के पाठ पीछे परिशिष्ट रूप मे टीका आदि मे उपलब्ध होते है।

२५. प्रतिक्रमण की विधि कितनी और कैसी होनी चाहिये ?

उत्तराध्ययन सूत्र अ. २६ मे कही विधि के अनुसार सर्वप्रथम अतिचारो के अवलोकनार्थ कायोत्सर्ग करना चाहिये। फिर लोगस्स एव उत्कृष्ट वदन के बाद उन अतिचारों को व्रत प्रतिज्ञा सहित प्रकट बोलकर आलोचन-प्रतिक्रमण करना - मिच्छामि दुक्कड देना चाहिये। फिर उत्कृष्ट वदन कर प्रायश्चित्त

यह परोक्ष वदन विधि उववाई, रायप्पसेणी, ज्ञाताधर्मकथा आदि सूत्रों में है ।

न- २१. **प्रतिक्रमण का समय कौन सा है ? सप्रमाण बतावें ?**

र- दो समय प्रतिक्रमण किया जाता है । रात्रि प्रतिक्रमण का समय सूर्योदय के पूर्व का करीब एक मुहूर्त समय जो लाल दिशा के कारण असज्झाय का समय होता है ।

सूर्यास्त के बाद जो करीब मुहूर्त भर लाल दिशा का समय होता है वह दैवसिक प्रतिक्रमण का समय है ।

उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन २६ के वर्णन से यह समय स्पष्ट होता है ।

रात्रि के अधकार के समय और असज्झाय के समय का सदुपयोग हो जाने से यह समय बुद्धिगम्य भी होता है ।

न- २२. **अन्य किसी समय प्रतिक्रमण नही किया जा सकता ?**

र- उभय काल आगमोक्त सैद्धातिक व्यवहारिक समय तो उक्त दोनों सध्या का ही मान्य करना एव पालन करना योग्य है । साधु-साध्वी के लिये तो नियमित ये दोनों समय है । श्रावक के लिये किसी विशेष परिस्थिति वश व्यक्तिगत किसी भी समय प्रतिक्रण करके आत्म शुद्धि करली जा सकती है । किन्तु वह प्ररुपण और प्रचारित करने योग्य नही है । यथा-विहार करते हुए कभी साधु को सूर्यास्त के आधा घटा बाद तक चलना पड जाय तो प्रतिक्रमण के समय का उल्लघन हो जाने पर भी प्रतिक्रमण कर लिया जाता है । इत्यादि परिस्थिति से श्रावक भी कभी विवेक पूर्वक नियम का पालन कर सकता है ।

न- २३. **प्रतिक्रमण करने मे समय कितना लगना चाहिये ?**

र- ऐसा आगम में कोई स्पष्ट सिद्धान्त नही बताया गया है । क्षेत्र

काल के परिवर्तनो मे कही प्रतिक्रमण का स्वरूप छोटा हे कही बड़ा है। कोई नवशिक्षित होता है कोई बहुत अभ्यस्त होते हैं। अत हीनाधिक समय लगे तो कोई आग्रह रखने जंसी बात नही है।

आगमिक अपेक्षा से लाल दिशा के असज्झाय का समय ३० मिनिट से लेकर ६०-७० मिनट भी कभी हो जाता है। अत प्रतिक्रमण का समय भी ३० मिनिट से लेकर ६०-७० मिनिट का माना जा सकता है। सामूहिक व्यवस्था की दृष्टि से ४८ मिनिट मे प्रतिक्रमण पूर्ण हो जाना चाहिये।

२४ **कोई छोटे प्रतिक्रमण की बात करते है क्या वह ठीक है ?**

प्रतिक्रमण जो किया जाता है उसका मौलिक आधार आगम आवश्यक सूत्र है। उसके ६ अध्याय- आवश्यक है। उन छहो मे मिलकर कुल २३ पाठ मूल मे होते है। आदि और अत मगल पाठ नमस्कार मत्र और णमोत्थुण का पाठ मिलाने पर कुल २५ पाठ होते है। हमारे प्रचलित प्रतिक्रमण मे कितने ही पाठ बाद के बढाये हुए होने से प्रतिक्रमण बडा लगता है।

आवश्यक सूत्र श्रमणों की मुख्यता से होने से उसमे श्रमण प्रतिक्रमण के योग्य पाठ है। श्रावक प्रतिक्रमण के पाठ पीछे परिशिष्ट रूप मे टीका आदि मे उपलब्ध होते है।

२५ **प्रतिक्रमण की विधि कितनी और कैसी होनी चाहिये ?**

उत्तराध्ययन सूत्र अ. २६ मे कही विधि के अनुसार सर्वप्रथम अतिचारो के अवलोकनार्थ कायोत्सर्ग करना चाहिये। फिर लोगस्स एव उत्कृष्ट वदन के बाद उन अतिचारों को व्रत प्रतिज्ञा सहित प्रकट बोलकर आलोचन-प्रतिक्रमण करना - मिच्छामि दुक्कड देना चाहिये। फिर उत्कृष्ट वदन कर प्रायश्चित्त

विशुद्धि के लिये कायोत्सर्ग करना चाहिये। फिर लोगस्स एव उत्कृष्ट वदन करके, प्रत्याख्यान ग्रहण कर, स्तव स्तुति मगल रूप णमोत्थुण का पाठ करना चाहिये। फिर गुरु रत्नाधिक वदन, प्रायश्चित ग्रहण और क्षमायाचना करना चाहिये। यह सूत्रोक्त सक्षिप्त आधारभूत एव प्रमाण भूत विधि है।—*उत्तराध्यन सूत्र अ. २६।*

एक ही पाठ प्रतिक्रमण में कितनी बार आ सकता है? उक्त आगम विधि से?

कोई पाठ तीन वार कोई दो वार और कोई पाठ एक वार आ सकता है। तीन वार से अधिक वार कोई पाठ आना उक्त आगमोक्त विधि से सभव नही है। प्रतिक्रमण की विधि सवधी अन्यान्य प्रश्न को उक्त सूत्र उत्तराध्ययन के २६ वें अध्ययन से समाधान करने का प्रयत्न करना चाहिये। आगमोक्त आशय से विपरीत कथन प्ररुपण नही होना चाहिये।

सामायिक लेने की विधि क्या है? और कहां आई है?

सामायिक लेने का पाठ 'करेमि भते' का (छट्ठा) पाठ है। कोई भी प्रत्याख्यान विनय पूर्वक लिया जाता हे। अत वदन करके आज्ञा लेकर सामायिक का प्रत्याख्यान किया जा सकता है। वर्तमान मे जो ५-७ पाठो को वोल कर विधि की जाती है वह चली आती हुई परपरा प्रणाली हे। आगम मे सामायिक लेने की विधि का अलग से वर्णन नहीं हे।

श्रावक प्रतिक्रमण किस शास्त्र मे है?

अनुयोग द्वार सूत्र मे श्रावक को प्रतिक्रमण करना कहा है और उसके पाठ और विधि आवश्यक सूत्र की चूलिका रूप

परिशिष्ट मे है। जिसका स्पष्टीकरण आवश्यक सूत्र की निर्युक्ति टीका मे उपलब्ध है।

२९. दशवा व्रत क्या है ?

श्रावक का दसवा व्रत १४ नियम धारण करना है। इस व्रत के मूल पाठ से स्पष्ट है कि उसमे दिशाओ की और उपभोग परिभोग सामग्री की मर्यादा की जाती है और उसके उपरात की दिशाओ का, सावद्य योगो का और उपभोग परिभोग का त्याग होता है। मर्यादा के अन्दर सावद्य योग और उपभोग परिभोग पदार्थ सेवन खुला होता है। इस व्रत मे आजीवन के लिये की गई सीमाओ मे एक दिन के लिये कम कम कर दी जाती है।

व्यवहार में १४ नियम धारण कर, तीन मनोरथ का चितन करना इस व्रत म समाविष्ट किया जाता है।

३० श्रावक के ग्यारहवे व्रत मे क्या-क्या समावेश होता है।

भगवती सूत्र के श. १२ उ. १ के शख पुष्कली के प्रकरण को साराश पुस्तक से समझ लेने पर एव अन्य आगमो का अनुशीलन करने से यह स्पष्ट होता है कि पाच प्रहर का पोषध छ., सात, आठ प्रहर का पोषध, तिविहार त्याग पोषध और खाते पीते एकासन बिआसन युक्त पोषध ये सभी ग्यारहवे व्रत मे ही समाविष्ट होते है।

सार यह है कि सावद्य योग का सपूर्ण त्याग मुहूर्त आदि के लिये करना नोवा सामायिक व्रत है और कुछ प्रहर अहोरात्र के लिये करना पोषध व्रत है।

३१ अधिक साधु-साध्वी इकट्ठे हो तो वदन किस तरह करना चाहिये ?

सबसे बडे गुरु आचार्य रत्नाधिक को वदन विधियुक्त कर के

दे और रोग न हो तो कुछ भी नही करे। तीसरे वैद्य की दवा रोग हो तो ठीक करे और रोग न हो तो शरीर मे पुष्टि करे। इसी तीसरी औषध के समान प्रतिक्रमण है। जो व्रत मे दोष लगे हो तो शुद्धि कर दे न हो तो भगवद वाणी श्रवण, परिवर्तना रूप स्वाध्याय, आत्म दोष चितन रूप ध्यान और सामायिक रूप सावद्य योग त्याग होने से, यह आत्मा के गुणो को पुष्ट ही करता है। अत व्रतधारी के साथ अन्य भी प्रतिक्रमण कर सकते है और उन्हे भी शीघ्र व्रतधारी बनने की प्रेरणा लेनी चाहिये। आलस, प्रमाद ओर भयसंज्ञा, उपेक्षा वृत्ति को हटा कर व्रतधारी बनना चाहिये।

आवश्यक सूत्र मूल रचना किनकी है और वे मौलिक पाठ कौन-कौन से है?

आवश्यक सूत्र गणधर प्रभु की रचना है। क्यो कि चतुर्विध सघ की स्थापना के समय ही गणधर प्रभु १२ अग सूत्र और आवश्यक सूत्र की रचना करते है तभी प्रत्येक नवदीक्षित साधु-साध्वी आवश्यक रूप से इस सूत्र को कठस्थ कर सदा उभयकाल प्रतिक्रमण करते है। वे मूल पाठ इस प्रकार है। (१) नमस्कार मत्र (२) करेमिभते (३) लोगस्स (४) इच्छामि खमासमणो (५) गमनागमन अतिचार प्रतिक्रमण (६) समुच्चय अतिचार प्रतिक्रमण (७) मगलपाठ (८) से (१२) पाच श्रमण सूत्र के पाठ। (१३) क्षमापना पाठ (१४) तस्सउत्तरी (१५) णमोत्थुण (१६ से २५) दस प्रत्याख्यान के पाठ।

श्रावक प्रतिक्रमण मे पेयाला या पायाला शब्द क्या है और कहा कहा यह शब्द आता है।

यह श्रावक प्रतिक्रमण आवश्यक चूलिका रूप मे आवश्यक

शेष को सामूहिक या सक्षिप्त वदन कर लेना चाहिये। श्रावक भी इसी तरह कर सकते हैं। अथवा यह व्यवस्था करने की जिम्मेदारी प्रमुख सतो की होती है कि समय लम्बा न हो और व्यवस्था विधि भी न बिगडे उस तरह का निर्णय करना चाहिये। एक सबसे बडे और एक अपने से बड़े यो दो को वदन करने की व्यवस्था भी की जा सकती है।

प्रतिक्रमण से अतिचारो की शुद्धि होती है ? या अनाचारो की या पापो की भी शुद्धि होती है।

प्रतिक्रमण करने से व्रतो मे लगे अतिचारो की शुद्धि होती है। व्रत के अनाचारो की शुद्धि प्रायश्चित्त ग्रहण करने से होती है और पापो की शुद्धि प्रायश्चित्त करने और उनके त्याग का मनोरथ रखने से कुछ शुद्धि हो सकती है। अर्थात् प्रतिक्रमण कर लेने मात्र से अनाचार व पापो की शुद्धि नही होती है।

प्रतिक्रमण व्रतधारी श्रावक को ही करना चाहिये ? या अन्य को ?

बारह व्रतधारी श्रावक को सुबह शाम दोनो समय या पक्खी का प्रतिक्रमण आवश्यक रूप से करना चाहिये। जिसने १२ व्रत धारण नहीं किये है वह भी अपने सीखे हुए प्रतिक्रमण का पुनरावर्तन और श्रवण कर सकता है। प्रत्येक श्रावक को कुछ न कुछ व्रत अवश्य होते ही है और व्रत न हो तो भी प्रतिक्रमण करने सुनने के निमित्त से भी कभी व्रत धारण करने की प्रेरणा पैदा हो सकती है। प्रतिक्रमण को तीसरे प्रकार के वैद्य की औषध की उपमा देकर समझाया गया है।

प्रथम वैद्य की दवा रोग हो तो ठीक कर दे और रोग न हो तो नया रोग करदे। दूसरे वैद्य की दवा रोग हो तो ठीक कर

निर्युक्ति टीका मे बताया है । उसमे समकित सहित १२ व्रतो के पाठ मे पेयाला शब्द का प्रयोग हुआ है । जिसकी व्याक्या करते हुए समझाया गया है कि ये आगे कहे गये पाच मुख्य अतिचार है शेष अन्य सूक्ष्म या उपचार से अनेको अतिचार हो सकते है । इसलिये १३ पाठो मे पेयाला शब्द है जिसका अर्थ है प्रमुख ।

३६. "पाताल कलशा जेवा मोटा और भयानक" ऐसा अर्थ होता है ?

यह अर्वाचीन टब्वा वालो के द्वारा किया गया भ्रमित अर्थ है । जो पूर्ण असगत और शास्त्र विपरीत है । अतिचारो की शुद्धि तो केवल प्रतिक्रमण से, मिच्छामि दुक्कड बोलने से हो जाती है । ऐसे अतिचारो को महादोष जैसा कहना ना समझी है ।यदि अतिचारो को भारे भयानक और महादोष कहा जायेगा तो अनाचारो को क्या कहेगे ?

वास्तव मे मतिभ्रम से पेयाला शब्द से पायाला बनकर तुक जोडकर 'भारे भयानक पाताल कलशा जेवा' ऐसा अर्थ किसी भी अर्द्ध पडित के द्वारा अपनी धुन से चला दिया गया है । जो अर्थ सर्वथा हेय = त्याज्य है । यह पेयाला शब्द लिपी दोष से छुटते छुटते १३ स्थान से हटकर कर केवल दो पाठ मे ही रह गया है । वास्तव मे समकित सहित १२ व्रतों के सभी पाठ मे है ।

३७. चौबीस तीर्थकरों के २३ अंतर सदा समान होते है ?

ऐसा एकात नियम सभी के लिये नही हो सकता । किंतु आगम भगवती श. २५ के वर्णन से अवमर्पिणी के पहले दूसरे तीर्थकर का और तेवीसवे २४वे तीर्थकार का अतर निश्चित

हैं। वैसे ही उत्सर्पिणी के पहले दूसरे और तेवीसवे चौवीसवे का अतर निश्चित होता है। ऐसा उपलब्ध वर्णनो से ज्ञात होता हैं। अवसर्पिणी के २४वे तीर्थकर का शासन सदा २१ हजार वर्ष साधिक रहता हैं और उत्सर्पिणी के २४ वे तीर्थकर का शासन देशोन एक लाख पूर्व का होता हे। शेष मध्यम तीर्थकरो का शासन या उनकी उम्र, अवगाहना आदि भिन्न-भिन्न हो सकती हें।

तीर्थकर २४ ही क्यों होते है २५ या २३ आदि क्यो नही ?

एक उत्सर्पिणी अवसर्पिणी मे भरत ऐरावत क्षेत्रो मे २४ तीर्थकर होना यह स्वभाव प्रवर्तन समझना चाहिये। यदि ३० या २० या २५ होते तो भी प्रश्न तो फिर खड़ा रहता कि यही सख्या क्यो ? दूसरी क्यो नही ? इस प्रकार सख्या सबधी प्रश्न के तर्क का कभी भी अत नहीं है। अत स्वभाव योग्य सख्याए स्वभावजा ज्ञानियो के ज्ञान से बताई गई है।

उच्च ग्रहों का संयोग और सुदर पुद्गलो के सयोग लोक मे २४ बार ही बनते हो ? यह कारण है ?

महाविदेह क्षेत्र भी लोक में हैं वहा तीर्थकर होते ही रहते है उन्हे भी पुद्गल और ग्रहों के उच्च सयोग मिलते ही रहते है। अत २४ तीर्थकर होने मे ग्रह एव पुद्गल सयोग की कल्पना उपयुक्त नही है। लोकस्वभाव क्षेत्र स्वभाव मात्र समझना उपयुक्त है।

चक्रवर्ती से तीर्थंकर संख्यात गुणा अधिक कैसे ?

अल्प बहुत्व वर्तमान एक समय को लक्षित करके कही जाती है अत एक अवसर्पिणी मे २४ तीर्थकर और १२ चक्रवर्ती की सख्या की अपेक्षा सख्यात गुणा नही समझना चाहिये। किन्तु भव की अपेक्षा लेकर जो भी जीव तीर्थकर चक्रवर्ती के भव मे

जन्म चुके है उनकी गिनती करने से यह सख्यात गुणा होता है।

जघन्य तीर्थकर २० और उनके पीछे ८३-८३ जन्मे हुए होते है। कुल ८४x२० = १६८० होते है।

जघन्य चक्रवर्ती २० और उनके पीछे ११-११ जन्मे हुए होते हैं। कुल १२x२० = २४० होते है।

यह महाविदेह क्षेत्र की जघन्य सख्या की अपेक्षा है। मध्य उत्कृष्ट सख्या बहुत कम बढती है क्योकि उनके पीछे परपरा जरुरी नही है अत सख्यात गुणा ही रहते हैं।

प्रश्न- ४१. श्रावक की पांचवी छट्ठी पडिमा क्या है?

उत्तर- पाचवी कायोत्सर्ग पडिमा है इसमे श्रावक पोषध के रात्रि मे कायोत्सर्ग करता है जिसमे अनेक घटे या रात्रिभर खडे रहना होता है। छट्ठी ब्रह्मचर्य पडिमा है जिसमे श्रावक पूर्ण ब्रह्मचर्य पालन, रात्रि भोजन त्याग, स्नान त्याग करता है और खुली लगोट वाली धोती पहनता है।

प्रश्न- ४२. दूसरी तरह से भी ये दोनो पडिमा कही जाती है?

उत्तर- लिपी दोष से, पाठ इधर उधर हो जाने से, समझ भ्रम से अन्य प्रकार से कथन भी चल गया है जो भूल का पात्र होने से सुसगत नही है।

उस कथन मे स्नान त्याग आदि पाचवीं पडिमा के साथ कहे जाते है जबकि उसमें दिन मे ब्रह्मचर्य पालन और रात्रि मे मर्यादा कही है।

ऐसे कथन मे चौथी पडिमा तक दिवस मे कुशील की छूट होना सिद्ध होता है जो अनुपयुक्त है। पाचवीं पडिमा मे रात्रि मे कुशील की छूट होते हुए भी स्नान का सर्वथा त्याग का

नियम भी असगत सा होता है। जब कि उपरोक्त सही पाठ वाले अर्थ मे कोई ऐसी असगतता नही होती है।

३. ध्यान कब कहां किस तरह करना चाहिये ?

आगम मे साधको के लिये दिन के प्रथम प्रहर मे स्वाध्याय और दूसरे प्रहर मे ध्यान कहा है। व्याख्या मे बताया है कि अध्ययन शील साधक प्रथम प्रहर मे कालिक सूत्र की स्वाध्याय और दूसरे प्रहर मे उनके अर्थ या उत्कालिक सूत्र की स्वाध्याय करे या नया ज्ञान कठस्थ करे।

जो साधक अध्ययन पूर्ण कर चुके हो वे प्रथम प्रहर मे स्वाध्याय और दूसरे प्रहर मे उन्ही आगम तत्वो की अनुप्रेक्षा करे। अनुप्रेक्षण करते हुए ध्यान मे पहुचे।

सभी साधको को आत्मानुप्रेक्षण पूर्वक ध्यान करना आवश्यक है। उसके लिये दशवैकालिक सूत्र मे रात्रि का समय निर्देश किया गया है। कारण यह है कि साधक को दिन मे अनेक प्रवृति अध्यापन या अध्ययन करने की एव शारीरिक प्रवृतिए भी होती है। दिन को चक्षु विषय होने से उसका उपयोग हो ऐसा ध्यान रखा जाय। अत रात्रि में प्रतिक्रमण के बाद स्वाध्याय करके सोते समय ओर सुबह उठने के बाद आत्म निरीक्षण अनुप्रेक्षण रूप ध्यान का समय उत्तम है जो शाति और एकातमय होता है।

विषय– अनित्य अशरण आदि अनेक भावनाओ के आधार से आत्मानुप्रेक्षण करना एव सवेग वैराग्य भावो की वृद्धि करना। स्वदोष दर्शन रुप जीवन निरीक्षण कर दोष दूर करने के उपायो की अनुप्रेक्षा करना। सयम, तप, विनय आदि गुणो का चिंतन करना, गुणवानो को याद करना और अपने मे वैसे गुण वृद्धि

का चिंतन सकल्प करना। अपने कषाय भावो की कमी या मुक्ति के लक्ष्य से ज्ञान पूर्वक चिंतन करना। सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्र तप की सुदर आराधना का या सलेखना सथारा विशिष्ट तप का चिंतन करना। शरीर के प्रति ममत्व हटाने सबधी आत्मा और पुद्गल सबध का ससार भ्रमण और मुक्ति अवस्था उपलब्धि एव उस आनद का चितन करना।

इस प्रकार अनुप्रेक्षा चितन आत्म लक्ष्य पूर्वक करते हुए उसमे ही तल्लीन हो जाना। यह जैनागम सम्मत अनुप्रेक्षा ध्यान है। किसी भी एक आध्यात्म विषय चिंतन में आत्मा का एकीभूत हो जाना ही छद्मस्थो का ध्यान है।

प्रश्न- ४४ वर्तमान मे प्रचलित अनेक ध्यान पद्धतिएं क्या है ?

उत्तर- जैन सिद्धातानुसार 'स्वाध्याय' यह दसवा तप है, 'ध्यान' यह ग्यारहवा तप है और बारहवा तप है 'व्युत्सर्ग'। तप के पूर्व सम्यग् ज्ञान सम्यग् श्रद्धान और सम्यग् चारित्र होना भी आवश्यक है। उतरा. सूत्र अ २८ मे, ज्ञान दर्शन चारित्र और तप यह मोक्ष मार्ग है इसी चतुर्विध मोक्ष मार्ग की सुमेल पूर्वक आराधना करने वाले व्यक्ति मोक्ष की आराधना करने वाले कहे गये है।

अत वर्तमान मे प्रचलित ध्यान पद्धतियो के मूल मे सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्र के प्रति समादर और यथाशक्ति पालन है तो वे ध्यान साधनाए सम्यग् तप रुप है। यदि उनके साथ तीर्थंकर प्रभू के सिद्धान्तो उपदेशो आदेशो प्रेरणाओ के प्रति निषेध या उपेक्षा होती हो, सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्र पुष्ट न होकर उपेक्षित होते हो तो वे ध्यान साधनाए कुछ सशोधन के योग्य है। ध्यान के समाचरण तीर्थकर गणधरो के जीवन से एव

सार यह है कि आवश्यकतानुसार निश्चित समय ध्यान सर्व समय ही करने चाहिये, यह सामान्य नियम है और विशेष रूप से तो कभी भी किया जा सकता है। ध्यान के लिये समय कोई बाधक नहीं है। वर्तमान पद्धति के कोई भी ध्यान सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्र के सिवन पोषण करने वाले हो तो ग्राह्य है और तीर्थंकरों के आदेशों सिद्धान्तों की उपेक्षा करने वाले हो तो त्याज्य ही समझने चाहिये।

८५. सेल की घड़ी में अग्नि के जीव होते हैं?

वैज्ञानिक साधनों के प्रति उतावल बुद्धि से निर्णय किया गया

एक व्यापक भ्रम है कि सेल की घड़ी सचित्त है ।

शात मानस से अग्नि के जीवो के लिग पहिचान कर और स्वभाव स्वरूप का चितन करने से समझ मे आ सकता है कि यह वैज्ञानिक साधन रूप सेल, घडी के काटों को गति देने का काम करता है । इसमें अग्निकाय के जीवो के उत्पन्न होने योग्य शरीर पुद्गलो की वहा उत्पत्ति निष्पत्ति नही होती है और अग्नि के जलने का वहा कोई लिग याने पहिचान रुप चमक या गर्मी या धुआ आदि कुछ भी नही होता है ।

जिस तरह बेटरी मे पडे सेल अचित होते है और उस बैटरी मे जब बल्ब जलकर अग्नि की चमक दिखती है तभी अग्निकाय के जीवो की उत्पत्ति मानी जाती है । बिना बल्ब वाले सेल युक्त बेटरी मे खटका (बटन) ऊचा नीचा कर भी दे तो अग्नि जले बिना अग्नि नही मानी जाती है । उसी तरह घडी मे रहे सेल के निमित से बल्ब जले तो अग्नि के जीव माने जा सकते है किंतु अग्नि न जले, प्रकाश नही दिखे, केवल काटो के गति करने से अग्नि के जीव मान लेना अविचारकता है क्योकि अग्नि के जीव कहा और कैसे रूप मे उत्पन्न हुए। इत्यादि कोई चितन किये बिना बाबा वाक्य प्रमाण की उक्ति से माना गया यह उक्त व्यापक भ्रम मात्र है ।

अत वास्तव मे सेल की घडी को सचित या अग्नि युक्त मानकर अनेक साधना नियमो मे बाधक मानना पुनर्विचारणीय है । विचारणा किये बिना या विचारणा को स्थान भी न रख कर उतावल से निर्णय कर चलाये गये प्रवाह में वहते हुए सचित कहते रहना योग्य नही है ।

प्रश्न- ४८. क्या विद्युत सचित है या अचित ?

वैज्ञानिक साधनों के द्वारा सकलित की हुई एक शक्ति विशेष है। अर्थात् सेल के समान विद्युत भी एक प्रकार की शक्ति का सकलन है। इस वैज्ञानिक सकलित विद्युत शक्ति को सीधा अग्नि मान लेना ठीक नही है। अग्नि तो रबर और लकडी सभी को जलाती है लोहे और सोने को भी पिगाल देती है। जबकि विद्युत शक्ति तारो के माध्यम से प्रवाहित की जाती है। रबर का कवर लगाकर सुरक्षित मानी जाती है। लकडी को स्पर्श करने से नही जलती है बल्कि लकडी पर खडे रहकर विद्युत शक्ति के हाथ लगाने पर वह मनुष्य को भी नही जलाती है। अत सीधा और सरल समाधान है कि विद्युत शक्ति अग्नि नही है। इससे जहा जहा अग्नि जले वही अग्निकाय के जीवो का आकर उत्पन्न होना समझना चाहिये। इस विद्युत शक्ति से जहा अग्नि नही जले वहा भी आग्रह बुद्धि से अग्नि मानना उचित नही है। किंतु विद्युत को एक वैज्ञानिक सकलित विशिष्ट शक्ति समझना चाहिये जो अनेक कार्यो को सिद्ध कर सकती है। गति देना, ठडक करना, गर्मी करना, प्रकाश करना, आवाज करना, रूप दिखाना आदि अनेक इसके कार्य है जिससे बल्ब, हीटर, फ्रीज, कूलर, घटी पखे, रेडियो, टी वी आदि अनेक कार्य सिद्ध किये जाते है। जहा जिस प्रकार के जीवो का लिंग दिखे वहा वैसे ही जीव मानने चाहिये किंतु सर्वत्र अग्नि मान लेना बालपन है। पखा घडी घटी आदि मे वायुकाय की विराधना, फ्रीज, कूलर आदि मे पानी की विराधना प्रमुख माननी चाहिये।

तात्पर्य यह है कि जहा बल्ब अग्नि जले वही अग्नि के जीवो का उत्पन्न होना मरना मानना चाहिये। अन्य प्रवृत्ति मे अन्यकाय की विराधना समझनी चाहिये। और वैज्ञानिक

विद्युत एक सकलित शक्ति है जिसका अनेक प्रकार से उपयोग हो सकता है ऐसा मानना चाहिये ।

अन्य भी कोई वैज्ञानिक यत्र साधन के उपयोग मे अग्नि बल्ब जले तो ही अग्नि के जीवो की विराधना मानना चाहिये किंतु केवल भेडचाल की रुढिमात्र से हर किसी मे अग्नि नही कह देना चाहिये ।

प्रश्न- ४७. मस्तक पर ओढ़कर जाने की परम्परा क्या है ?

उत्तर- रात्रि मे मकान के बाहर जाने पर, दिन मे वर्षा मे परठने जाने पर, विहार मे चलते सूर्यास्त हो जाने पर , गोचरी मे घूमते वर्षा आ जाने पर , मस्तक पर कपडा ओढ लिया जाता है ।

प्रश्न- ४८. इस प्रकार का नियम किसी आगम मे बताया है ?

उत्तर- यह एक मूर्तिपूजको के द्वारा चलाई हुई परपरा है । इसका आदेश किसी भी आगम मे नहीं हुआ है । सूर्यास्त बाद और सूर्योदय पूर्व साधु को अपने स्थान से बाहर कही जाने आने की प्रवृति करना नही कल्पता है । मूर्तिपूजको ने सूर्यास्त बाद मदिर जाना सूर्योदय पूर्व मदिर जाना, रात्रि मे विहार करना, अल्प वर्षा मे गोचरी जाना प्रारभ किया, तभी किसी के तर्क के समाधान हेतु मस्तक पर कम्बल ओढ कर जाने मे दोष नहीं, ऐसा चला दिया गया । उसी का अवशेष स्थानक वासियो ने सूती कपडे से मस्तक ढकना रखा है । इसके लिये आगम मे आचार शास्त्रो मे या प्रायश्चित शास्त्र निशीथ मे कोई विधान, निषेध या प्रायश्चित नहीं कहा है अत यह किसी समय चलाई गई परपरा की नकल मात्र है ।

प्रश्न- ४९. तो क्या यह नियम आगम से विपरीत है ?

उत्तर- आगम वर्णनो के अनुसार साधु सचेल अचेल दोनो तरह के हो

सकते हे । आचाराग मे साधु को वस्त्र के उणोदरी की विशेष प्रतिज्ञा करने के प्रसग मे केवल चोलपट्टक से रहना भी बताया और पूर्ण अचेल होना भी बताया । जिनशासन मे अचेल सचेल दोनो तरह के साधक होते है । स्वय तीर्थंकर अचेल रहते हे । ऐसी व्यवस्था वाले जिन शासन मे वस्त्र या कम्बल रखने या ओढने के जरूरी नियम की परपरा चलाना उपयुक्त नही है ।

दशाश्रुत स्कध सूत्र दशा ७ मे भिक्षु पडिमा के वर्णन मे कहा गया है कि सूर्यास्त बाद साधु एक कदम भी नही चले वही रात्रि भर रहे । किन्तु वहा मस्तक ढकने की बात नही कही है । शारीरिक बाधा से उसको जाने आने की छूट भी कही ह । यतना पूर्वक रहने की भलावण भी दी है कितु मस्तक पर ओढने का वर्णन नही है । ये पडिमा धारी साधु मूल नियमो मे कोई अपवाद दोष नही सेवन करते है ।

५०. यह तो विशिष्ट साधुओ की बात है। सामान्य साधु तो खुले आकाश मे नही रहते ?

वृहत्कल्प सूत्र उद्देशा २ सूत्र ११-१२ में कहा है कि चौतरफ से खुले स्थान मे, वृक्ष के नीचे एव खुले आकाश वाले स्थान मे साध्वी को ठहरना नही कल्पता है साधु को ठहरना कल्पता है । यहा साधु को परिस्थिति वश ऐसे स्थानो मे रहने का विधान है किन्तु मस्तक ढकने की बात नही है । तथा यह भी नही कहा कि सचेल साधु ठहर सकता है अचेल साधु नही ठहरे ।

५१. साधुओ को मस्तक नही ढकना ऐसा किसी आगम में है ?

निशीथ सूत्र उद्देशा ३ मे साधु को मस्तक ढाकने का प्रायश्चित कहा हे । इसकी व्याख्या मे स्पष्टीकरण दिया है कि मस्तक ढाकना यह स्त्री की वेषभूषा है । अत साधु मस्तक ढाकक

गोचरी, स्थडिल, विहार आदि कही मकान के बाहर जावे तो यह लिंग व्यत्यय होता है। ऐसा साधु को नही करना चाहिये। साथ ही यह भी स्पष्ट किया कि साध्वी को खुले मस्तक कही भी नही जाना चाहिये।

यहा पर भी रात मे या वर्षा मे मस्तक पर ओढने की बात मूल मे या टीका मे नही कही है। इससे भी स्पष्ट होता है कि मस्तक ढकने की परपरा आगम सम्मत तो नही है साथ ही इन व्याख्या करने वाले आचार्य के समय भी नही थी यदि होती तो उसकी विचारणा यहा पर अवश्य करते।

अत इन व्याख्याकार के बाद मे कभी मूर्तिपूजको ने कम्बली ओढने की प्रथा चलाकर अपने रात्रिगमन शिथिलाचार का या वर्षा मे गोचरी जाने रूप शिथिला चार का रक्षण-बचाव किया और फिर कल्पसूत्र की समाचारी मे भी ऐसा नियम प्रक्षिप्त कर दिया कि अल्प वर्षा हो तो मस्तक पर कम्बली ओढ कर गोचरी जा सकते है। प्राचीन व्याख्याकार के सामने ऐसा पाठ नही था।उन्होंने इस व्याख्या के पूर्व ही सूत्र समाप्ति विषय समाप्ति रुप उपसहार व्याख्या कर दी है। अत बाद की व्याख्या भी प्रक्षिप्त ज्ञात होती है।

इस प्रकार यह चलाई गई परपरा है। आगम मे विधान कही भी नही है अपितु इसके विपक्ष मे जाने वाले वर्णन निशीथ सूत्र मे, दशाश्रुत स्कध मे और वृहत्कल्प सूत्र मे है जिसका उल्लेख उपर किया गया है।

भगवती सूत्र मे सूक्ष्म स्नेहकाय का वर्णन है उसके कारण मस्तक पर ओढना उपयुक्त होता है ?

जब मस्तक पर कपडा ढकने की परपरा चल गई और आगम विधान न होने से कभी किसी तर्क के समाधान मे भगवती की सूक्ष्म स्नेह काय को जोड़ दिया जाने लगा है। भगवती सूत्र के उस पाठ मे ही प्रश्नोत्तर द्वारा स्पष्ट कर दिया गया कि वह गिरने वाली सूक्ष्म स्नेह काय मिलकर कही पानी की बूद कण आदि रूप मे बनती नही हैं किंतु गिरते ही तत्काल नष्ट हो जाती है। ऊचे नीचे तिरछे जहा भी स्नेह काय पडती है तत्काल नष्ट हो जाती है। पानी के अस्तित्व का कोई रुप उसका नही बनता है। ऐसी सूक्ष्म स्नेहकाय के लिये सूती कपडा ढकना या ऊनी कबल ढकने का कोई उद्देश्य नही होता है। यह तो एक लोकस्वभाव बताया गया है। इसका सबध साध्वाचार से कुछ भी नही जुडता है। क्यो कि उसका एक क्षण भी पानी रूप, बूद रुप, कण रूप, अस्तित्व ही नहीं रहता है। इसके लिये भगवती का पाठ देख सकते है। तथा वहा इसके साथ मस्तक ओढने सबधी कोई बात मूल मे या टीका आदि मे नही कही है।

अत साधु के मस्तक ढकने का नियम शास्त्र से सम्मत नही है, परम्परा मे चलाया गया है। खीचतान कर उसे आगम सम्मत सिद्ध करने का प्रयत्न नही करना चाहिये। क्योकि आगम प्रमाण जो उपर दिये गये है उनसे वस्त्र सबधी आग्रह वाले नियम साधु के लिये नही बन सकते। साधु कभी वस्त्र का त्यागी भी बन सकता है। अत परम्परा को परपरा ही कहना चाहिये। आगम मे तो मस्तक पर ओढने का प्रायश्चित कहा है। किंतु मस्तक पर नही ओढने का साधु को प्रायश्चित कही भी नही कहा है।

इसलिये मकान के बाहर साधु को कभी भी मस्तक ढाकने का

नियम आगम के नाम से आग्रह करने योग्य नही है ।

प्रश्न- ५३. मासिक धर्म मे साध्वियां सूत्र की वाचना मे बैठ सकती है ?

उत्तर- मासिक धर्म में आना यह स्त्री शरीर का स्वभाव है तथापि आगमों में स्त्री को दीक्षा देना, ११ अग का ज्ञान करना एव सकल कर्म क्षय कर मुक्त होना, श्वे जैन शास्त्रो मे कहा गया है । दिगम्बर ग्रथो मे भी स्त्रीलिंग सिद्ध होना बताया गया है ।

जैनागम देववाणी मे होने से अशुचि के स्थानो मे उन की स्वाध्याय करने का निषेध शास्त्र मे किया है, जो साधु साध्वी दोनो के लिये है । खुद के शरीर मे फोडा फुसी मे खून रस्सी निकलता हो या साध्वी ऋतु धर्म मे हो तो उस खून की अशुचि के कारण स्वाध्याय करना वर्जित है । आगम में अस्वाध्याय मे स्वाध्याय करने का निषेध करने के अनतर ही यह छूट भी दे दी गई है कि अपनी शरीर सबधी उक्त अस्वाध्याय मे साधु साध्वी परस्पर वाचना दे ले सकते है । यह बात एक ही सूत्र में सलग्न कही गई है । यथा-

नो कप्पई निग्गथाण वा निग्गथीण वा अप्पणो असज्झाए सज्झाय करित्तए, कप्पई ण अण्णमण्णस्स वायण दलइत्तए ।

यह व्यवहार सूत्र उद्देशा ७ का सूत्र है । इसमे साधु साध्वी को अपनी शरीर सबधी असज्झाय मे परस्पर वाचना देने लेने की स्पष्ट छूट दी गई है । इस सूत्र की व्याख्या करने वाले आचार्य ने भी इस बात का विरोध नही किया है किंतु विधि समझाई हे कि शरीर की शुद्धि करके आवश्यकतानुसार वस्त्र रूई के ३-५ या ७ पट लगाकर भी वाचना की जा सकती हैं ।

अत आगम आज्ञा से आर व्याख्या से दोनो से यह स्पष्ट ह कि मासिक धर्म की असज्झाय मे वाचणी वद करना कोई जरूरी

नही है ।

इसके विपरीत बिना कोई आगम प्रमाण के केवल लौकिक रूढियो और सम्मतियो को आगे करके परस्पर वाचना का जो निषेध करता है तो उसका वह आगम विपरीत प्ररूपण होता है और ज्ञानका अतराय करके ज्ञानावरणीय कर्म वध बढाना होता हे ।

ऐसा प्ररूपण करने वाला आगम प्रमाण की स्पष्टत उपेक्षा करता है और शुचिधर्मीपन के मानष को आगे करता है । ऐसे लोग आगे वढ़कर साध्वी को साधु के स्थान में आना भी मना करने लगते हैं और कोई तो एक नमस्कार गिनना या भगवान का नाम लेना भी पाप बता देते है । ऐसे लोग दया के पात्र है । वे आगम आज्ञा की उपेक्षा कर प्रवाह और अपनी धुन के अनुसार चलने वाले होते है और भोले लोगों को भी गलत मार्ग मे भटका कर धर्म से और ज्ञान से वचित करके अतराय बाधते है ।

५४ **आगमकार ने निषेध करके भी ऐसी छूट क्यो दी है ?**

शास्त्रो की वाचना साधुओ को या साध्वियो को या कभी उभय को सामुहिक रूप से दी जाती रही है । जैनागमो के वर्णन को देखने से ज्ञात होता है कि शास्त्र वाचना साधु जीवन का प्रमुख आचार रहा है ।

ऐसी स्थिति में वाचना मे बैठने वाले शरीर के कारण से कभी कोई, कभी कोई अनुपस्थित रहेगे तो उनके किसी भी सूत्र की वाचना पूरी नही हो सकेगी । एक के लिये सब को रोकेगे तो भी बहुत अव्यवस्था हो जायेगी । और पढाने वाला अनुपस्थित को पुन पुन पढ़ावे तो भी सभव नही होगा,

इत्यादि अनेक हेतुओ को जानकर ही आगमकार ने वाचना के लिये उक्त छूट मूल पाठ मे दी है, जिसे व्याख्याकार ने भी पुष्ट किया है किंतु विरोध नही किया है। ये व्याख्याकार आचार्य भी मूर्तिपूजक परपरा के थे। फिर भी सूत्र के आशय को समझाते हुए विधि का स्पष्टीकरण किया है।

अत पूर्वाग्रह छोडकर आगम तत्व स्वीकार करना चाहिये। निशीथ सूत्र के १९ वे उद्देशक मे भी इसी विषय की चर्चा है वहा भी व्याख्याकार ने वाचना लेने देने की ही पुष्टी की है।

प्रश्न- ५५. निरियावलिका आदि पांच सूत्र है या एक सूत्र है?

उत्तर- स्थानकवासी और मूर्तिपूजक दोनो ही परपरा मे (१) निरयावलिका (२) कप्पवडसिया (३) पुप्फिया (४) पुप्फ चूलिया (५) वण्हि दसा ये पाच सूत्र गिने जाते है। इसी परपरा के कारण कभी किसी ने नदी सूत्र में भी पाच नाम लिख दिये है।

किंतु इस सूत्र का नाम उपाग सूत्र है और ये उक्त पाच नाम के पाच वर्ग इस सूत्र मे है। यह बात इस सूत्र के मूल पाठ के प्रारभ को देखने से स्पष्ट हो जाती है यथा-

"हे भते उपाग सूत्र के निरियावलिया आदि पाच वर्ग कहे है तो हे भते! प्रथम वर्ग के कितने अध्ययन कहे है।"

इस प्रकार इस सूत्र के मूल पाठ से स्पष्ट हो रहा है कि यह उपाग नामक सूत्र है पाच इसके वर्ग है। विकृति से कभी उन वर्गों को ही सूत्र कहने की परपरा चल गई है। जिसको आज तक कोई भी सुधारने का प्रयत्न नही करता है। ऐसी कई परपरा आख मीच कर चलाई जाती रहती है। इसका कारण यह है कि समाज मे आगम महत्व के उपर परपरा महत्व जरूरत से ज्यादा हावी हो रहा है। आगम महत्व से

परपरा को सुधारने की हिम्मत करने वाले भी अल्प होते है तथा बहुमत से चलने वाले लोग उनकी भी निदा और विरोध ही करते हैं। कितु आगम प्रमाण के महत्व को समझने का प्रयत्न नही करते। अत आगम सत्य यह है कि यह एक सूत्र ही है पाच नही है।

५६ चन्द्र प्रज्ञप्ति और सूर्य प्रज्ञप्ति सूत्र दो है या एक है?

परम्परा से ये दो सूत्र गिने जा रहे हैं। किंतु इस सूत्र की प्रारभिक चार गाथा है जिसमें सूत्रकर्ता ने कहा है कि मैं अब ज्योतिष गण राज प्रज्ञप्ति का कथन करुगा। इस एक सूत्र मे सूर्य चन्द्र ग्रह नक्षत्र तारा सबधी सपूर्ण वर्णन कर दिया गया है। अत सूत्रोक्त ज्योतिषगणराज प्रज्ञप्ति सूत्र नाम ही सार्थक नाम है। इसके चद्र प्रज्ञप्ति और सूर्य प्रज्ञप्ति ऐसे दो भेद और दो शास्त्र करने पर उसका मतलब भी समझ मे नही आ सकता।

उसका मतलब होगा कि सूर्य प्रज्ञप्ति मे सूर्य सबधी वर्णन और चन्द्र प्रज्ञप्ति मे चन्द्र सबधी वर्णन हो। किंतु ऐसा भेद इस सूत्र मे किचित भी नही देखा जा सकता। जो सूत्र उपलब्ध है उसमे सपर्ण ज्योतिषी सबधी पूरा वर्णन हैं। अत लिपि दोष भ्रमवश कभी भी ये दो सूत्र बन गये हैं इनको देखकर के कोई भी समझ सकता है कि इनमे कोई विषय भेद तो है ही नही। नाम भ्रम से और लिपि प्रमाद से भूल से ही ये दो सूत्र चल पडे है। इसी परपरा के कारण नदी मे भी दो नाम कभी जानबूझकर या भ्रम से लिखे जाने लगे है।

इस बात को कोई समझना चाहे तो इन दोनो सूत्र के मूल

पाठ के एक दो पृष्ट पढकर सरलता से स्वीकार कर सकता है। समझ मे आने जैसी सीधी बात है। मूल पाठ मे इसे चद्र सूर्य प्रज्ञप्ति नही कहा कितु ज्योतिष गणराज प्रज्ञप्ति कहा है।

- ५७. **चार छेद सूत्रो का क्रम सही क्या है ?**

- (१) निशीथ सूत्र (२) दशाश्रुत स्कध सूत्र (३) वृहत्कल्प सूत्र (४) व्यवहार सूत्र। यह सही क्रम आगम सम्मत है।

व्यवहार सूत्र के तीसरे और दसवे उद्देशे मे तथा श्रमण सूत्र के चौथे पाठ मे दशा-कप्प-ववहार शब्द आता है। उससे इन तीन सूत्रो का क्रम निश्चित होता है।

इन तीन सूत्रो से निशीथ सूत्र को पहले पढाना कहा गया है अर्थात् तीन वर्ष की दीक्षा पर्याय मे निशीथ कहा है और पाच वर्ष की दीक्षा पर्याय मे तीन छेद सूत्र कहे है अत तीन छेद सूत्रो से निशीथ का स्थान प्रथम है। निशीथ सूत्र को ही शास्त्रो मे आचार प्रकल्प कहा गया है।

- ५८. **आगम वाचना का क्रम जो शास्त्र मे दिया है उसके साथ दीक्षा पर्याय का कथन है तो उसका क्या अर्थ है ?**

- तीन वर्ष की दीक्षा पर्याय वाले को आचाराग निशीथ सूत्र, चार वर्ष की दीक्षा पर्याय वाले को सूयगडाग सूत्र, पाच वर्ष की दीक्षा पर्याय वाले को तीन छेद सूत्र आदि दस बीस वर्ष की दीक्षा पर्याय के साथ शास्त्र वाचना का वर्णन व्यवहार सूत्र उद्देशा १० मे है।

उसका तात्पर्य यह समझना चाहिये कि योग्य साधुओ को तीन वर्ष तक इतना अध्ययन जरूर करा देना चाहिये। वैसे ही पाच वर्ष तक उतना अध्ययन अवश्य करा देना चाहिये।

यदि कोई इसका यों अर्थ करे कि तीन वर्ष बाद और पाच वर्ष के बाद ही उक्त सूत्र पढ़ाना चाहिये तो ऐसा अर्थ करना आगम से विपरीत होता है ।

क्यो कि उसी व्यवहार सूत्र के तीसरे उद्देशे मे तीन वर्ष वाले को उपाध्याय बनाने का विधान है जिसमे उस तीन वर्ष के भिक्षु को बहुश्रुत होना कहा है और कम से कम आचाराग निशीथ को धारण करने वाला होने का नियम कहा है । अत तीन वर्ष के बाद पढ़ाने का अर्थ करना उपयुक्त नही है ।

अन्य आगमो मे ऐसे वर्णन है जिसमे अल्प दीक्षा पर्याय मे अधिक आगम अध्ययन करने की बात है । अत अधिक पढने का निषेध नही है । कम से कम इतना अध्ययन जरूर करना ऐसा तात्पर्य है ।

-५९ **साध्वी को छेद सूत्र पढना कल्पता है-?**

निशीथ सूत्र भी छेद सूत्र माना जाता है । इसे पढना कण्ठस्थ धारण करना प्रत्येक योग्य साधु-साध्वी को आवश्यक है । व्यवहार सूत्र उद्देशा पाच सूत्र १५-१६ में साधु-साध्वी को निशीथ सूत्र विस्मृत होने पर कठोर दड विधान किया है । १५ वे सूत्र मे साधु के लिये और १६ वे सूत्र मे साध्वी के लिये ।

कठस्थ रखना और भूलना नही अत सदा स्वाध्याय करते रहना । ऐसे आगम वर्णन होते हुए किसी परपरा के भ्रम से ऐसा कहना कि 'साध्वी को छेद सूत्र पढना निषिद्ध है' यह कथन बिल्कुल गलत है और आगम विरुद्ध है ।

आगम से स्पष्ट है कि साध्वी छेद सूत्र पढ सकती है । छेद सूत्रो मे साधु-साध्वी के जानकारी की आवश्यक बातो का सकलन है । इसके अध्ययन मनन अनुभव से ही

साधु-साध्वी बहुश्रुत बनते है और अनेक प्रकार की योग्यता युक्त बनते है ।

प्रश्न- ६० **आगमो का सारांश लिखना तीर्थकरो गणधरो की आशातना है ?**

उत्तर- समय की आवश्यकता के अनुसार आगमो का विवेचन लिखा जाता है । हिदी सस्कृत भाषा मे अर्थ या विस्तार किया जाता है । सूत्रो को अग्रेजी भाषा मे भी छपाया जाता है । उसी प्रकार समय की माग होती है कि स्वाध्याय अस्वाध्याय का नियम न लगे और छोटे रूप मे अल्प समय मे शास्त्रो के विषयो का परिचय या मर्म समझने मे आ जाय, ऐसे प्रत्येक आगम के साराश छोटी-छोटी पुस्तको मे होना चाहिये । कई स्वाध्यायी चाहते हुए भी विस्तृत पुस्तको को पढ नही पाते । इत्यादि ऐसे ही आशय से हिदी पद्य मय भी कुछ शास्त्र बनाये गये हे । ये सभी प्रयत्न जिनवाणी को जन जन तक पहुचाने के और समझाने के सरल और रुचिकर समयानुकूल माध्यम है । इसे आशातना नही समझकर श्रुत भक्ति और श्रुत सेवा समझना चाहिये ।

प्रश्न- ६१. **क्या साध्विया पाट पर बैठ सकती है साधुओ की सभा मे ?**

उत्तर- इस विषय मे आगम मे कोई विधि निषेध नही है । फिर भी चिंतन करने का विषय है । परपरा अधिकतम नीचे बैठने की हैं ।

विचार करे कि भगवान के समवसरण मे हजारो साधु साध्वी भी रहते थे और हजारो श्रोता भी । तो क्या ऐसे प्रसगो मे साध्वी समूह के लिये भूमि पर बैठना सभव है ? नही, कोई भी उच्च आसन व्यवस्था परिपद के योग्य हो

सकती है। आज भी दीक्षा आदि मे होती है।

महाव्रत साधु-साध्वी दोनो के समान है पुरुष ज्येष्ठ कल्प वदना के लिये तो व्यवहारिक है योग्य है। किंतु सेकड़ो हजारो की परिषद मे महाव्रत धारी साधु पाट पर बैठे और साध्विया सामान्य बहिनो के साथ उनके समकक्ष भूमि पर बैठे। यो सभा मे साध्वियो को गृहस्थ परिषद मे बैठाना एक सद् विचारयुक्त परपरा नही कही जा सकती हैं। यो तो साधु-साध्वी भूमि पर सहज ही बैठना सोना करने मे कोई सकोच नही करते। किंतु विशाल परिषद मे महाव्रत धारी को गृहस्थ के समकक्ष बैठाना अच्छी व्यवस्था नही कही जा सकती।

आगम मे ऐसा कोई विधान नही है कि साध्वी पाटपर न बैठे या साधु के सामने पाट पर न बैठे।

विनय का नियम भी कोई पाट पर बैठने से भग नही हो जाता। अनेक सामान्य साधु भी अपने गुरु आचार्य के बराबर एक पाट पर सभा मे बैठकर सभा की व्यवस्था रखते है। अन्य समय मे वे कभी गुरु के समकक्ष या उनके पाट पर नही भी बैठते हो। तो सभा की व्यवस्था मे सभी महाव्रती श्रमण श्रमणियो का परिषद की अपेक्षा कुछ विशेष स्थान होना ही चाहिये। इसमे अविनय या आगम विरुद्ध कहना उपयुक्त नहीं है। केवल सोची या बिन सोची चलती आई परपरा का आग्रह रखना उपयुक्त नही कहा जा सकता।

६२ **श्रावक को सचित जल का त्याग करने से लाभ क्या? उसे तो पानी अचित बनाना पडेगा?**

१ सचित्त पानी के त्याग रुप प्रत्याख्यान हो जाता हे। २ कहीं

भी अन्यत्र या ग्रामातर जाने का हो तो नियत्रण मे रहना पडता है । ३ सीमित पानी के आरभ के बाद समस्त स्थानो के सचित्त जल के जीवो को अभयदान हो जाता है । ४ सीमित जल की क्रिया के अतिरिक्त क्रिया रुक जाती है । ५ जीव युक्त चीज को मुह में डालना श्रावक को अयोग्य होता है सातवें व्रत मे सचिताहार करना अतिचार कहा है उसके त्याग का पालन होता है । ६ सचित्त जल मे प्रतिक्षण नये जीव उत्पन्न होते रहते है मरते रहते है उनकी क्रिया बद हो जाती है । ७ रसनेद्रिय विजय भी होता है । ८ व्रत प्रत्याख्यान की भावना पुष्ट होती है जिससे उत्तरोतर त्याग नियम की वृद्धि होती है । ९ कभी परीक्षा की घडी आती है तब महान तप होता है । १० अम्बड श्रावक के शिष्यो को आज्ञा बिना सचित जल लेने का त्याग था तो भी सथारा करना पड़ गया । ११ श्रावक की सातवी पडिमा में सचित का त्याग करना जरूरी होता है फिर आठवीं पडिमा मे उसके आरभ करने का त्याग होता है । १२ अचित जल पीने वाला मुनियो को अचित निर्दोष जल के सुपात्र दान का लाभ प्राप्त कर सकता है क्योकि साधुओ को निर्दोष पानी मिलना दुर्लभ होता है ।

अत कोई भी त्याग नियम लेना तो जीवन मे बहुत ही महत्व शील होता है । आगे बढने का या विचारने का मार्ग खुलता है । त्याग नही करने वाले को बहुत आश्रव खुला रहता है । व्रत प्रत्याख्यान का लक्ष्य भी नही बढ़ता है । सचित सजीव को खाने पीने मे और अचित्त अजीव निर्जीव पदार्थ खाने पीने के परिणामो मे भी बहुत अतर होता है ।

प्रश्न- ६३ स्थानक आदि मकानो के बनाने की प्रेरणा देना साधु को

कल्पता है ?

उत्तराध्ययन सूत्र अ ३५ मे ऐसे कार्यो की प्रेरणा देने का स्पष्ट निषेध किया है । तीन करण तीन योग से हिसा के त्याग रूप प्रथम अहिंसा महाव्रत मे दोष लगता है । यह कार्य करने से साधु को महान पाप कार्यो मे भाग लेकर छ काया की अनुकम्पा से रहित बनना पडता है । १२ व्रतधारी श्रावक भी अपने जरुरत पर १-२ मकान नये बनाने उपरात त्याग करता है। दूसरो के मकान के आरभ समारभ मे रस लेना वह भी अनर्थ दड समझता है । वास्तव मे नया मकान बनाने मे ६ काया के जीवो का महान आरभ होता है । साधु होकर जो ऐसे पाप कार्यो की प्रेरणा मे बह जाता है वह साधुत्व से तो भ्रष्ट होता ही है साथ ही इन कार्यो मे आशक्ति रस बढ जाय, खेद पश्चाताप की जगह यश कमाने लग जाय, अपने उस कार्यो की प्रशसा लोगो से और जाहिर पत्रो से कराने लग जाय, तो उसके समकित की रक्षा होना भी मुश्किल हो जाता है । गृहस्थ तो अपने आवश्यक पापो से भी छूटने का मनोरथ रखता है किंतु ऐसी प्रवृति मे पडने वाले साधुओ की यश लालसा आगे से आगे बढती है । वे अनेक स्थानक सस्था भवन मदिर तीर्थ स्थान बनाने मे ही अपना जीवन लगा देते है । तब वे महारभी महापरिग्रही की स्टेज तक पहुच जाते है और उसी मे अपने जीवन का आनद मानते है कि मैंने इतने भव्य मकान मदिर तीर्थ स्थान बनवाये । लोग भी ऐसी प्रशसा करके फूलाते रहते है ।

वास्तव मे यह कार्य भगवान की आज्ञा मे विपरीत है ।

६४ **फोटू खिंचवाना उचित है ? क्या प्रायश्चित आता है ?**

यह एक सासारिक मनोवृति का कर्तव्य है इसमे केवल मन की

तुष्टी होती है। साध्वाचार के अयोग्य प्रवृति है। साधु को काच आदि मे अपना फोटू देखना भी शास्त्र मे निषेध किया है। उसका भी प्रायश्चित कहा है।

गृहस्थ साधु की अनिच्छा से स्वत बिना सूचना किये फोटो खीच ले फिर मालूम पडे तो केवल गुरु के पास आलोचना प्रायश्चित है।

खुद इच्छा से खीचावे प्रेरणा करके तो चार उपवास का प्रायश्चित है।

अपनी इच्छा लालसा नही है किंतु गृहस्थ की इच्छा को तोड़ने जैसा मानस नही है ऐसे लिहाज से मना नहीं करना, स्वीकृति देना, किया हो तो एक उपवास प्रायश्चित।

प्रश्न- ६५ माइक मे बोलने का क्या प्रायश्चित ?

उत्तर- गृहस्थो ने अपनी जरूरत से स्वत व्यवस्था करदी और बोलना पड़ा तो एक उपवास।साधु ने माइक व्यवस्था की प्रेरणा आदेश किया और बोला तो चार उपवास।

प्रश्न- ६६. साधुओ को माइक मे बोलना उचित है ?

उत्तर- जिनकल्पी या विशिष्ट साधना अभिग्रह करने वाले किंचित भी अपवाद मार्ग का या दोष का सेवन न करे तो वह श्रेष्ठ मार्ग है। किंतु सामान्य साधक सामाजिक प्राणी होकर समाज के लिये या खुद के शरीर के लिये अनेक छोटे बडे दोष सेवन और अपवाद सेवन करता हे तो माइक मे बोलना भी एक परिस्थितिक अपवाद ही है। जैसे दूसरे अनेकानेक दोष हैं वैसा यह भी एक सामान्य दोप हे। दोषो का सेवन या अपवाद का सेवन प्रत्येक आत्मा का ऐच्छिक हे। जिसकी अतरात्मा की स्वीकृति हो वही अपवाद और दोष का सेवन परिस्थिति मे

करता है और प्रायश्चित लेकर शुद्धि करता है। कोई अल्प साधक ही ऐसे होते है जो मरना मजूर पर दोष लगाना नही, ऐसे सिद्धात का पालन करते हो। आज समाज मे अनेको साधु समुदाय ऐसे है जो अनेको दोष खुले रुप मे लगाते है किंतु हजारो की परिषद इकट्ठी करके भी माइक में नही बोलने की अपनी उत्कृष्टता बघारते हैं। वह उचित नही है। पत्रिकाए छपा सकते है, प्रकाशन कार्य कर सकते है, आधाकर्मी पानी आहार फ्रूट्स मेवा ले सकते है, भक्तो को दर्शन करने आने का निमत्रण दे सकते है, नियम करा सकते है। बडे-बड़े ऑपरेशन करा सकते है। फोन करा सकते है। समाचार वाहक अतरग व्यक्ति को इधर उधर भेज सकते हैं। चौमासे की विनती के लिये बसे मगवा सकते है। बड़े-बडे फक्शन करवा सकते है। इनमे से कितनी बातो का प्रायश्चित लेते है और कितनी का प्रायश्चित भी नहीं लेते। ऐसी स्थिति मे कोई परिस्थिति से माइक मे बोलकर प्रायश्चित लेता है तो उसे सर्वथा अनुचित तो नही कहा जा सकता। जो किंचित भी अपवाद दोष सेवन नही करना चाहे उसके लिये तो यह दोष भी नही लगाना उपयुक्त है। किंतु अनेक उक्त दोष लगाने वाले, समय पर हानि लाभ का विचार कर माइक मे बोलते है तो यह उनकी आत्मा के विवेकयुक्त निर्णय पर निर्भर है। इसमे दूसरो का आग्रह या विरोध की आवश्यकता नही है।

६७ श्रावक माइक मे बोले तो कौन से व्रत मे दोष है ?

सामायिक या पौषध व्रत हो तो श्रावक को माइक मे बोलना दोष होता है उसके अतिरिक्त श्रावक के माइक मे बोलने से कोई व्रत भग नही होता है। यदि किसी ने दैनिक मर्यादा में न रखा हो या विशिष्ट रूप से त्याग किया हो तो वह अपने उस

विशिष्ट नियम के कारण नही बोल सकता। सामान्यतया श्रावक बिजली पखे, हीटर, कूलर, फ्रीज, कार, मोटर, फोन आदि अनेक साधनो रेडियो, टी वी आदि का उपयोग करता है उसी मे माइक का भी समावेश हो जाता है।

व्यक्तिगत त्याग भावना से या अपनी विशेषता दिखाने के लिये अथवा बोलने वाले साधुओ के प्रति विरोध प्रदर्शित करने या उनकी हल्की लगाने आदि भावो से कोई श्रावक नही बोलता तो वह उसकी अपनी इच्छा की स्वतत्रता है। सहज १२ व्रतधारी श्रावक अन्य विद्युत साधन के उपयोग के समान यदि माइक का उपयोग कर लेता है तो उसका कोई व्रत खडित नही होता है।

८ होली दीपावली और वर्षा की असज्झाय होती है?

इनकी अस्वाध्याय किसी भी शास्त्र मे या व्याख्या ग्रथो मे नही कही गई है। अत प्रश्न गत तीनो असज्झाय किसी के स्वमति से चलाई गई है आगम का इसमे कोई आधार नही है।

आगम ठाणाग मे दसवे ठाणे मे दस औदारिक की और दस आकाशीय यो बीस अस्वाध्याय कही है निशीथ सूत्र उद्देशक १९ में चार पूनम, चार एकम और चार संध्या यो १२ असज्झाय कही है, यो कुल ३२ अस्वाध्याय शास्त्र सम्मत है।

चार पूनम ये है- आसोजी पूनम (इन्द्र महोत्सव), कार्तिकी पूनम (स्कंध महोत्सव), चैत्री पूनम (यक्ष महोत्सव), आषाढी पूनम (भूत महोत्सव)

लिपी दोष और समझ भ्रम से आसोजी पूनम की जगह भादवा की पूनम भी कही जाती हे किंतु यह भूल समझनी चाहिये।

इन्ही पूनम के बाद की एकम समझनी चाहिये। अस्वाध्याय

सबधी अन्य समाधानो के लिये मधुकर मुनि के सपादन का निशीथ सूत्र उद्देशा १९ का अध्ययन करना चाहिये ।

-६९. मक्खी मच्छर के खून या कलेवर की अस्वाध्याय होती है ?

- पचेन्द्रिय कलेवर तथा खून की अस्वाध्याय होती है। विकलेन्द्रिय के खून आदि की असज्झाय नही होती है ।

-७०. स्नेह काय तमस्काय मे से पड़ती है ?

- भगवती सूत्र मे कही गई सूक्ष्म स्नेहकाय यही ऊचे नीचे तिरछे स्थानो मे पडती है और आकाश मे पुद्गलों के सचय से बनती है । तमस्काय तो पाचवे देवलोक में बाहर से गई है उसके बीच मे नीचे तीसरा चौथा और पहला दूसरा देवलोक आ जाता है । अत उसमें से पुद्गलो का गिरकर यहा आना सभव नही है ।

-७१. अधिक मास हो तो पूनम एकम की अस्वाध्याय कब ?

- महीना बढ़ने पर प्रथम महीना छोड कर दूसरे महीने की पूनम एकम की अस्वाध्याय रखना । बाल चन्द्र की अस्वाध्याय दोनों महीनो में रखना । और पर्व-महावीर जयति, अक्षय तृतीया, चौमासी, सवत्सरी सभी दूसरे महीने में करना । अर्थात् महोत्सव-पर्व सभी द्वितीय मास मे होते है प्रथम मास को नपुसक मास कहा गया है उसे गौण किया जाता है ।

-७२. प्रसूति गृह और स्थानक की दिवाल एक हो तो स्वाध्याय वाचना कब कैसे ?

र- सभव हो तो स्वाध्याय के लिये अन्य मकान निश्राय में रख लेना चाहिये । अन्यथा स्थानक बडा हो तो प्रसूति स्थानो से १०० हाथ दूर के कमरे या स्थान मे बैठकर वाचना की जा सकती है और स्वाध्याय मन में करनी चाहिये । यह भी एक आपवादिक समाधान मात्र धारणा से समझना चाहिये ।

७३. **अभी कितने ही परम्परा भेद और मान्यता भेद है कई आगम विपरीत भी होंगे तो क्या वे सभी साधु श्रावक विराधक होगे? यथा- कोई संवत्सरी अलग-अलग करते है, कोई केला को सचित सिद्ध करते है, तो कोई आठम पक्खी को भी खाते है अचित समझ कर? ऐसी कई बातें है?**

जिसको जो परपरा सयोग मिला है वह उसके अपने कर्मोदयो या पुण्य सयोगो से मिला है। साधको का अपना कर्तव्य है कि जिनवाणी रुप जिनागमो के प्रति पूर्ण श्रद्धा निष्ठा रखे, उन्ही के स्वाध्याय चिंतन में लगा रहे, जितना जैसा श्रमणाचार श्रावकाचार का ज्ञान मिला है तदनुसार ईमानदारी वफादारी से पालन करे। तप मे यथाशक्ति वृद्धि करे। त्याग नियमो मे वृद्धि करता रहे। सदेहास्पद बातें समाज समुदाय से सबध रखती हो तो उनकी आज्ञा और एकता बनाये रखे। व्यक्तिगत सबध हो तो खाने का त्याग नियम बढा लेवे। दशवैकालिक सूत्र अ ५ मे कहा है कि सदेहास्पद खाद्य पदार्थ त्याग देना चाहिये।

तथा सरलता युक्त समझने की बुद्धि अर्थात् समझने की उदारता वृत्ति रखना चाहिये। परपरा का तथा धारणा और ज्ञान का दुराग्रह न होना चाहिये। आगम प्रमाण को सर्वोपरी मानने की वृति रखना चाहिये और मत मतातर की बात जब भी, जिससे भी, आगम आधार से सही समझ मे आ जाय तो अपनी श्रद्धा प्ररुपणा मे अतर कर देने की सरल मनोवृत्ति होनी चाहिये। पकड का, परपरा का, बहुमत का, दुराग्रह आगम प्रमाण से आगे नहीं बढ़ना चाहिये। इस प्रकार का ध्यान रखा जाय तो वर्तमान परम्परा भेद मान्यता भेद के जमाने मे भी साधु श्रावक जिनाज्ञा के आराधक हो सकते हैं।

७४. श्रमण सूत्र के पांचवे पाठ मे कहे १८००० शीलांग रथ गुण कौन से है ?

करण ३, योग ३, सज्ञा ४, इन्द्रिय ५, (स्थावर ५, त्रस ४, अजीव १) सयम १०, क्षमा आदि यति धर्म १०, इनको गुणा करने पर १८००० होते हैं। इनकी १८००० गाथाए होती है पहली गाथा-

जे ण करेन्ति मणसा, णिज्झूहिय आहार सण्णा सोइदिय ।
पुढवी कायारभे, खति जुत्ता ते मुणी वदे ॥१ ॥

-७५. श्राविका बहिनो को मासिक धर्म हो तब क्या ध्यान रखना चाहिये। संत सती दर्शन, व्याख्यान श्रवण, सुपात्र दान आदि मे क्या करना ?

र- मासिक धर्म वाली बहिने शास्त्र के मूल पाठ का स्वाध्याय नही करे तथा स्वाध्याय करने वालों के सामने भी नही बैठे। इतना नियम आगम वर्णन से प्राप्त होता है।

अत इसके अतिरिक्त अपने घर में या स्थानक मे कोई भी धार्मिक क्रिया सामायिक प्रतिक्रमण आदि क्रियाए कर सकती है। सत सतियो के दर्शन करने में कोई रुकावट नही है क्यो वि साध्वियो को भी तो मासिक धर्म होता ही है वह साध्वी समू मे रहती ही है। तीन साध्विया हो एक वृद्ध हो दो जवान हे दोनों को साथ मे मासिक धर्म हो तो गोचरी पानी लाने में को रुकावट नही आती है।

व्यवहार सूत्र उद्देशा ७ के अनुसार साध्विया मासिक धर्म साधु के पास शास्त्र वाचना ले सकती है ऐसा मूल पाठ विधान है तो साधु के दर्शन करने मे आगम से कोई रुका नही आती है। बहिने शारीरिक विवेक करके व्याख्यान भी र

सकती है। व्याख्यान मे शास्त्र का व्याख्यान चलता हो तो भी बाधा नही होती। क्यो कि साध्विया शास्त्र की वाचना ले सकती है। ध्यान रहे कि शरीर की शुद्धि विवेक करके ही व्याख्यान मे जाना होता है।

गोचरी बहराने के सबध में शास्त्र मे कुछ भी नही है। किंतु क्षेत्रो का या व्यक्तिगत परिवारो का जो शुचीपन का रिवाज हो उसी के अनुसार बहिने अपने कुल के रिवाज का पालन करती है वह व्यवहारिक है और साधु भी क्षेत्र और समाज के रिवाज का यथाशक्य विवेक रखे यह उपयुक्त है।

किंतु सरकारी नौकरी मे कहीं पति पत्नि दो ही रहते हैं और वे वैसा कोई नियम नही पालते और साधु को बुला कर या घर पर आने पर बिना जानकारी दिये बहरा दे तो साधु को कोई प्रायश्चित नही आता है क्यो कि यह लौकिक शुचीधर्म का नियम साधु केवल व्यवहार के लिये ध्यान रखता है।

अत साधु को विवेक रख कर इस विषय मे किसी प्रकार का निषेध या प्ररुपण नहीं करना चाहिये। व्याख्यान दर्शन आदि का मना करना सर्वथा अनुचित है आगम विरुद्ध है। व्यर्थ मे धर्म का अतराय होता हे।

७६. तेतीस आशातना मे दसवी ग्यारहवी आशातना क्या है?

गुरु रत्नाधिक के साथ बाहर स्थडिल जावे और गुर्वादिक से पहले ही स्थानक मे आ जावे उनके साथ नहीं आवे उनका इन्तजार न करे तो शिष्य को बड़ो की आशातना लगती हे। बड़े स्वयं आदेश करदे कि तुम इन्तजार नहीं करना, चले जाना, तो आगे आने मे आशातना नहीं होती हे। यह दसवीं

आशातना है ।

साथ मे स्थानक मे आकर ईर्यावहि का कायोत्सर्ग गुरु आदि से पहले करे तो यह ग्यारहवी आशातना है ।

). **पहले पानी से शुचि करें तो भी आशातना लगती है ?**

यह कहना उपयुक्त नही है लिपी दोष या समझ भ्रम से ऐसा पाठ या अर्थ कहीं हो गया हो तो वह आगम सम्मत भी नही है और व्यवहार सगत भी नही है ।

भगवती सूत्र मे एवता कुमार मुनि का वर्णन है । वे बडे सतो के साथ स्थडिल गये और पहले ही शुचि करके तैयार हो गये । कोई भी साधु स्थडिल जाते है तो गाव के बाहर जाकर वे अलग-अलग दिशा में चले जाते हैं तब शुचि करने के लिये किसी के इन्तजार का कोई प्रश्न ही नही होता है ।

असभ्य बहिनो की ऐसी पद्धति होती है जो एक साथ निकट बैठकर शौच निवृत्ति करती है किंतु ऐसा सभ्य पुरुषों व साधु-साध्वी के लिये कल्पना करना योग्य नही है । अत उपरोक्त समझ ही दसवी ग्यारहवी आशातना के लिये उपयुक्त है और साधुओ के आचरण समाचारी में भी वही दोनों प्रचलित हैं । किंतु शुचि नही करने की बात किसी साधु समुदाय मे नही है । न ही ऐसा नवदीक्षित को सिखाया जाता है ।

न- ७८. **छेदोपस्थापनीय चारित्र जघन्य कितने मिलते है ?**

र- यह अशास्वत बोल है अत कभी एक भी नही होवे और होवे तो जघन्य १-२-३ यावत् अनेक सौ क्रोड हो सकते है अर्थात् उत्कृष्ट होवे तो अनेक सौ क्रोड समझना ।

कई लोग जघन्य उत्कृष्ट दोनो अनेक सौ क्रोड बोलते है वह उपयुक्त नही है ऐसा कथन शास्वत बोल के लिये होता हैं। जब कि यह चारित्र भरत ऐरावत के प्रथम अतिम तीर्थकर के समय ही होता है। अत इसकी कभी आदि भी होती है कभी अत भी होता है। उस समय जघन्य १-२-३ आदि कोई भी सख्या हो सकती है। आगम मे अशास्वत बोलो की सख्या सर्वत्र इसी तरह कही जाती है। यहा मूल पाठ में लिपी दोष से कभी १-२-३ इतना पाठ छूट गया है। इसी से ऐसा भ्रम चला है। किंतु यह तत्व समझकर सशोधन करने योग्य है।

७९. जाति कुल आदि का मद करना गोत्र कर्म है या मोह कर्म?

जाति कुल आदि का अच्छा खराब प्राप्त होना गौत्र कर्म है।

इनका मद करना - घमड करना मोह कर्म से होता है।

इनके मद करने से नीच गौत्र कर्म का वध होता है।

८०. प्रज्ञा और अज्ञान परषह कैसे होता है?

भगवती सूत्र मे इन दो परीषह को ज्ञानावरणीय कर्म (के उदय) से होना कहा है। उत्तराध्ययन सूत्र अ २ की गाथाओ के अनुसार (१) बुद्धि की स्फुरणा नही होने से, श्रुतज्ञान विशाल नही होने से, किसी के कुछ भी पूछने पर उत्तर नही आने से, प्रज्ञा परीषह उपस्थित होता है। (२) अवधि, मन पर्यव और केवल ज्ञान रूप प्रत्यक्ष आत्मज्ञानो मे से कोई भी ज्ञान विकट तप सयम आराधन करते हुए भी नही होने से अज्ञान परीषह उपस्थित होता है।

ऐसे समय आत्मा को खेदान्वित नही करके आशान्वित कर प्रसन्न भाव से पुरुषार्थ वृद्धि में लगे रहना, यह परीषह को

जीतना है और ऐसी स्थिति मे खेदान्वित होकर निराशा मे डूबना परीषह हारना होता है ।

१. **सम्यग् दृष्टी जीव स्त्री का और नपुसक का आयु बाधते है ?**
सम्यग् दृष्टी जीव स्त्री नपुसक वेद रुप मोह कर्म की प्रकृति का बध नही करते । किंतु दो गति का आयु बध करके वहा जाते है तब पूर्व मिथ्यात्व मे बधा हुआ स्त्री या नपुसक वेद उदय मे आ जाता है । यथा- मल्लिनाथ भगवान के जीव ने अणुत्तर विमान मे मनुष्यायु का बध समकित मे किया, स्त्रीवेद का बद पूर्व भव का था, वह यहा उदय मे जुड़ गया । इसी तरह नपुसक का भी समझ लेना । क्योकि उसकी भी आगत मे अणुत्तर विमान गिने गये है ।

८२. **चौथे गुणस्थान की और सम्यग् दृष्टी की स्थिति में अतर है ?**
सम्यग् दृष्टी मे अनेक गुणस्थानो का योग हो जाने से उसकी स्थिति ६६ सागर साधिक है । और अकेले चौथे गुणस्थान की स्थिति तो ३३ सागर साधिक होती है । यह उत्कृष्ट स्थिति है ।

८३. **दशवे ग्यारहवे गुणस्थान में सघयण कितने ?**
इन गुणस्थानों मे काल करने वालों मे तो एक सहनन ही होता है । गिरने वालो में तीन हो सकते है और क्षपक श्रेणी वालों में एक सहनन ही होता है ।

८४ **भगवान महावीर का निर्वाण का समय कौनसा था ?**
सर्वार्थ सिद्ध मुहूर्त में भगवान का निर्वाण हुआ । यह दिन के २९ वें मुहूर्त का नाम है । अत रात्रि के अतिम मुहूर्त के पहले का मुहूर्त । लाल दिशा होने के पूर्व के मुहूर्त में अमावश की रात्रि के समाप्ति के समय भगवान का निर्वाण हुआ ।

८५. दर्शनावरणीय कर्म कैसे बंधता है ?

चक्षुदर्शनी यावत् केवली दर्शनी की आशातना करना आदि ६ बोलों के सेवन से दर्शनावरणीय कर्म का बध होता है। यहा सम्यग् दर्शनी नही लेना।

८६. भगवान की हाजरी में स्वयं पुन दीक्षा तथा स्वयं संथारा पच्चक्खाण किसने किया ? वर्णन किस आगम मे ?

जाली कुमार ने भगवान की हाजरी मे स्वय पुन दीक्षा लेकर स्थविरो के साथ पर्वत पर जाकर स्वय सथारा पच्चक्खाण किया। अणुत्तरोपपातिक सूत्र।

८७. जाली कुमार मोक्ष गये या देवलोक में ?

अणुत्तरोपपातिक वर्णित जालीकुमार देवलोक मे गये और अतगड सूत्र वर्णित जालीकुमार मोक्ष गये।

८८. दिगबर जैनों ने स्त्री मुक्ति और वस्त्र युक्त मुक्ति कहा मानी है ?

दिगम्बर जैनों ने १५ भेदे सिद्ध होना अपने शास्त्र षटखडागम मे माना है। उसमे स्त्रीलिंग सिद्धा स्त्री शरीर वालो को ही कहा जा सकता है इससे स्त्री की सिद्धी मानी है। और गृहस्थ लिग और अन्य लिंग सिद्धा माने है तो गृहस्थ और अन्यलिंग वालों के कोई भी वस्त्र तो होगा ही। नग्न हो तो वे दिगबर साधु कहलायेंगे गृहस्थ नही। अत गृहस्थलिंग सिद्ध से वस्त्र युक्त की सिद्धी मानी है। यही छाद्मस्थिक भूल है। दिंगबरो के 'षटपाहुड' मे एक समय मे उत्कृष्ट ४० स्त्री सिद्ध होना कहा है। इन खुद के शास्त्रो से ही उनका सिद्धात स्व वचन विरोध दोष दूषित है। फिर भी उन्होने अपने एक असत्य आग्रह के लिये अनेक असगत जिनाज्ञा विपरीत कल्पनाए कर आत्म

सतोष किया है ।

९. **मंदिर मार्गी जैनो ने मंदिर बनाने के प्रेरको को मिथ्यादृष्टि कुलिंगी किस शास्त्र मे कहा है ?**

महानिशीथ सूत्र अध्ययन ५ सूत्र १२९ मे मदिर बनाने के प्रेरक साधुओ को मिथ्यादृष्टि कुलिंगी कहा है और ऐसे कार्यो का निषेध करने वाले कुवलय प्रभ आचार्य को तीर्थकर नाम कर्म बाधना कहा है। यह सूत्र मदिर मार्गियो के माने ४५ शास्त्र मे है ।

-१०. **मंदिर मार्गी डोरे से मुखवस्त्रिका मुंह पर बांधना पाप कब मानते और धर्म कब मानते ?**

र- साधु के जीवित अवस्था मे मुखवस्त्रिका डोरे से बाधना पाप मानते है और मरे हुए साधु के मुखवस्त्रिका डोरे से बाधना धर्म मानते है। इनके ग्रथों मे लिखा है कि मृत साधु के मुहपत्ति बाधकर फिर बाहर श्मशान यात्रा के लिये निकालना चाहिये साधु लिंग के वास्ते । प्रत्यक्ष प्रमाण के लिये कई तीर्थस्थाने के गुरुमदिर में देख सकते है ।यथा- बीजापुर (उत्तर गुजरात मे दिवाल पर लगे चित्रो मे ।

प्रश्न- ११. **मूर्तिपूजक जैनो के किस शास्त्र मे स्थानक वासी धर्म उत्पत्ति की अतिशय प्रशंसा की गई है ?**

उत्तर- उनके अतिप्रिय कल्प सूत्र में स्थानक वासी धर्म उत्पत्ति अतिशय प्रशसा की गई है वह इस प्रकार है-

भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण के समय उनके जन्म न पर क्षुद्र भस्मग्रह (भासरासि नाम महग्गहे) महाग्रह आ गय उसके कारण भगवान के शासन मे श्रमण निग्रथो का २०

वर्ष तक उदय-उन्नति नही होगी उसके बाद उस महाग्रह के दूर हो जाने पर श्रमण निर्गथों की उन्नति होगी ।

ठीक २००५ वर्ष निर्वाण के व्यतीत होने पर लोकाशाह ने क्राति की और शुद्ध सयम उन्नति का प्रारभ किया। इस तरह अनजाने मे भी कल्प सूत्र मे स्थानकवासी धर्म प्रकट होने को अच्छा कहा गया है । उसके पूर्व भी कई साधु सयम निष्ठ होते किंतु महाग्रह के उत्कृष्ट प्रभाव के कारण वे अल्पसख्यक होते और दबे हुए रहते, सामने आकर सही विरोध नही कर पाते। इसलिये उस अवधि मे शुद्ध श्रमण निर्गथो का यश प्रभाव कम था। और २००० वर्ष बाद यश प्रभाव बढ़ा और साध्वाचार में क्राति आई। यह सब कल्पसूत्र के उस पाठ से स्पष्ट होता है।

१२. **जम्बू द्वीप मे कूट शाल्मलि वृक्ष कहा है?**

देवकुरु क्षेत्र मे कूट शाल्मलि वृक्ष पृथ्वीकाय का शास्वत है और उत्तरकुरु मे जम्बूसुदर्शन वृक्ष भी पृथ्वीकाय का है दोनों वृक्ष आठ योजन ऊचे है।

१३. **देवलोक में बादर अग्नि है?**

देवलोकों में बादर अग्नि नही है वह केवल ढाई द्वीप मे ही होती है ।ऐसा प्रज्ञापना सूत्र से स्पष्ट होता है।

१४. **देवलोको में पूजा धूप दीप की बात शास्त्र में आती है न?**

जब अग्नि ही नही है यह स्पष्ट सिद्धात है तो धूप जलाना आदि क्रिया ढाई द्वीप के अतिरिक्त कही सभव नही है। ऐसे पाठ शास्त्र में मूर्ति पूजकों के प्रक्षेपों के प्रभाव से आये हैं।

१५. **लवण शिखा में सूर्य चन्द्र है?**

लवण शिखा के पानी के अदर केवल तारा मडल है। सूर्यचन्द्र आदि नही है।

२६. पानी के जीव किस समुद्र मे ज्यादा है ?

अरुणवर समुद्र मे अप्काय के जीव ज्यादा है। तमस्काय पाचवे देवलोक तक गई है, वह सब पानी मय है। गहरी धूअर के समान है। यह असख्यातवा समुद्र है। भगवती सूत्र श ६ उ ५ मे वर्णन है। इसमे ९०० योजन ऊचाई के बाद ऊचा लोक मे त्रस जीव नही होते है।

२७. त्रस जीव किस समुद्र में अधिक है ?

स्वयभूरमण समुद्र मे त्रस जीव अधिक है।

२८. सिद्धायतन का क्या मतलब है और पर्वतो पर क्यो है ?

सिद्धो के स्थित रहने के स्थान को सिद्धायतन कहा जाता है वे निरजन निराकार सिद्ध शिला से उपर लोकाग्र मे स्थित है। पर्वतो और देवलोकों से सिद्धो के आयतन का कुछ भी सबध आगम चिंतन से समझ मे आने लायक नही है। क्यों कि सिद्ध का आयतन है तो किस सिद्ध का आयतन है, उसका नाम क्या है, वह सिद्ध कभी तो हुआ है, उसकी आदि होती है। किंतु शास्वत स्थान देवलोक पर्वत आदि अनादि से है। ऐसे अनादि स्थानो का सिद्धायतन मदिर मूर्ति से किंचित भी सबध आगम तत्व चिंतन से जुड नही सकता।

यह मध्यकाल के प्रक्षेप बुद्धि के प्रभाव से आये पाठ सभवित है। मूर्ति और मदिर भी किसी व्यक्ति विशेष के नाम से होती है और ऐसी व्यक्ति की वस्तु अनादि शास्वत स्थान पर कब कैसे हो सकती है अर्थात् नही हो सकती। अत अनादि शास्वत स्थान देवलोक पर्वत्त राजधानी आदि स्थानो पर मदिर मूर्ति सिद्धायतन की कल्पना असगत है। यह परपरा सशोधन करने योग्य है।

श्न- ९९. मेरु पर्वत का मालिक देव कौन है कहां निवास स्थान है ?

त्तर- मदर नाम का देव इस मेरु पर्वत का मालिक देव इस पर्वत पर रहता है इतना पाठ है । कहा रहता है वह खोजने पर भी मिल नही पाया । जितने भी शास्वत गोल पर्वत, गोपुच्छाकार ऊचे पर्वत है उनका मालिक देव उनके शिखर तल पर रहता है वही बीचो बीच उसका भवन होता है ऐसा वर्णन आगम में है किन्तु मेरु पर्वत के शिखर तल पर चूलिका है और उसके शिखरतलपर ही मालिक देव का निवास स्थान होना चाहिये । किंतु अफसोस यह है कि प्रक्षेप प्रवाह में इस चूलिका शिखर स्थल पर सिद्धायतन लाकर रख दिया गया और उस देव को अन्य स्थल पर लगाना रह गया । अत अब खोजने पर भी उस मालिक देव 'मदर' का स्थान मिलना मूल पाठ में अशक्य लगता हे । तर्क से चिंतन से समझना चाहे तो शास्वत स्थान पर सिद्धायतन का कोई मतलब सिद्ध नही होता है अत मेरु की चूलिका पर ही मालिक देव का भवन कहना चाहिये। सिद्धायतन तो प्रक्षेप के जमाने के प्रभाव से आये हैं ।

श्न- १००. मेरु पर्वत कितने है ? कहां है ? कितने ऊचे है ?

त्तर- पाच मेरु है । पाचो महाविदेह क्षेत्रों के बीच है । एक मेरु लाख योजन का है शेष चार ८५००० योजन के हैं । पाचो भूमि में हजार योजन ऊडे है अत बाहर १-१ हजार कम समझना ।

श्न-१०१. ८५ हजार के ऊंचे पर्वत और कही है ?

त्तर- नदीश्वर द्वीप में चार अजन पर्वत ८५००० योजन के है । रुचक द्वीप मे वलयाकार रुचक पर्वत भी ८५००० योजन ऊचा सर्वत्र है । दधिमुख पर्वत ६५ हजार योजन के नदीश्वर द्वीप मे है ।

१०२. ढाई द्वीप के बाहर सूर्य चंद्र विमान का आकार ईंट जैसा है ?

यह कथन समझ भ्रम से चलता है मूल मे स्पष्ट है कि बाहर के चद्र सूर्य का ताप क्षेत्र ईंट के आकार का है। देखें– जीवाभिगम सूत्र।

१०३. ढाई द्वीप के बाहर चंद्र सूर्य किस तरह है ?

जीवाभिगम सूत्र मे वर्णन है कि चद्र सूर्य का अतर ५० हजार योजन का है। चद्र-चद्र, सूर्य-सूर्य का अतर लाख योजन का है। किंतु जैसे ढाई द्वीप के अदर इनकी चार पक्ति है वैसे बाहर कितनी पक्ति है या किस तरह है यह नही बताया है। अन्य ग्रथो में परिमडलाकार अवस्थिति मुख्य रुप से बताई है और पीछे आठ पक्ति होने का मतातर दिया है।

विचारण करने पर आठ पक्ति की मान्यता उचित नही ठहरती है क्यो कि असख्यातवें द्वीप समुद्र मे असख्य योजन का अतर पक्ति मे हो जायेगा और सूर्य का प्रकाश सीमित सख्यात योजन ही सभव है पृथ्वीकाय मय रत्नो का। अत परिमडलाकार वाली मान्यता उचित प्रतीत होती है। प्रत्येक परिमडल का अतर एक लाख योजन कहा है वह भी उपयुक्त है। सूर्य चद्रों की सख्या द्वीप समुद्रो मे अधिक आयेगी। गणित हिसाब जो कहा गया है वह ढाई द्वीप तक ही समझना चाहिये। बाहर के लिये वह हिसाब नही चलेगा और मूल पाठ में बाहर के लिये वह हिसाब हो ऐसा कोई स्पष्ट सकेत भी नही है। जीवाभिगम सूत्र को ध्यान से देखने पर ज्ञात होगा।

१०४. चउमुठ्ठी लोच और पचमुठ्ठी लोच का क्या मतलब ?

ऋषभदेव भगवान ने चउमुठ्ठी लोच किया यह वर्णन जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र मे है। ज्ञाता सूत्र में मल्लिनाथ भगवान के और

आचाराग सूत्र मे भगवान महावीर स्वामी के पच मुष्ठि लोच का वर्णन है। अतगड सूत्र में आठ वर्ष के एवता से लेकर एक हजार वर्ष की उम्र वाली कृष्ण वासुदेव की पटराणियो के दीक्षा और पचमुष्ठि लोच का वर्णन है। ये बाल वृद्ध आदि पाच बार में समस्त बालो को उखाड़ देते हो ऐसा सभव नही होता है।

अत मस्तक के समस्त बालों की सज्ञा है पचमुष्ठि। इसे ही सूयगडाग सूत्र मे पचशिखा भी कहा है। चार दिशा की चार शिखा और बीच की एक शिखा यो कुल पाच मस्तक शिखा होने से और मस्तक का माप भी पाच मुट्ठी जितना होने से समस्त लोच को पचमुट्ठी लोच कहा गया है। ऋषभदेव भगवान के अतिरिक्त आगम मे सर्वत्र पचमुट्ठी लोच का ही कथन है।

ऋषभ देव भगवान के चउमुट्ठी लोच के जम्बू द्वीप प्रज्ञप्ति के कथन पर ऐसी श्रुति परपरा है कि शक्रेन्द्र के आग्रह से भगवान ने एक शिखा के बाल छोड़कर अर्थात् चोटी के बाल छोड़कर लोच किया।

[प्रश्न]- १०५. दीक्षा ग्रहण करे उसी दिन से आधाकर्म आदि अनेक संयम के दोष की प्रवृतिया चालू हो अनेक जिनाज्ञा का उल्लंघन चालू हो, ऐसे संयोग में उस मुनि को भाव संयम बकुश प्रतिसेवना नियठा आता है या नही ?

[उत्तर]- दीक्षा दिन से ही प्रवृति रुप मे ये दोष लगते हो तो उसे भाव सयम या साधु का गुणस्थान प्राप्त नही होता है। दोष वाले नियठे भी नही आते है क्यो कि वे नियठे भी प्रारभ से नही आते है। प्रारभ मे तो जिन्हे शुद्ध निर्दोष सयम आवेगा उन्हें ही

फिर कभी दोष वाले नियठे आ सकते हैं। यह भगवती सूत्र श. २५ उ ६-७ से स्पष्ट होता है।

१- ऐसे साधको की आराधना कैसे संभव हो सकती ?

ऐसे साधक अतर आत्मा मे सही समझ आने पर शक्य दोषो को छोडे, शक्य जिनाज्ञाओ को पालन करने का लक्ष्य रखे, सावधानी पूर्वक आत्म लक्ष्य रखकर जरूरी लगने वाले दोषो का खेद रखे, आलोचना प्रतिक्रमण कर सदा प्रायश्चित ग्रहण करे, अपनी लाचारी समझे और ऐसा मनोरथ रखे कि मेरी समस्त कमजोरिया और लाचारिया समाप्त होकर एक दिन शुद्ध सयम पालन दशा का अवसर मुझे प्राप्त हो एव अत मे सलेखना सथारा महाव्रतारोपण का लक्ष्य रखे, तो वही उक्त साधक आराधना प्राप्त कर सकता है।

६ ढाई द्वीप मे दरवाजे कितने है? उसमे खुले कितने, बद कितने?

दो द्वीप और दो समुद्र के चार चार दरवाजे होने से कुल १६ दरवाजे चारो दिशाओं मे है। धातकी खड के दो इक्षुकार पर्वतों ने चार दरवाजो को और पुष्करार्द्ध द्वीप के दो इक्षुकार पर्वतो ने दो दरवाजों को बद किया है यो कुल ६ बद है। शेष १० खुले है यथा- ४ जम्बू द्वीप के, २ लवण समुद्र के (पूर्व पश्चिम के), २ धातकी खड के, २ कालोदधि के।

०७. ईक्षुकार पर्वत की ल चौ. ऊ. क्या है?

क्षेत्र की चौड़ाई प्रमाण लम्बे होते हैं ५०० यो ऊचे और १००० यो के चौड़े होते हैं।

०८ ध्रुव तारा क्या कोई नक्षत्र या ग्रह का विमान है या तारा विमान?

जैनागम वर्णित सभी ग्रह तारा विमान निरतर परिक्रमा लगाते हुए भ्रमण करते हैं। आगम में किसी भी ज्योतिषी विमान को स्थिर नही बताया है। दिखने वाला ध्रुव तारा सदा एक ही जगह स्थिर दिखता है इसलिये इसका लोकिक प्रचलित नाम स्थिर और तारा सरीखा होने से ध्रुव तारा प्रसिद्ध है। वास्तव मे आगमानुसार यह कोई भी ज्योतिषी विमान नही है। ढाई द्वीप मे सभी ज्योतिषी चल होते हैं। अत दिखने वाला ध्रुव तारा पृथ्वी पर स्थिर किसी वस्तु का प्रतीक है वह है जम्बूद्वीप का मध्य मेरुपर्वत और उसकी चूलिका। जो हमारे से ठीक उत्तर मे है और ध्रुव तारा भी ठीक उसी दिशा मे सदा एक ही स्थल पर दिखता है। प्रकाश मान दूरस्थ विमान भी तारे सरीखे दिखते है। मेरु चूलिका अति दूरस्थ होने से तारा सरीखी दिख सकती है। ज्योतिषी विमान तो हमारे से ८००/९०० योजन ऊचे दूर है जब कि मेरु की चूलिका ९९००० यो ऊची और हमारे से ५०००० योजन दूर उत्तर में है।

मेरु पर्वत की चूलिका जो वेडूर्य मणिमय है उसके अतिरिक्त ध्रुवतारा और कुछ भी नही हो सकता।

अत लोकिक प्रसिद्ध ध्रुवतारा को तारा नही, कितु मेरु पर्वत की चूलिका है, ऐसा समझना चाहिये।

श्रद्धा पत्र विभाग

पाठकों के श्रद्धा पत्र

(साधु-साध्वियां)

आगम मनीषी पूज्य श्री त्रिलोक मुनि जी ए जे जैनागम नवनीत १ थी ८ भाग बहार पाड्या छे ए म्हारा जीवन नु खाश आधार बणी रहेल छे. पूरो सेट हू सदा साथे ज राखी ज्यारे पण समय मले एनो वाचन करतो ज रहुँ छूॅ। ए पुस्तको मा आगम ना भावो ने सरल अने सक्षिप्त रूपे रजुआत करवा मा जे आवी छे ते बाल युवान वृद्ध दरेक सहज समझी सके। ध्यान राखीने ए पुस्तको ना वाचन करवा थी केटलाक साधु-साध्वी जी ओ ना अने श्रावको ना जीवन ज बदलाई जाय एमां कई पण शका ने स्थान नथी।

—विराग मुनि

अपनी बात

एक समय था जब मेरे मन मे आगम साराश का मनोरथ था जिसे आगम मनीषी मुनिराज श्री ने अल्प समय मे पूर्ण साकार कर दिया। जिसका प्रथम संस्करण ३२ आगमो की ३२ पस्तके बनी। दूसरा सस्करण आठ पुस्तको के रूप में जैनागम नवनीत के सार्थक नाम से समाज को प्राप्त हुआ।

तीसरा संस्करण गुजराती अनुवाद बन रहा है जो "मीठी मीठी लागे छे महावीर नी देसना" के नाम से प्रकाशित हो रहा है। एक खड प्रकाशित हो चुका है आगे तैयारी है आठ खड बनेगे। यह अनुवाद कार्य लीम्बडी अजरामर सघ के पूज्य श्री प्रकाशचन्द्र जी म सा के प्रमुख सपादन मे अनेक मुमुक्षु आत्माओ के श्रम सहयोग से तैयार किया जा रहा है।

जैनागम नवनीत के आगम साराश के १८०० से अधिक सेट वितरण से अध्ययन से बाहर से अनेक श्रद्धा पत्र स्वत ही बिना प्रेरणा के प्राप्त हुए है और अनेक स्वाध्यायियो की जिज्ञासाए भी पत्रो द्वारा आती रही है। उनका समाधान यथा समय दे दिया जाता रहा है।

बाह्य और आतर प्रेरणा पाकर श्रद्धा पत्रो का एव प्रश्नोतरो का सकलन स्वाध्यायियो तक पहुचाने के सकल्प से यह उपहार पाठको की सेवा मे प्रस्तुत है। आशा है जैन स्वाध्याय प्रिय मुमुक्षुओ को पुन. अन्य प्रकार से जैनागम नवनीत पाकर परम आनद होगा।

भवदीय

विमलकुमार नवलखा

१. जैनागम नवनीत का अभिनन्दन

खड एक से लेकर के, आठो ही हमने पाया है ।
जैनागम नवनीत देख कर, मन न मोद समाया है ॥१ ॥

पंडित रत्न तिलोक मुनिवर, इसके लेखक भारे हैं ।
जैन जगत के तेज सितारे, जिनको कहते सारे है ॥२ ॥

उनकी कलम कला की जितनी, करो प्रशसा थोड़ी है ।
इनको श्रेष्ठ बनाने मे कुछ, कसर न इनने छोडी है ॥३ ॥

जिन्हे देख कर जिन्हे श्रवण कर, कमल हृदय के खिलते है ।
जैनागम विद्वान गहनतर, उनसे कम ही मिलते है ॥४ ॥

हमें हर्ष है स्थानकवासी जैन जगत मे इनको देख ।
कहने मे सकोच नही कुछ अपनी उपमा है वे एक ॥५ ॥

गीदडवाहा मडी मे जो, पजाबी मुनि चन्दन है ।
उनका इनके इन ग्रथो का, शत शत शत अभिनन्दन है ॥६ ॥

आसुकवि पंजाबी चन्दनमुनि

संपूर्ण जैनागम नवनीत आठों खंड पढ़ने के बाद—

२. साध्वी द्वय के भाव

जैन साधना केंद्र, भून्तर
जिला-कुल्लू (हि प्र)

अत्यत मेहनत एव बहुमूल्य समय लगाकर आप श्री ने जैन शासन एवं नई पीढ़ी तथा नवागतुक सत-साध्वियो पर जो उपकार किया है उसकी दूसरी मिसाल मिलना मुश्किल है।

अत्र विराजित परम विदुषी साध्वी श्री स्नेह प्रभा जी म सा एव साधनाशील पूज्य श्री नूतन प्रभा जी म सा ने समस्त खण्डो का गम्भीरता पूर्वक अध्ययन किया है। आप श्री जी की गहन विषय को सरल बनाकर समझाने की शैली एव सत्य बात को स्पष्टता के साथ तथ्यो की गहराई तक पहुच कर पाठको को वस्तु स्थिति से अवगत कराने की तडप ने साध्वी द्वय को न केवल प्रभावित वरन् मुग्ध किया है।

सच्चे अर्थ में आप श्री को **जैन जगत का उपाध्याय** कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी।

साध्वी द्वय की आज्ञा से
बलवीर चन्द जैन

३. आचार्य सम्राट श्री आनन्द ऋषि जी म.सा. (अहमदनगर)

आपके द्वारा भेजी हुई पुस्तके प्राप्त हुई एतदर्थ धन्यवाद ।

मुनि श्री जी का प्रयास स्तुत्य है। ये पुस्तके काफी उपयोगी सिद्ध हो रही है ।

आचार्य श्री की आज्ञा से

जवाहर नाहर

४. आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.सा. (मारवाड़ सादड़ी)

आपने सामान्य पाठको के लिये बहुत ही सुन्दर प्रयास किया है ।

विषय के अनुरूप यदि भाषा मे प्रवाह होता तो सोने मे सुगध हो जाती ।

५. तेरापंथ संघ के आचार्य श्री तुलसी (दिल्ली)

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री ने फरमाया— स्वाध्याय करने वाले लोगो के लिये आपका प्रयास लाभदायक है। आगमिक सत्यो को आज के परिप्रेक्ष्य मे प्रस्तुत करना बहुत जरूरी है ।

आचार्य श्री की आज्ञा से

तरूण बेनाज्जी

२६-१०-९४

६. श्रमण संघीय उपाध्याय श्री विशालमुनि जी म.सा. (औरंगाबाद)

आगम मनीषी पूज्य श्री तिलोकमुनि जी म.सा. आगम साहित्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान सत है आपका जीवन आगम सरस्वती की उपासना मे समर्पित हुआ है ।

आपने सम्पूर्ण जैनागम साहित्य को जनता की भाषा मे जनता तक पहुचा कर नये इतिहास का मार्ग प्रशस्त किया है । आगम सारांश ३२ पुष्पो के माध्यम से एवं जैनागम नवनीत के माध्यम से पूज्य मुनि प्रवर तिलोक मुनि जी ने स्वाध्याय प्रेमी जनो को जो उपलब्धिया प्रस्तुत की है यह सदैव सदैव अविस्मरणीय उपकार रहेगा । हजारो लाखो व्यक्ति आगम ज्ञान के अमृत से अपने आपको आप्लावित कर सकेंगे ।

हम पूज्य मुनि प्रवर तिलोकमुनि जी को हार्दिक बधाइया देते है । यह आपकी सेवा पाकर हमे हार्दिक प्रसन्नता हुई ।

अपार खुशी हुई । इन ग्रन्थो की सत मुनिराजो को सहज आवश्यकता रहती है । ये ग्रन्थ लघु मुनिराजो के लिये तो पके पकाये अमृत फल के समान है ।

आपने बडी उदारता से यह आगम साहित्य का अमृत रस दिल खोल कर बाटा है । हम आपके सुंदर भविष्य की हार्दिक मगल कामनाएं सद्भावनाए प्रदान करते है ।

तपस्वी रत्न श्री सुमति प्रकाश जी म.सा. ने आपको धर्म सदेश फरमाया है ।

दिनाक २०-१०-१९९४

७. आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. (जोधपुर)

लेखक- भडारी सरदारचन्द जी

श्रद्धेय पर श्री तिलोकमुनि जी मसा ने बहुत अधिक कठिन परिश्रम करके पुस्तके लिखी इसके लिये जैन समाज सदैव ऋणी रहेगा। हमारी ओर से शत शत साधुवाद।

पुस्तके बहुत ही उपयोगी है काम मे आती रहती है। आपका परिश्रम सफल हुआ।

८. आचार्य (मूर्ति पूजक) पद्म सागर जी म.सा. (दिल्ली)

पुस्तके मिली। तदर्थ धन्यवाद। जैन दर्शन के परिचय के लिये पुस्तके उपयोगी है। संपादन कार्य सुंदर है। दिनाक २१-१०-९४

९. उपाध्याय कवि श्री अमर मुनि जी म.सा. (वीरायतन)

आपने अलग अलग शास्त्रो का सार सकलन किया है उसका खूब प्रचार प्रसार हो, लोगो मे स्वाध्याय के प्रति जागृति आवे, यह उपक्रम अच्छा है। प्रेषक- **साध्वी सुमति** दि. ११-९-९०

१०. बंधु त्रिपुटी –मूर्ति पूजक संत (शांति निकेतन-तीथल)

आप जो शास्त्र सेवा कर रहे है उसकी अत करण से अनुमोदना करते हैं।

आगम साराश ग्रथमाला के हम सदस्य बने है और समय समय पर ग्रथ मिल रहे हैं, धन्यवाद।

सौजन्यादि गुण गण विभूषित सरल स्वभावी विद्वद्वर्य मुनिराज श्री तिलोक मुनि जी की सेवा मे बधु त्रिपुटी की सादर वदना।

११. उपाध्याय श्री कन्हैयालाल जी म.सा. 'कमल' (पीह)

आगमो की सक्षिप्त साराश की पुस्तके लोकप्रिय हुई है। जिसने भी पढ़ी हैं उसी ने सराही है। साधारण लोगो मे श्रुत की प्रभावना करना परम कर्त्तव्य है। एक हजार प्रतियां तो कम से कम होनी ही चाहिये। अब तक प्रकाशित आगमो की एक-एक प्रति मेरे उपयोग के लिये भेजने का लक्ष्य रखेगे। महावीर कल्याण केन्द्र मदनगज मे सुरक्षित स्थान है। स्टोक वहा रखा जा सकता है एव जब चाहे मंगवा सकेगे। दि ७-८-९०

(यथा समय १२५ पूर्ण सेट की दलाली अर्थ सहयोग कर फ्री वितरण करवाये)

१२. राष्ट्र संत श्री गणेश मुनि जी शास्त्री (दिल्ली-उदयपुर)

नव ज्ञान गच्छ के प्रमुख आगम मनीषी प रत्न श्री तिलोक मुनि जी म.सा महान सेवा का लाभ ले रहे है। आगम के महान ज्ञाता व कलम कलाधर मुनि श्री का आगम नवनीत माला प्रकाशन का प्रयास अपने आप मे अपूर्व देन है। जिसका सघ समाज सदियो तक मार्ग दर्शन प्राप्त करेगा। विद्वान मुनि श्री ने आगम रत्नाकर का मन्थन कर साराश रूप मे अनमोल शिक्षा रत्नो का सचय किया है। जो वस्तुत. नवनीत की भाति तुष्टी-पुष्टी का निमित्त बनेगा। यह प्रयास अत्यंत उपयोगी, कल्याणकारी हितकारी सिद्ध होगा, ऐसा विश्वास है।

आगम मनीषी श्रद्धेय मुनि श्री के हम सभी बहुत आभारी है। जिन्होने श्रम कर जैनागम नवनीत तैयार कर अनुपम कार्य किया है। अनंत उपकारी प्रभू महावीर के चिंतन को आप श्री ने सहज युगानुकूल शैली मे प्रस्तुत कर महत्वपूर्ण आदर्श उपस्थित किया है। इन कृतियो से जिन सिद्धातो का विशेष प्रचार प्रसार हो सकेगा ऐसा विश्वास है।

हमारी ओर से शत-शत वंदन। साथ ही साधुवाद। (तीन पत्राश)

३. श्रमण संघीय उपदेशाचार्य श्री राजेन्द्र मुनि जी म.सा. (दौड) १९-९-९०

आपने आगमो का अर्थ सरल हिन्दी भाषा मे किया है। सत निराज आदि के लिये पठनीय मननीय है। मुनि श्री ने जो परिश्रम र्वक लेखन किया है यह अत्यत ही सराहनीय है।

४. पं. रत्न श्री नरेश मुनि जी म.सा. (सादडी- सुमेरपुर)

आप ३२ सूत्रो का साराश लिखने का बहुत ही सुन्दर सराहनीय एव भगीरथ सफल सम्यग् प्रयास कर रहे है। यह समाज एव सघ की बहुत बड़ी सेवा होगी। समय की पुकार थी उसको आपने सुनी और कार्य रूप मे परिणत कर रहे है। आप लिखे कि आपके इस महान यज्ञ मे मेरा किस प्रकार का सहयोग काम आ सकता है। दि. २६-४-९०

१५. प्रवर्तक श्री कुन्दन ऋषि जी म.सा. (जोधपुर) २९-९-९५

आपकी कुछ पुस्तके छुटी छुटी आई, आपका परिश्रम स्तुत्य है। आपके योग्यता के बारे मे बहुत सुना है, प्रत्यक्ष दर्शन नही हुए है।

१६. पं. मुनिश्री विमल मुनिजी वीरेन्द्र मुनिजी (रेडहिल्स मद्रास)

मुनि श्री ने काफी महेनत करके शास्त्रो का अनुवाद कर सरल हिन्दी भाषा मे बनाया जिससे हर कोई लाभ ले सके। इसके लिये मुनि श्री बधाई के पात्र है। दि. २७-१०-९४

१७. श्रमण संघीय उप-प्रवर्तक श्री मेघराज जी म.सा. (रतलाम)

जैनागम नवनीत खण्ड ५ देखा, बहुत सार मय लगा। अन्य

पुस्तके भी भेज देगे तो साधु संतो के लिये उपयोगी रहेगी।

श्री हस्तीमल जी म.सा. ९-३-९५

१८. तपस्वी श्री मोहन मुनि जी म.सा. प्रवर्तक श्री रमेश मुनि जी म.सा. (इन्दौर)

आपके द्वारा भेजी पुस्तके मिली। मुनि प्रवर का श्रम श्लाघनीय है। ८-१-९४

१९. प. रत्न प्रखर वक्ता श्री रवीन्द्र मुनि जी शास्त्री (लुधियाना)

आप द्वारा प्रेषित जैनागम नवनीत खण्ड प्राप्त हुए। एतदर्थ साधुवाद धन्यवाद। आप इस प्रकार आगमो का सार प्रदान कर ज्ञान वृद्धि मे सहायक बन रहे है। इसी प्रकार जिन शासन की सेवा करते रहे यही शुभ भावनाओ के साथ। १०-१०-९४

२०. श्र.सं. महामंत्री मुनि श्री सौभाग्यचन्द्र जी म.सा. 'कुमुद' (लावा सरदार गढ)

संवत्सरी विचारणा सवाद पुस्तिका प्राप्त हुई। प्रस्तुत सवाद से विषय विस्तार के साथ स्पष्ट हुआ है तथा अनेक दृष्टि से विवेचन हो सका है। संवत्सरी के विषय मे जिस तरह धारणाए आम जनता में फैली हुई है, उसको इस सवाद से यथार्थवादी दृष्टिकोण प्राप्त होगा। आपने सुदर और सराहनीय प्रयास किया है। ऐसा महामंत्री मुनि श्री का मतव्य है।

२१. पं. रत्न श्री गौतम मुनि जी 'प्रथम' (उज्जैन-इन्दौर)

आपकी आगम सेवा साधु समाज को मार्ग दर्शन देगी। समाज

सदा आपके उपकार से उपकृत रहेगा।

आपने जो शासन की सेवा की है वह सदा प्रशसनीय एव अनुकरणीय है। आपका नवनीत रूप साहित्य युगो युगो तक मार्ग दर्शक बनेगा। समाज सदा आपका ऋणी रहेगा। आप जैसे आगम मर्मज्ञ मुनि प्रवर को पाकर सघ धन्य हो गया। आप श्री के द्वारा लिखित– 'मूर्तिपूजा एव मुखवस्त्रिका निर्णय' नामक पुस्तिका बहुत उपयोगी एव सघ रक्षक महसूस हुई।

२२. पं. रत्न श्री हीरामुनि जी म.सा. (ढोल)

ऐतिहासिक परिशिष्ट खण्ड पहला मिला। पढकर बड़ी प्रसन्नता हुई। आगम मनीषी मुनि श्री ने आगमो के साथ ऐतिहासिक मक्खन भी जनता के लिये प्रसारित किया है। आप श्री के द्वारा प्रकाशित आगम नवनीत की पुस्तके भी बहुत आदरणीय है।

२३. मधुर व्याख्यानी श्री रामचन्द्र जी म.सा. (बडगांव मावल)

आपके द्वारा भेजी गई पुस्तके प्राप्त हुई। 'सूयगडाग सूत्र का साराश एव एकल विहार चर्या' पुस्तक पढकर के बहुत खुशी हुई है। प्रमाण आगम टीका चूर्णी के आधार पर बहुत ही अच्छे दिये है।

जबकि कई सत सतीजी एकल विहार करने की भगवान की आज्ञा नही है ऐसी प्ररूपणा करते है किन्तु आपने बहुत से आगम प्रमाण देकर के समझाया। जिससे एकल विहार के बारे मे श्रावक लोगो का और सत सतियो का भ्रम दूर हो जाता है। १९-७-९०

२४. पं. रत्न श्री अजित मुनि जी म.सा. (इन्दौर) ११-१०-९४

आप द्वारा प्रेषित जैनागम नवनीत खण्ड मिले । आगम ज्ञान के जिज्ञासुओ के लिये वास्तव मे जैनागम नवनीत का प्रयास सुदर है ।

२५. संत शिरोमणी पूज्य श्री नेमचन्द जी म.सा.
(कालका-अम्बाला)

आपकी भेजी ऐतिहासिक परिशिष्ट खड १ पुस्तक मिली । जो बहुत ही सुदर है और शंका समाधान के लिये उपयोगी पुस्तक है । ३२ आगमो का दो सेट हमारे लिये (१) पभात (२) कालका, अवश्य भिजवावे ।

२६. उपप्रवर्तक श्री रामकुमार जी म.सा. (नालागढ)

जैनागम नवनीत खड मिले एतदर्थ धन्यवाद । आप लोगो ने एक स्तुत्य प्रयास किया जो कि सभी ३२ आगमो को सक्षिप्त सार रूप और वह भी सरल हिन्दी भाषा मे प्रकाशित करके इच्छुक प्रत्येक श्रावक संघ को भेजने के प्रयास रत है ।

जैनागम नवनीत के प्रणेता आगम मनीषी पडित रत्न स्नेही साथी श्री तिलोक मुनि जी मसा को बहुत बहुत बधाई देवे । बहुत बहुत साधुवाद । तथा उनके सयमी जीवन की मगल कामना । हम और भी ऐसे साहित्य सृजन की उनसे आशा करते है ।

आने वाले समय मे आगम मनीषी मुनिराज श्री का यह साहित्य अत्यधिक उपयोगी होगा ।

लेखक- मुनि सतीश कुमार जी

२७. आगम प्रेमी विद्वान श्रमण श्री ज्ञान मुनि जी म.सा. (लुधियाना-पंजाब)

आपने आगम सेवा के महापथ पर जो चरण चिह्न स्थापित किये है वे सचमुच सराहनीय एव अभिनदनीय है। किन शब्दो में मै आपका धन्यवाद करू समझ नही पा रहा हू। फिर से आपका मन के औदार्य के साथ धन्यवाद। दि. २५-९-९३

आपका यह प्रयास जैनागमो की ऐसी सेवा है जो सदा स्मरण रहेगी। आगमो के साराश बडी सुंदर और प्यारी भाषा मे लिखे गये है लेखक मुनिवर को धन्यवाद। दि. २६-११-९३

आपकी इस आगम सेवा के लिये हृदय के कण कण से धन्यवाद। आपका बुद्ध शुद्ध प्रयास अभिनदनीय एव अभिनदनीय है। दि. २६-९-९५

सचमुच शास्त्रो का नवनीत ही निकाला गया है। आगम मनीषी श्री तिलोक मुनि जी का हार्दिक धन्यवाद। दि. २७-१०-९४

मूर्तिपूजा जैनागम विपरीत नामक पुस्तिका प्राप्त हुई। पढकर मन को अपार हर्ष हुआ। यह ठीक है कि आजकल खण्डन का युग नही है परन्तु जो व्यक्ति स्थानकवासी मान्यता की खण्डना (भर्त्सना) करे उसका खण्डन तो होना ही चाहिये।

अपनी मान्यता का प्रसार करना जन-जन तक उसे पहुंचाना हमारा कर्त्तव्य बनता है। आप इस दिशा मे पूर्णतया जागरूक हैं एतदर्थ धन्यवाद। दि. ९-१०-९५ मण्डी गोविंदगढ़

२८. तपस्वी रत्न श्री मगन मुनि जी एवं

पं.र. श्री नेमिचन्द्र जी म.सा. (अहमदनगर) २९-११-९३

पुस्तके मिली बहुत बहुत धन्यवाद। पुस्तको की छपाई साफ सुथरी सुवाच्य एवं शास्त्रो से सबंधित मूलार्थ तथा आधुनिक परिप्रेक्ष्य मे उठने वाले प्रश्नो का सटीक सशक्त समर्थ समाधान भी सुंदर ढग से दिया गया है। लेखक - **वसंतलाल पूनमचन्द भंडारी**

२९. श्रमण संघीय उपप्रवर्तक श्री प्रेम मुनि जी म.सा.

(गांव बडौदा-हरियाणा)

३२ सूत्रो का साराश रूप ३२ सूत्रो का लेखन कार्य आपने अति परिश्रम से किया है जो अति प्रशसा के योग्य है।

श्रावक के १२ व्रतो की १४ नियमो की पुस्तके पढ़ी, बडी अच्छी लगी। प्रत्येक विषय का प्रतिपादन बहुत सुंदर ढग से तथा स्व अनुभव से लिखा है। भावना तो यही रहती है कि आपके सभी सूत्रो को यथा शक्ति पढ लू। अभी थोडे रूप मे पढे है।

मेरा यह भी आत्म विश्वास है कि आपके इन सूत्र साराशों को समस्त साधु साध्वी पसद करेगे। कारण यह कि ये शीघ्र समझ मे आ जाते है। दि १२-१०-९५

३०. दक्षिण दीप श्री धर्मेश मुनि जी म.सा. (देशनोक)

पुस्तक आगम सार की मिली। आज के साधारण से साधारण व्यक्ति के भी उपयोग की पुस्तक है। युग की आवश्यकता की पूर्ति उससे होगी ऐसी आशा है। २९-८-९०—सुमन डोसी

३१. अजरामर लीम्बडी स्था. छः कोटी समुदाय के गादीपति श्री नरसिंह जी मुनि जी म.सा. (लाकडिया-कच्छ)

पुस्तको मल्या। सिद्धात नु दोहन करी सक्षेप मा सुदर अवलोकन कर्यू छे। साधु-साध्विजीओ माटे अति उपयोगी पुस्तिकाओ छे। मोकलवा बदल धन्यवाद। २४-१०-९१

३२. हालारी सम्प्रदाय के प्रमुख एवं आगम आग्रही संत श्री केशव जी मुनि जी म.सा. (जामनगर) २५-११-९४

जैनागम नवनीत आठ खण्ड अमो ने मली गयेल छे। तेनु वाचन चालू छे। स्पष्टीकरण युक्त खूबज खुलाशावार लेखन छे।

ते लेखन मा आचार प्रियता, निडरता, निस्पक्षता, असप्रदायिकता आदि विशेषता छे। जे वाचता मात्र एक जैन आगमनु सारांश ख्याल आवी शके छे। **–हसमुख जैन**

३३. बोटाद संप्रदाय के श्री अमीचन्द जी म.सा. (करजण)

पुस्तको मल्या। आपनी जैनागम नवनीत नी शुभ प्रवृति ने अनुमोदी प्रशसा करवानु मन थइ जाय छे। आपे खरे खर आगम अमृत मोकल्यु छे।

मुनि श्री त्रिलोकचन्द्र जी ना पुरुषार्थ नी प्रशंसा कर्या बिना रहेवातु नथी।

पचम काल मा शास्त्र रुचि घणी ओछी होवा छता घणा जिज्ञासु मुमुक्षु पण छे ते लाभ उठावसे। धन्यवाद। १७-१०-९४

–श्री नानचन्द्र-प्रमुख -मनहरलाल

३४. श्रुतप्रेमी विद्वान संत श्री भास्कर मुनि जी म.सा.

(गुदाला-कच्छ) १४-१०-९

आप आगम श्रुत की अच्छी सेवा करते है एतदर्थ धन्यवाद ।

पूज्य श्री तिलोक मुनि जी ने अपने आगम ज्ञान का चतुर्विध स को अपूर्व लाभ दिया है अतः साधुवाद ।

आज के युग मे जहा देखो वहा समय का अभाव है। छोट जिंदगानी मे आगम रत्नाकर मे डुबकी लगाकर रत्नो पाना मुश्किल है । ऐसे समय मे सूत्र बत्तीसी का सक्षेपीकरण की योजना अति अति समादरणीय, नीतात आवश्यक है एव स्वाध्यायशील साधु साध्वी श्रावक श्राविका के लिये अति हितकर है ।

पूज्य मुनिराज श्री का पुरुषार्ष उत्तमोत्तम है । जिन शासन पर महत् उपकार सदा बना रहेगा । पूज्य मुनिराज श्री को एव प्रकाशन समिति के सभी कर्णधारो को- ऐसी योजना बनाने के स्वप्न द्रष्टाओ को हम हार्दिक अभिनदन समर्पित करते है ।

गुजराती भाषा मे इन बत्तीसी का अनुवाद यथाशीघ्र प्रारभ करना परम आवश्यक है । अगर गुजराती भाषा मे अनुवाद की योजना बनाई जाय तो वृहत् लीम्बडी सम्प्रदाय के कच्छ और सौराष्ट्र गुजरात के चातुर्मासिक बडे बडे क्षेत्रो के ज्ञान भडारो के लिये आवश्यक है ताकि उन क्षेत्रो मे विचरते हुए पूज्य सत सतीजीओ एव स्वाध्याय प्रेमी सुश्रावको के लिये बहुत लाभप्रद सिद्ध होगे ।

आप आगम श्रुत की अनुपम सेवा कर रहे है एतदर्थ पुन धन्यवाद ।

भावेश कुमार देढिया २-१-९२

(२५ सेट जैनागम नवनीत के मगाये)

३५. वाणी भूषण श्री गिरीश मुनि जी म.सा. (गांधीनगर)

आपने जैनागम नवनीत भेजे थे बहुत ही सुंदर है। आगम सार नवनीत बनाकर आपने जिनवाणी का एसेन्स जनता के सामने तैयार कर रख दिया है।

उपकार कृत पुरुषार्थ बदल कोटी कोटी धन्यवाद। ४-९-९४

३६. महासती जी श्री रूक्ष्मणी बाई म.सा. (गांधीनगर)

हाल मा आपना छेद सूत्र नी पुस्तिकाओ थी बने टाइम वाचणी चाले छे खूब ज आनद आवे छे। आपना दर्शन सत्सग नो कया लाभ मलसे। **साध्वी पद्मिनी कुमारी ना भाव वंदन**। १९-१-९२

३७. संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुला श्री जी म.सा. (दिल्ली-पश्चिम विहार)

हिन्दी साराश बहुत ही अच्छे लगे। आगम नवनीत प्रकाशन समिति का लक्ष्य है ३२ पुष्प यानी सभी सूत्रो का हिन्दी साराश प्रकाशित करना। यह आपका बडा उपयोगी चिंतन है। जो लोग अर्धमागधी आगमो की भाषा नही समझते उनके लिये आगम का हार्द पकडने का आपने एक रास्ता खोल दिया। आपके सभी प्रकाशन कृपया हमे भिजवाये। **ले. रमेश जैन** २१-९-९८

३८. साध्वी संयम प्रभा जी म.सा. (जयमल सम्प्रदाय, दिल्ली)

आप द्वारा लिखित जैनागम नवनीत सूत्र पढे। हर शका का समाधान अत्यंत सुदर सटीक मिला। वास्तव मे आज ऐसे ज्ञान की आवश्यकता है।

३९. साध्वी श्री ज्ञानवती जी म.सा. (बडी सादडी)

आगमो की पुस्तके मिली पढ़ी, बहुत अच्छी लगी साधुवाद ।

आगम के ये संस्करण सचमुच बहुत ही उपयोगी है । जैनागमो का साराश गागर मे सागर वाली कहावत चरितार्थ करता है ।

डा. सुशीला जी महासती २९-१०-९४

४०. संयम मूर्ति आचार्य श्री जगच्चन्द्र सूरीश्वर जी म.सा. (मद्रास) ६-११-९०

सारांश की अनेक पुस्तके मिली । सक्षेप मे बोध हो जाय इस तरह अच्छा प्रकाशन हुआ है सपूर्ण सेट भेजने का कष्ट करेगे ।

४१. आचार्य श्री विजय वारिषेण सूरीजी म.सा. (हिंगोली-महाराष्ट्र)

आपका प्रयत्न सराहनीय है । सभी प्रकाशन की एक एक प्रति अवश्य भेजते रहना वी.पी.पी. से । बाल जीवो लघु साधको के ज्ञान वास्ते अनुवाद अच्छा हुआ है । दि. २५-९-९०

४२. दिगम्बर क्षुल्लक चित्तसागर जी (M A L L B) (गांधीनगर) २५-९-९३

ऐतिहासिक परिशिष्ट खण्ड १ पुष्प २१ पुस्तक मिली आचार्य श्री वासुदेव जी म.सा को दी । पुस्तक पढ़ने पर आपके सभी प्रकाशन का स्वाध्याय करने का भाव हुआ है । पूरा आगमो का सेट भेजने की व्यवस्था करवाकर ज्ञानदान का सातिशय पुण्य उपार्जन कीजियेगा ।

४३. शांत मना स्वाध्याय प्रेमी मुनि श्री जशकरण जी स्वामी (तेरापंथ संघ) (बोरावड) २०-१२-९३

मुनि श्री तिलोक चन्द जी म.सा. ने बहुत मेहनत कर सूत्रो को छोटे

छोटे पुष्प रूप मे जैन समाज के सामने रखा। जैन धर्म के उपर बहुत बडा उपकार किया। सारा जैन समाज आपके उपकार का चिर ऋणी रहेगा। सरल सुबोध हिन्दी भाषा के ३२ आगम प्राप्त हो गये हैं। हमारे जैसे नासमझ लोगो को जिज्ञासा होने पर समाधान हेतु ये सुगम पुष्प उपलब्ध होने से बडी सुविधा-सहायता मिलती है। आगम मनीषी तिलोकमुनि जी ने अनुकरणीय आगम मन्थन किया है तथा ऐसा साहित्य प्रकाशित करके बहुत बडा उल्लेखनीय कार्य किया है।

लिखी- सुश्री अनिता छाजेड, बोरावड।

पाठकों के श्रद्धा पत्र

(श्रावक-श्राविका)

१. **सुश्रावक ई. जितेन्द्र कोठारी** *(अधिशाषी अभियता सिंचाई)* **(देवली-टोंक)**

आगमो पर श्री तिलोक मुनि जी द्वारा रचित साराश बहुत ही उपयोगी है। इससे समाज मे सभी को आगम ग्रथो को समझने का बहुत ही सुनहरा अवसर आया है। दि. २३-२-९३

दि. ५-११-९४ आगम मनीषी श्री तिलोक मुनि जी म.सा. का उपकार जैन समाज कभी भी नही भुला सकता बल्कि समय पर आपके उपकार, आपके त्याग और आप द्वारा रचित आगम साराश लेखन के बारे मे प्रशसा करना सूर्य के सामने दीपक दिखाना है। ये आगम साराश जैन समाज के लिये "अमूल्य निधि" है।

आगम साराश की लेखनी इतनी सरल रोचक व सुदर है कि कोई भी थोडा पढा लिखा श्रावक या श्राविका बहुत ही अच्छी तरह से पढ

सकते है और उनका अर्थ भी समझ सकते हैं।

एक बार कोई भी पुष्प हाथ मे ले ले तो जब तक उसको समाप्त नही कर देते, उस पुष्प को छोडा नही जाता।

मै कभी स्वप्न मे सोचा करता था कि अपने शास्त्रो का कभी हिन्दी अनुवाद साराश मे हो सकेगा क्या ?

वास्तव में आगम मनीषी मुनिराज श्री ने उसे कर दिखाया– उनको मै धन्यवाद और आभार कैसे प्रकट करू, लेखनी भी कुंठित हो जाती है। फिर भी मुनि श्री के चरणो मे मेरी हार्दिक बधाइया, हार्दिक अभिनन्दन, भाव वदन नमन।

वास्तव मे आगम मनीषी मुनिराज श्री महान है, महानतम है जो उन्होने मुद्रण कार्य मे लगे दोषो का आचार्य प्रवर के पास आलोचना युक्त प्रायश्चित ग्रहण कर लिया है जिसे अतिम पुस्तक मे प्रचारित भी कर दिया है।

धन्य धन्य है श्री तिलोकचन्द जी म सा आप वास्तव मे धन्य है।

(अनेकों सेट मंगाकर फ्री वितरण किये)

२. सुश्रावक श्री प्रेमसुख सुवालाल छाजेड (पूना)

आपने जो ३२ आगमो का साराश रूप मे हिंदी अनुवाद किया। यह तो जैनो के ही लिये नही, सब धर्म के लोगो के लिये बहुत बडी देन है। उसका अध्ययन एक बार ही नही अनेक बार करने योग्य है।

कुछ वक्त श्रावक आते है तो इन्हे देखकर पढ़ने को लेके जाते हैं। इतना सरल और समझने सरखे हिन्दी भाषा मे आगमो की लिखने

की कला तो बहुत ही दुर्लभ है।

इतने दिन तो ऐसा लगता था कि जैन आगम दुर्बोध है, समझना बहोत ही मुश्किल है। मगर आपके लिखे ३२ आगम पुष्प पढ कर किसी को भी ऐसा महसूस होगा कि समझाने की कला हो तो कठिन कुछ भी नही है।

आपकी शुभ प्रेरणा से बच्चो और बहुओ को भी आगम पढने की अध्ययन करने की प्रेरणा मिली यह सबसे बड़ी खुशी की बात है।

३. सुश्रावक श्री अक्षयकुमार जी सामसुखा, जोधपुर (बम्बई)

पूज्य श्री तिलोक मुनि जी म.सा लिखित आगम साराश पुस्तके पूरी तो नही मनन कर पाया लेकिन भाग १६ तक पढने का अवसर मिला है। इस बारे मे जितना भी गुणानुवाद करू, बहुत कम है। इस तरह की आगमो के बारे मे सरल और सुलभ जानकारी शायद ही कही मिले। दि. २६-१-९४

इस पत्र के साथ आगम कार्य के सुचारू रूप से निर्बाध गति से चलते रहने की मंगल कामना करते हुए अल्प राशि का ड्राफ्ट भेज रहा हू। यही से सदा प्रातःकाल वंदना एव स्मरण कर संतोष पा लेता हू।

४. त्याग मूर्ति महान आदर्श श्रमणोपासक श्री जौहरीमल जी पारख (रावटी- जोधपुर)

पुस्तके हमारे पास पहुची, बहुत अधिक उपयोगी है। एक सेट पूर्ण और भिजवावे। क्योंकि इसे हम डिप्लोमा या **B.A.** के पाठ्यक्रम मे रखने का सोच रहे है। प्रोफेसर लोगो को भेजना पडेगा। नई प्रजा साराश मे राजी है। विद्यार्थी नोट्स ही पढते है।

हमे **B.A.** और **M.A.** के छात्रो को जैन पढाई कराने हेतु मान्यता मिलने वाली है।

आपकी पुस्तको को निर्णय कोर्स कमीटी की बैठक मे लिया जावेगा। एक प्रोफेसर को बताई तो उसे बहुत ही पसद आई है कि छोटे मे सब आगम ज्ञान आ गया। अग्रेजी मे हो तो विदेशो मे भी चल सकती है ऐसा उसका मत है।

मेरा यह निश्चितमत है कि आपकी ये पुस्तके सभी छात्रो के लिये उपयोगी सिद्ध होगी।

जैनागम नवनीत के आठो भाग **B.A.** के कोर्स मे मान्य कर लिया गया है। अन्य **M.A.** आदि के कोर्स मे आगम की व्याख्याए टीकाए आदि मान्य किये गये है।

आपकी पुस्तके बहुत लोक मान्य हुई है माग भी आ रही है और अनेक धार्मिक पत्रो मे प्रशसा छप रही है।

५. संघ के प्रधान श्री आर.के. जैन (जीन्द शहर) १६-६-९४

आपको बहुत बहुत धन्यवाद। शुक्रिया। आगमो का जो सार लिखा है वह सराहने योग्य कार्य है। इसकी ज़ितनी प्रशसा की जाय उतनी अच्छी बात है। इन आगम के भागो मे जिसने भी सहयोग दिया वे भी सभी धन्यवाद के पात्र है।

६. श्रीमती वीना जैन सचिव (जीन्द शहर) १६-११-९४

आप ने ३२ शास्त्रो को आठ भागो मे साराश करके जैन समाज पर बहुत बडा उपकार किया। मै तो इनकी स्वाध्याय करते करते

तलीन हो जाती हू एक सामायिक के बजाय दो सामायिक सहज मे ही आ जाती है।

७. श्री संजय जैन कन्फेन्सरी (कांधला) २२-१-९४

आपकी भेजी पुस्तके मिली बहुत खुशी हुई कि केवल ५० रु मे इतनी बहुमूल्य आठ पुस्तके सपूर्ण शास्त्रो की मिल गई। पुस्तके बहुत उपयोगी रही है। तथा बहुत अच्छी लगी है। **कुलवंत राय जैन**

८. जैन श्रीसंघ अध्यक्ष श्री छोटूलाल जी जैन (देवास)

जैनागम नवनीत के आठो खड मिले। पुस्तको मे जैन आगमो का सार अति रोचक शैली व सरल भाषा मे दिया गया है। इससे सामान्य पढ़ा लिखा व्यक्ति भी आगमो की जानकारी ले सकता है। सक्षेप मे गागर मे सागर भर दिया है। एतदर्थ नवज्ञान गच्छ प्रमुख आगम मनीषी परम श्रद्धेय पूज्य श्री तिलोक मुनि जी म.सा की सेवा मे हम कृतज्ञता व्यक्त करते हुए साधुवाद ज्ञापित करते हैं। पुन धन्यवाद। १६-११-९४

९. वयोवृद्ध अनुभवी सुश्रावक श्री शांतिलाल जी सुराणा (इन्दौर)

आगम सारांश की पुस्तके मिली। कुछ पढ़ी भी है। तथा लगातार दो वर्षो से उन पुस्तको के आधार पर महासतियां धार्मिक परीक्षा कोर्स पूरा कर रही है। अति सक्षेप मे सार रूप तथा कई नई अवधारणाएं पुस्तको मे अवगत हुई है। सभी के लिये श्रेष्ठ स्वाध्याय मे ये पुस्तके सहायक है।

आगम मनीषी श्रुतधर महामुनि श्री तिलोक मुनि जी महाराज के

तलस्पर्शी शास्त्रीय ज्ञान का नवनीत सभी को पुष्ट दृढ श्रद्धा सयुक्त बनाने मे पूर्ण समर्थ है। दि. ३-१२-९०/१६-९-९५

१०. श्री दुलीचन्द जी जैन- बी.कॉम., एल.एल.बी., साहित्य रत्न (मद्रास)

आपके प्रकाशन बहुत ही मूल्यवान एव महत्वपूर्ण है। आगम ग्रथो के प्रचार व प्रसार का आप जो कार्य कर रहे है वह अभिनदनीय है।

आपके द्वारा प्रकाशित आगम नवनीत माला बहुत सुदर है। सरल भाषा मे सूत्रो की व्याख्या का यह प्रयास प्रशंसनीय है।

पूज्यनीय तिलोक मुनि जी के द्वारा सुंदर रूप से प्रस्तुत आगमो के साराश से मै बहुत प्रभावित हुआ हू। विशेषत आपकी व्याख्याए तथा निबंध बहुत सुदर हैं। दि. १४-३-९३/२९-२-९४/१४-८-९४

११. सुश्रावक श्री सागर मल जी जैन, साकरिया (बम्बई)

आगम नवनीत की पुस्तके मिली। सूत्र की भाषा सरल एव सजीव है, हृदय मे शीघ्र उतर जाती है एव सामयिक मे नियमित पढता हू। आपके इस प्रयास के लिये अन्तःकरण से आपका आभारी हू।

मेरे परिचित व्यक्तियो मे से अधिक से अधिक आगम के ग्राहक बनाने का प्रयत्न करूगा। दि. ९-६-९०

(२० से अधिक ग्राहक बम्बई मे बनाये) एव सौ सेट के भेट की राशि एक मूर्तिपूजक गुजराती महानुभाव से बम्बई से प्राप्त कर भिजवाई।

१२. श्री श्वे. स्था. जैन स्वाध्यायी संघ (गुलाबपुरा-राजस्थान)

आपके द्वारा तैयार किया सेट (आगम-सारांश) वरिष्ठ एव अध्ययनशील स्वाध्यायियो के लिये अधिक उपयोगी है। गहराई से शास्त्र ज्ञान पाने की इच्छा रखने वालो के लिये (भी) सेट अधिक उपयोगी है। मत्री- **श्री रतनलाल जी जैन (गोखरू)** दि. २०-९-९४

१३. श्री महावीर जैन वाचनालय (झाबुआ-एम.पी.)

पुस्तके काफी अच्छी सरल भाषा मे होने से समाज के व्यक्तियो को रुचिकर लगी है। आपका साहित्य वर्तमान समाज के नौजवानो के लिये काफी प्रेरणास्पद रहेगा।

यह कार्य जैन समाज के लिये बहुत बडी सेवा है। आज के युग मे इसकी परम आवश्यकता थी जिसकी आपने पूर्ति की है यह एक अमूल्य देन है। समाज के मार्गदर्शन हेतु ये पुस्तके प्रकाशित कर आपने एक बहुत बडा पुण्य कार्य किया है। इनसे समाज को धर्म की गूढता की जानकारी मिलेगी। **सचिव- ए.एल. मेहता** (दि. ७-८-९३

१४. प्रोफेसर ला. मो. भण्डारी, एम.ए. (हिंदी एवं मराठी)
साहित्य रत्न साहित्याचार्य (बीड-महाराष्ट्र)

पूज्य श्री १००८ श्री नव ज्ञान गच्छ प्रमुख श्री तिलोक मुनि जी महाराज साहेब द्वारा किया गया यह कार्य सदा स्मरणीय रहेगा। इनमे का प्रत्येक पुष्प अपनी सुरभि से पाठक को मिलने वाला एक वरदान है। पुस्तके पढकर बहुत ही सतोष मिला।

प्रत्येक पुस्तके आगम सार-सार का सफल संकलन तो है ही। सामान्य से सामान्य पाठक भी इससे सुलभता से लाभान्वित हो

सकता है। भावी पीढी युग युग तक इससे प्रवाहित ज्ञान धारा मे निरतर अपने ज्ञान की वृद्धि करती रहेगी ऐसी दृढ धारणा है।

अब यही चाह है कि इन अमूल्य एव अनुपम आगम पुष्पो का मराठी भाषा मे अनुवाद किया जाय। **लालचन्द भण्डारी**

दि. ५-३-९१/२६-११-९३

१५. विद्वान सुश्रावक श्री आनंदीलाल जी मेहता (उदयपुर)

मैंने आपके द्वारा दिया हुआ "ऐतिहासिक विस्तृत संवाद" पुष्प २१ का बहुत सारा भाग पढा। उसमे कई बातों की नई जानकारी भी मिली।

सभी आगमो पर सक्षेप मे सार भूत विषयो का उल्लेख करते हुए जो पुष्प आपने तैयार किये है वे सर्वत्र उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।

३२ सूत्रो का साराश मगवाने हेतु मैंने अनेक सस्थाओ को प्रेरित किया है। दि. ७-१०-९३

१६. वयोवृद्ध सुश्रावक कविरत्न श्री जीतमल जी चन्द्रगौत्री (बडौद)

चातुर्मास और सेखे काल मे पधारने वाले सतसती मडल से प्रार्थना करता रहता हूं कि तिलोकमुनि जी ने अथक परिश्रम करके अल्प बुद्धि वालो के लिये अलग-अलग सूत्रो के विषयो समझने का सरलीकरण किया है।

सामायिक आदि धर्म ध्यान के समय ये पुस्तके अत्यत उपयोगी हैं। ग्राहकी या अन्य कार्यो से फुरसत हुई कि इनका पठन शुरू हो

जाता है। दि. २२-१०-९४

१७. सुश्रावक श्री पूनमचन्द जी बरडिया (अहमदाबाद)

आपके ३२ पुष्प सभी मिल गये अध्ययन भी किया तथा साधु-साध्वी जी को जिन्हे जो पसंद आये वे उन्हे दे दिये है। ३२ आगम आपके लिखे हुए बहुत ही सुंदर सरल भाषा में रुचिकर है। आपने ज्ञान का भण्डार जनता के लिये सारांश मे लिखकर बहुत बडा उपकार किया है। दि. ११-९-९५

१८. श्रमण उपासक श्री के.सी. जैन एडवोकेट (हनुमानगढ)

आगम मनीषी तिलोक मुनि जी महाराज ने बहुत अच्छे ढग से जैनागम नवनीत माला लिखकर आगम स्वाध्यायी बंधुओ के लिये बडा उपकार किया है। उनका यह प्रयास प्रशसनीय और अभिनन्दनीय है। दि. २-२-९५

१९. डा. कविन शाह M A , L L ,M Ed (U S.A) Ph D
बीलीमोरा (गुजरात)

आगम पुष्प मिले। सामायिक मे उसका स्वाध्याय होता है। इनके बारे मे हमारा मत है कि स्वाध्याय करने के लिये सभी पुष्प आवश्यक है। आगम साहित्य का सरलता से ज्ञान प्राप्त करने मे ये सभी पुष्प उपयोगी है चितन और मनन करने लायक है।

इनमे स्थानकवासी की विचारधारा प्रगट होती है मै श्वेताम्बर (मूर्तिपूजक) हू फिर भी बडी दिलचस्पी से अपूर्व आनंद मिलता है।

पुस्तको मे जो आगम विषय है उसके बाद दिये गये समीक्षा के विचार बहुत महत्वपूर्ण है। कथा के बारे मे तात्त्विक विचारो की

अवगाहना परिशीलन करने से ही सत्य बोध ज्ञान होता है। समय-समय पर आगम पुष्पो का अध्ययन करता रहता हू और प्रवचनो मे भी इन पुष्पो का उपयोग करता हू। दि. ६-५-९५

२०. श्री कांतीलाल जी जैन (कुरंदी-म.प्र.) २९-७-९३

कुछ दिन पूर्व मारवाड फलौदी जाना हुआ वहा पर आगम बत्तीसी के साराश देखने को मिले। कुछ अश पढे। बहुत ही अच्छे लगे। प्रथम बार इतनी सरल सुबोध भाषा मे वह भी सारांश रूप मे आगम बत्तीसी देखी। जो प्रत्येक गृहस्थी व विशेष कर स्वाध्यायी बधुओ के लिये तो बहुत ही उपयोगी लगी। बहुत बहुत हार्दिक बधाई।

यदि आप यह आगम साराश की बत्तीसी डाक द्वारा भेजे तो मैं पहुचते ही उसका मूल्य भिजवा दूगा। ताकि मै भी इस ज्ञान गगा से लाभान्वित हो सकू।

२१. श्री सागरमल जी समरथमल जी लोढ़ा (महागढ-म.प्र.)

आगम साहित्य के ये सारांश भाग जो कि सरल हिंदी भाषा मे प्रकाशित हुए है वे मुझ अल्पज्ञ के लिये बहुत ही लाभदायक सिद्ध हो रहे हैं। विशाल आगम ग्रथो का पठन पाठन मेरे लिये अति दुरुह था। परन्तु इन पुष्पो ने मेरी उस इच्छा को पूर्ण कर दिया जो कई समय से थी कि मै भी सपूर्ण आगमो का ज्ञान प्राप्त करू।

आपके हम बहुत बहुत आभारी है कि जिन्होने इतना कठिन श्रम साध्य काम करके हम भव्य प्राणियो के लिये आगम नवनीत माला बनाई। दि. २८-१२-९३

२२. डा. सोहन लाल जी संचेती (जोधपुर)

आगम साराश की प्रतियां पढ़ने को मिली। प्रयास प्रशसनीय है अनुमोदनीय है। ये पुस्तके स्वाध्याय प्रेमियो के लिये बहुत ही उपयोगी एव आवश्यक सिद्ध होगी।

सदस्य बनाने का प्रयास जारी है। पब्लिसिटी मे ध्यान दिरावे तो सदस्य सख्या बढ़ सकती है।

२३. श्री आसुलाल जी संचेती M Com, L L B, I R A S (जोधपुर)

मैंने आगम सारांश की पुस्तके क्रम से प्राप्त की और अत मे भगवती सूत्र तीन पुस्तके मिली। प्राय. ध्यान से पुस्तके पढ़ी। चिंतन करने पर मैंने इसमे कोई मतलब वाली बात नही पाई।

आगम स्वय सक्षेप मे सूत्र रूप मे होते है। आज तक अनेक आचार्यो ने इस पर विवेचन व्याख्याए लिखकर जैन साहित्य पर उपकार किया है। यथा- निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका, शब्दार्थ आदि। जबकि इस प्रकाशन मे गाथा या उनका शब्दार्थ भी नही दिया गया है। इतना विशाल महत्वशील भगवती सूत्र को तीन छोटी सी पुस्तक मे रख दिया गया।

मेरी दृष्टि से यह एक अनुपयोगी तथा अर्थ एव समय शक्ति के खर्च का कार्य हुआ अर्थात् इसे अनर्थ दंड माना जा सकता है। मैंने इस प्रकाशन को पढने का प्रयत्न किया किंतु कुछ भी फायदा नही लगा।

मेरा यह निवेदन एव चाहना है कि जैन सिद्धात का उच्चतम साहित्य प्रकाशन हो। (पत्र अंग्रेजी मे होने से अनुमानित भाव दिया है)

पता— एएल. संचेती, 'अलका' D-१२१, शास्त्रीनगर, जोधपुर-३४२००३ (राज)

२४. श्री शांतीलाल जी मूथा (पाली मारवाड़)

आपकी संस्था से प्रकाशित पाचो (छोटी) पुस्तके मिली। इस प्रकार का साहित्य लोकाशाह की तरह नई क्राति लाने मे सहयोगी बनेगा ऐसी पूर्ण आशा है।

नोट :—मूर्ति मुहपत्ति संबंधी सवाद की १०० पुस्तके मगवा कर स्थानक मे वितरण की।

२५. श्री मीट्ठालाल जी पोकरणा (सिकंदराबाद) ३१-११-९४

आपका प्रयास अत्यंत सफल रहा है। अल्प समय मे आपने महान कार्य किया है। यह जैन समाज के लिये गर्व और गौरव की बात है।

आगम मनीषी आगम विशेषज्ञ जैन सस्कृति के परम रक्षक एवं प्रबल प्रचारक पू. श्री तिलोकचन्द जी म.सा. ने जैन समाज के लिये महान उपकार का कार्य किया है। साधारण से साधारण शिक्षित भाई बहिन भी आगमो का हिन्दी अनुवाद पढकर जैन धर्म के गूढ महत्व के तत्त्वो को एव सच्चाई को जान सकता है। आपने सभी के लिये यह सरल सुलभ बना दिया है। सामान्य जन जो केवल हिन्दी का ज्ञान रखता हो, वह भी पढकर बहुत कुछ विदित कर सकता है। बत्तीसवा भाग तो बहुत ज्यादा उपयोगी सरल और सुदर है। दैनिक जीवन मे सामायिक प्रतिक्रमण की दृष्टि से बडा ही उपयोगी सिद्ध होगा।

२६. श्री जादव जी प्रेमजी गाला (डोंबीवली ईस्ट)

वर्धमान स्था संघ डोबीवली उपर मोकलेल पुस्तिका पुष्प २१ (संवाद) ऐतिहासिक परिशिष्ट खण्ड १ वाची। पुस्तिका घणी गमी। सपूर्ण सेट मोटी खाखर (कच्छ) मोकलसो एव व्यक्ति माटे कीमत जणावसो। दि. २२-९-९३

२७. श्री रमणिक भाई शाह (बंबई) दि. ७-१२-९३

जैनागम नवनीत ना खड मली गया बहु ज आनद थयो। आगम नवनीत ग्रथ एक अधिकृत ग्रंथ बनी रहे। पपू तिलोक मुनि जी ए खरेखर संगीन कार्य कर्यु छे ए माटे अमारा तरफ थी धन्यवाद।

२८. डा. मोहनलाल मेहता प्रोफेसर निवृत (पूना) २२-८-९४

पुस्तके मुझे मिल गई है। मुनि श्री का प्रयत्न सराहनीय है। पुस्तके अत्यत उपयोगी एव महत्वपूर्ण है। इनमे जैनागमो का नवनीत समाविष्ट है। इस साहित्यिक उपलब्धि के लिये आगम-मनीषी जी का हार्दिक अभिनंदन।

२९. सुश्रावक श्री लालचन्द जी नाहटा (केकडी) ६-७-९३

नव ज्ञान गच्छ प्रमुख आगम मनीषी शुद्ध जैन परपरा के सजग सरक्षक प. र. श्री तिलोकमुनि जी म सा का सपादित पुष्प २१ देखा। मूर्तिपूजा और मुखवस्त्रिका के विषय मे आपने जिस प्रमाणो का संकलन कर प्रकाशित किया है उसके लिये आपको कोटि कोटि साधुवाद। इतनी हिम्मत आज शायद ही किसी साधु मे हो। मूर्तिपूजा के योजनाबद्ध और धुआधार प्रचार के तूफान को रोकने मे ऐसी पुस्तको की अतीव आवश्यकता है। इस युग की महती आवश्यकता

को आपने पूर्ण किया है।

३०. सुश्रावक श्री मगराज जी कोचर (विजयवाडा)

आपने जो आगम नवनीत माला का प्रकाशन प्रारंभ किया है वह वास्तव मे स्तुत्य है, प्रशसनीय है सराहनीय है। इस अनमोल प्रयास के लिये मेरा शत-शत अभिनन्दन।

३१. श्री संपतराज जी जैन (एमए., बीकॉम., बीए., एलएलबी.) हेडमास्टर **(ब्यावर)** २२-१०-९५

आपके आगम साराश की मैंने कुछ पुस्तके पढी। आपके यहा का यह प्रयास वास्तव मे अत्यंत प्रशसनीय सराहनीय एवं उपयोगी है जिसकी मुझे अपार खुशी है। मुझे यह पूर्ण सेट किस तरह मिल सकता है कृपया उत्तर दे। आपका पता ब्यावर के प्रोफेसर श्री सपतराज जी ढाबरिया से प्राप्त हो सका है।

३२. श्री पदमराज जी जैन (पाडी-मद्रास) १४-१०-९४

हमने आगम का हिंदी रूपान्तरण पढा। अंच्छा सार गर्भित है। इससे स्वाध्याय अच्छा होता है।

३३. सुश्रावक श्री पूनमचन्द जी नाहर (पुष्कर) २५-१०-९४

आगम साराश की ३२ ही पुस्तके मिली। सभी का स्वाध्याय किया। सत सतियो को पसद आने पर देता रहा। ३२वा पुष्प आवश्यक सूत्र के परिशिष्ट मे आवश्यक प्रश्नोत्तर बहुत उपयोगी दिये गये है, कण्ठस्थ करने योग्य है।

३४. श्री उदय जैन नागोरी (बीकानेर) सेठिया जैन ग्रंथालय

आपके द्वारा आगम सार के रूप मे जन जन के लिये ज्ञान के द्वार

अनावृत किये जा रहे है यह आल्हाद एवं हर्ष का विषय है।

३५. श्री सोहन राज जी कोठारी, अध्यक्ष श्री श्वे. तेरापंथी सभा (बालोतरा)

आगम मनीषी त्रिलोकमुनि जी ने जो नवनीत प्रस्तुत किया वह अत्यत स्तुत्य है। पुस्तके मै गहनता से पढता हूं। ये मेरे लिये अत्यंत उपयोगी है। हमारे विचार से ये पुस्तके आगम वाणी के हार्द को समझने के लिये साधु-साध्वी जी एवं श्रावक आदि सब के लिये समान रूप से उपयोगी हो सकती है।

३६. सुश्रावक श्री धर्मीचन्द जी जैन (मारु) (दिल्ली)

आपका साहित्य मै एक दफा अध्ययन कर चुका हूं। इस आगम सेट के लिये कुछ मुनि वृद काफी इच्छुक है। मै सेट का सग्रह नही करता हूं साधु साध्वी वर्ग को अध्ययन हेतु देता रहता हू आप तीन सेट और भेजें ताकि साधु वर्ग उसका लाभ ले सके। हिसाब ट्रस्ट से कर दिया जायेगा।

३७. श्री किस्तूर चन्द जी सेठिया (मद्रास) १४-९-९५

आगम साराश की समस्त पुस्तके प्राप्त हो गई है। एक बार सभी पुस्तको का अध्ययन किया है अब वापस अध्ययन शुरू करूगा।

पुस्तको मे निबंध और परिशिष्ट मैं बड़ी दिलचस्पी से पढ़ता हूँ।

१४ गुणस्थान का स्वरूप मैने पढा। बहुत सरलभाषा मे है और पहली बार मै गुणस्थान के बारे मे अच्छी तरह समझ पाया हूँ। तथा जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति के सारांश से जम्बूद्वीप के बारे मे बहुत कुछ सरलता से समझ पाया हूँ।

३८. उदारमना सुश्रावक श्री गौतमचन्द जी कांकरिया(मद्रास)

आगम साराश की समस्त पुस्तके मिली। हमने इसका भरपूर उपयोग लिया है। ले रहे है। हमारे पड़ोसी भी बरोबर चाहकर पढ़ने ले जाते हैं। बहुत लोग माग कर रहे है। एक सेट और भिजवाने की व्यवस्था करावे।

३९. स्वाध्यायी श्रमणोपासक श्री बी. एल. जैन (रतलाम)

स्वाध्यायी होने के नाते मैने जैनागम नवनीत अर्द्धमूल्य मे प्राप्त किया। इन पुस्तको को मैं साधु महात्मा एव अन्य श्रावको को भी देता रहता हूँ। सभी को बहुत पसद आई। स्थानक लाइब्रेरी हेतु एक सेट और आवश्यक है। २६-६-९५

४०. श्री नरेन्द्र कुमार जी जैन (वासद-खेड़ा) २४-८-९३

'ध्यान स्वरूप' मननीय पुस्तिका मिली। बहुत बहुत आभार। आप श्री ने ध्यान चिंतन अध्ययन के सप्रेक्षण मे यह बहुत अनुमोदनीय उपयोगी स्तुत्य कार्य किया है।

४१. आचार्य विनय चन्द्र ज्ञान भंडार (जयपुर) २९-१२-९३

आप गुणस्थान स्वरूप और कर्मग्रथ भाग २-३ का सार सपादित कर मुमुक्षुओ को सहर्ष प्रदान कर रहे है आपके द्वारा ज्ञान दान का एक अनुकरणीय प्रशंसनीय कार्य हुआ है। **बाबूलाल जैन**

४२. श्राविका सुश्री अनिता छाजेड़ (बोरावड़) २२-१-९४

आपने मेहरबानी कर हमारी कमी की पूर्ति कर दी है। आप जैसे उदार हृदयी धर्म प्रचारक बहुत ही कम मिलते है। गुणस्थानों का स्वरूप हमारे जैसे तत्वज्ञानार्थी के लिये बहुत उपयोगी है।

४३. श्री महावीर जैन वाचनालय (छोटी कसरावद)

पुस्तकें बहुत उपयोगी है स्वाध्यायियो को विशेषकर। इतने अच्छे संपादन प्रकाशन के लिये आपको धन्यवसंयोजक- लक्ष्मीचन्द जैन

४४. वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री चंचलमल जी चोरडिया (जोधपुर)

आगम साराश सेट मे अंतगड सूत्र का सारांश व्याख्यान सामग्री युक्त प्राप्त हुआ। यह पुस्तक स्वाध्यायियो के लिये अत्यंत उपयोगी है। वितरित करने हेतु १०० पुस्तको की स्वाध्याय सघ जोधपुर मे आवश्यकता है। २-३-९२

४५. हिन्दु युनिवर्सिटी जैन इन्स्टीट्यूट (वाराणसी)

हमारे संस्थान की लाइब्रेरी मे अनेक शोधार्थी एवं विद्यार्थी अध्ययन करने प्रति दिन आते हैं। दो सेट हेतु मनिआर्डर भेज रहे है। इसके अतिरिक्त जो भी श्री तिलोकमुनि जी का साहित्य हो उसे **V.P.P.** से भेज दे। **प्रोफेसर - सागरमल जैन** दि. ५-७-९३

४६. अध्यक्ष श्री चन्द्र कुमार संचेती (ग्वालियर)

आगम नवनीत माला का पुष्प २१ संवाद प्राप्त हुआ। धन्यवाद। वास्तव में पुस्तक ज्ञानवर्धक और उपयोगी है।

४७. सुश्रावक श्री मोतीलालजी सुराणा (इन्दौर)

आगम सारांश पुष्प मिले। पुस्तके बड़ी ही उपयोगी है। बहुत बहुत धन्यवाद।

४८. श्री राजेश जी जैन अध्यापक धार्मिक पाठशाला, देवकर

सारांश की पुस्तके मिली पाठशाला के छात्रो को भी अच्छी लगी। बहुत बहुत धन्यवाद।

४९. श्री रामस्वरूप गर्ग संपादक (लाडनू) १३-९-९०

उत्तराध्ययन सूत्र पर सक्षिप्त पुस्तिका देखकर चित्त प्रसन्न हो गया। भावी पीढी को संस्कारित करने का तथा धर्म का बोध देने का यह तरीका सुदर है। मै पुस्तक के प्रकाशक लेखक को इसके लिये हार्दिक बधाई देता हूॅ।

५०. सुश्रावक श्री सुभाषचंद जी नाहर (मद्रास)

आगम नवनीत माला की पुस्तके देखकर मन पुलकित हो उठा। इस प्रकार के प्रकाशनो से आने वाली पीढी मे धर्म के प्रति भावना जगेगी। नियमित प्रकाशन के प्रति हमारी तरफ से शुभ कामनाएं स्वीकार करे।

५१. श्री पुखराजजी जैन (जोधपुर)

आगम नवनीत प्रकाशन पूर्ण सफल चल रहा है। वैसे मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि अपने प्रकाशन की मांग निरंतर बढ़ती जा रही है बाहर विदेशो मे भी मांग हो रही है। तथा फण्ड भी स्वतः बढ़ रहा है। **मंत्री- आगम नवनीत प्रकाशन समिति**

५२. श्री मानसिंह जी खारीवाल- व्याख्याता (सहाडा)

पुस्तके मिली। इनका उपयोग स्वाध्याय के रूप मे किया जायेगा। आप इस तरह ज्ञान दान का यह पुण्य कार्य कर रहे है। इसके लिये मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं। दि. ७-१०-९१

५३. श्री सुधर्म प्रचार मंडल जोधपुर की महाराष्ट्र शाखा येवला

आपके द्वारा भेजी गई पुस्तके मिली। १०० बारह व्रत की एव १०० चौदह निर्यम की पुस्तके और भिजवावे।

संयोजक - अशोक सिंगी

५४. सुश्रावक श्री मोहनलाल जी भुरट (बेंगलोर)

आपके द्वारा अंतगड सारांश आदि पुस्तके मिली । पढ़कर अत्यंत खुशी हुई । पुस्तकें पढ़ने से ऐसा लगता है अति सुदर भाव से विद्वान पुरुष द्वारा लिखी गई । अति सराहनीय है । ६० प्रतियां अतगड सूत्र की भेजने की कृपा करावेंगे । ड्राफ्ट किस नाम से भेजे ? लिखियेगा ।

५५. सुश्रावक श्री लालचन्द जी जैन 'विशारद' (रायपुर)

पांच सेट मिल गये हैं जरुरत वालो को देते रहेगे । दो सामायिक करता हूँ । एक सामायिक में भक्तामर आदि और दूसरी सामायिक मे इन पुस्तको का स्वाध्याय करता हूँ ।

परिश्रम करके शास्त्रो का सार आपने तैयार कर प्रचार कर दिया । अब आपको साधुओ और श्रावको से प्रत्यक्ष संपर्क साध कर पुस्तको मे लिखी बातों को उनके हृदय मे बैठाना चाहिये वरना पुस्तको का सार पुस्तकों में ही न रह जाय । —इस सूचना को कार्यान्वित किया जा रहा है

५६. श्री प्रद्योत दफ्तरी (बम्बई-बोरीवली वेस्ट) ७-९-९३

आपकी तरफ से आगम सारांश की पुस्तके एवं रसीद प्राप्त हुई । साथ मे पुष्प २१ (संवाद) भी प्राप्त हुई । यह किताब बहुत सुदर है । कई प्रश्नो का जबाब इसमे मिल जाता है काफी द्विधाओ का उत्तर मिलने से संतोष प्राप्त होता है । इस पुस्तक के लिये भी मैं आपका बहुत बहुत आभारी हूँ ।

बत्तीस आगमो का सारांश प्रकट करने के लिये इनमे जुडे हुए

सभी लोग धन्यवाद के पात्र है । यह बहुत अच्छा काम हुआ है ।

५७. स्वाध्यायी श्रमणोपासक ताराचन्दजी लोढा (बालाघाट)

आपने विशाल आगम साहित्य की गूढ भाषा की गूढतम बातो को छोटी-छोटी पुस्तको मे छोटे और सरल वाक्यो एव सरस भावो मे लिखी है और जीवन मे अपनाने योग्य बाते प्रकट की है । उसके लिये मानव मात्र आपका ऋणि रहेगा । साधुवाद । दि. १०-९-९३

५८. जैन श्वे. तेरापंथी सभा भवन (बीकानेर) २७-११-९३

जैनागम नवनीत खंड मिले अत. धन्यवाद । प्राप्त पुस्तके मुनि श्री डूगरमल जी को निवेदित कर दी है। मुनि श्री आगम मनीषी जी ने उपयोगी अच्छा संकलन बनाया है । हमारी ओर से इस कार्य के लिये बधाई और मगल कामना । शेष पुस्तके भी शीघ्र भेजेगे ।

५९. वरिष्ट स्वाध्यायी श्रमणोपासक श्री विमल कुमार जी नवलखा (सूरत)

सजिल्द जैनागम नवनीत एव छेद शास्त्र बहुत उत्तम रहा शका समाधानो से परिपूर्ण ये आगम साराश अक साधु-साध्वियो मे भी लोकप्रिय होगे । ऐसी मगल कामना ।

संयोजक - आगम नवनीत प्रकाशन समिति

६०. सुश्रावक श्री जसराज जी चोपडा, जोधपुर

(सेवानिवृत न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय, जोधपुर)

आगम साराश की पुस्तके मिली । साहित्य बहुत सरस व अच्छा है । सीधी सरल भाषा मे लिखा होने से सर्व ग्राह्य है । दि. ३०-१०-९५

जैनागम नवनीत सर्जक

मुनिराज के प्रति

श्रद्धा पत्र

चरणानुयोग - द्रव्यानुयोग

सम्पादकीय सहयोग

सौभाग्य से इस श्रम साध्य महाकार्य मे आगमज्ञ श्री तिलोक मुनिजी का अप्रत्यासित सहयोग मुझे प्राप्त हुआ है।

इनकी अनन्य श्रुत भक्ति और संयम साधना देखकर ऐसा कौन होगा जो प्रभावित न हो। श्रमण जीवन की वास्तविक श्रम निष्ठा आपकी रग-रग मे समाहित है। आपका चिंतन और आपके सुझाव मौलिक होते है।

मुनि श्री कन्हैयालाल 'कमल'

'सम्पादकीय से साभार उद्धृत'

१. त्याग मूर्ति आदर्श श्रमणोपासक श्री जौहरीमल जी पारख (रावटी- जोधपुर)

पानीपत गया था। पूज्य आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी ने आपके लिये सर्वत्र निभने का शुभ संदेश दिया है। आपके आगम ज्ञान की प्रशंसा करते हुए नही थकते थे।

आपको वाचना देने हेतु बाहर से बुलावे तो आने ही वाले हैं अच्छा ही है। शुद्ध निर्जरा होती है क्यो कि आपके कोई निदान या लिप्सा या स्वार्थ आदि तो है नही। दि. ३-१०-९५

एकलविहार आपके लिये वरदान सिद्ध होगा। क्यो कि साथी आपको पीछे खेचते हैं। ५-३-९५

पूज्य ज्ञान गच्छाधिपति श्री चम्पालालजी म सा से मेरी वार्ता हुई तो उन्होने सारी परिषदा के समक्ष आपके आगम ज्ञान की एवं प्रखर बुद्धि की प्रशसा की थी। आप तो निरभिमानी हुवे पूरे जीवन को आगम श्रुत सेवा मे लगा दे- उत्कृष्ट कोटि का आभ्यंतर तप है। ज्ञान का सूर्य जहां भी विचरेगा, अज्ञान का अन्धेरा हटता रहेगा - धर्म की सही प्ररूपणा होगी। दि. ८-४-९५

कई लोगो का कहना है कि आपको रावटी स्थापन्न कर दो। हमारी भी यही कामना है। दि. १६-८-९५

राजा की पूजा स्वदेश मे ही होती है। विद्वान सर्वत्र पूजा जाता है। ज्ञान दान हरेक के बस का रोग नही है। आप मानव भव को सफल कर रहे है। स्वाभाविक है कि कुछ लोग आपकी प्रगति की

ईर्ष्या करते है। गलत प्रचार भी करते है। इसमे आपका कोई कसूर नही है। जिनके भाग्य में लिखा होगा वे लाभ उठावेगे। हम भी आपकी बाट देख रहे है। दि. १३-१-९६

२. श्र. सं. उपा. श्री कन्हैयालाल जी म. सा. 'कमल', पीह

(९-९-९०) परम पूज्य श्री तिलोक मुनि श्री कई विषयो पर आपसे विस्तृत विचार विनिमय करना आवश्यक है। आगामी चातुर्मास के बारे मे भी आपके भावना के अनुरूप मुझे विचार करना है।

आपके सहयोग की मुझे अपेक्षा है। मेरे से अधिक श्रम होता नही है यह आप जानते ही है। आपकी उदारता का लाभ मिलना आवश्यक है।

(९-९-९० दूसरा पत्र) परम पूज्य श्री गौतम मुनि जी म सा. अभी पूज्य श्री तिलोक मुनि जी महाराज के सान्निध्य की अनिवार्य आवश्यकता है इसलिये आप के उदार सहयोग से ही यह सभव है।

(जावला ११-१-९०) परम स्नेही श्रुत परिग्रही श्री तिलोक मुनि जी ! आपको इस ओर पधारना ही है। आपके सहयोग से ही शेष कार्य सम्पन्न होगा।

(सूरसागर - दीपावली बाद) आगम साराश कार्य से जब भी सर्वथा निवृत्त हो जाने पर मेरे अनुयोग के कार्य मे सहयोगी बने तो मुझे बहुत सहयोग मिलेगा। इसके लिये मै आपका सदैव आभारी रहूँगा।

(सोजत ३-५-९२) आप तो श्रुत सेवा मे संलग्न है। आपकी हार्दिक लगन असीम है। मैंने जोधपुर से सोजत और सोजत से जोधपुर विलचेअर का प्रयोग किया है इसका आगमानुसार प्रायश्चित सूचित करे। वर्तमान शारीरिक स्थिति मे तप रूप और स्वाध्याय रूप जो शक्य हो वह तप लिखे। पत्र का उत्तर सोहनलालजी सचेती जी के पते जोधपुर ही देवे।

(आबू पर्वत ४-५-९४) धन्य है आपको जो कषाय मुक्त हो गये है। श्रुत सेवा से आपको जो लाभ मिला वह अच्छा है। पूज्य वर ! मै अपने को ज्ञानी नही मानता तो आपकी कैसे कदर करू ?

आपसे परिचय नही था तब भी मेरा कौन सा कार्य रूका रहा और अब ऐसा कौन सा कार्य है जो आपके बिना नही होगा। थोड़ी देर के लिये मानले कि आपके बिना कोई कार्य नही होगा तो नही होगा। सारे कार्य किसके होते है।

३. मैनेजर सा. श्री अर्जुनसिंह जी (महावीर केन्द्र आबू पर्वत)

(२२-१०-९४) आगम नवनीत समापन पत्रिका मिली। अपार हर्ष हुआ आप जैसे विराट व्यक्तित्व एव विलक्षण प्रतिभा के धनी महाज्ञानी महापुरुषो के दर्शन कर मैं अपने आपको धन्य समझता हूॅ। आप शुरु से ही इस जीवन मे मान मर्यादा मे व प्रतिष्ठा मे उत्तरोत्तर वृद्धि करते रहे है। आप मे कितनी मौलिकता एव पवित्रता है। आपकी सहिष्णुता बेजोड है। पूज्य गुरुदेव ! आपने मेरा व्यसन छुडवाकर मेरे स्वास्थ्य का महान उपकार किया है उसे मै मृत्यु के अतिम घडी तक भी भूल नही सकता। आपकी प्रेरणा सदैव मेरे पीछे

रहनी चाहिये ।

(११-९-९५) पूज्य गुरुदेव आपके दर्शनों की मुझे ब
अभिलाषा है । आपकी याद हर वक्त आती रहती है । आप वास्तव
सच्चे सत है । आप मे जो महानता और बडप्पन है उसका वर्णन कर
मेरी लेखनी की ताकत के बाहर है । मै अपने जीवन मे ऐसे महान स
को कभी भुला नही सकता । मै वज्र सकल्प करता हूॅ कि मैं सदै
आपके बताये हुए सुमार्ग पर ही चलूंगा ।

४. श्र. सं. प्रवर्तक श्री महेन्द्र मुनि जी म. सा. 'कमल', जयपुर

आगम मर्मज्ञ श्री तिलोक मुनि जी म ! सादर हार्दिक सुखशाति
आपके द्वारा अध्यापन कार्य सुचारू चल रहा है यह जानकर प्रमो
हुआ । यथावसर आपका सहयोग लेने के भाव है आपकी स्मृति होत
रहती है ।

स्नेहमूर्ति विद्वान संत श्री तिलोकमुनि जी म ! आपके द्वारा प्रेषि
ध्वनिवर्धक यत्र एव विद्युत आदि के सबंध मे व्यक्त किये विचा
(लिखित) मिले । प्रसन्नता । आपका आगम अधिकार निश्चित रूप
अनुपम है । हार्दिक बधाई एव अभिनंदन । कुछ विशेष प्रश्न आि
यथा शीघ्र अकित कर भिजवाऊगा । समाधान भेजने का कष्ट करे
२६-१०-९५

५. स्थविर पद प्राप्त युवा संत श्री प्रेम मुनि जी म. सा.

(साधु मार्गी संघ)

(पाली १-११-९४) सौजन्य शील, सौम्य हृदयी, श्रुतधर, पर
सहिष्णु श्रद्धेय आगम मनीषी पूज्य श्री तिलोकमुनि जी म सा

आपके जैसे सरल सौजन्य शील निरभिमानी आगम मनीषी को इतनी जटिलताओ का सामना करना पड़े यह कल्पनातीत होने के साथ आश्चर्य मिश्रित हार्दिक खेद का विषय है। कर्म सिद्धान्त की भवितव्यता के आगे हर व्यक्ति विवश है। लगता है यही विवशता आपके महान व्यक्तित्व की आभा को आच्छादित कर रही है। आपके धैर्य स्थैर्य सहिष्णुता को धन्य ! धन्य ! धन्य है। आपकी कर्मठता एव कर्तव्य परायणता का हार्दिक अभिनन्दन।

अपने जीवन के मूल्यवान समय को श्रुत समर्पणता के माध्यम से आगे बढ़ाये। हर परम्परा के साधु-साध्वी जो आपसे ज्ञान लेना चाहे उनके प्रति उदारता वर्ते। हम भी आपके प्रति कुछ कर सके यह चिंतन अनवरत चलता है। *(हर परंपरा के साधु साध्वी को ज्ञान दान चालू कर दिया गया है)*

(मसूदा १५-९-९५) आपके समभाव और सहिष्णुता को धन्य है कि आप ढेर सारी प्रतिकूलताओ के बावजूद भी सयम मार्ग मे अविचल भाव से समर्पित होकर चल रहे हैं। आपका यह महान जीवन अनेको के लिये अनुकरणीय आदर्श रूप है।

आप गुजरात मे पहुच कर जो आगम ज्ञान का आध्यात्म यज्ञ प्रज्वलित किये हुए है तथा अनेक भव्य मुमुक्षु आत्माओ के अतरतम को आलोकित कर रहे है, यह जिनवाणी के प्रति विशुद्ध अनुराग स्वरूप है। विशिष्ट कर्म निर्जरा का हेतु है।

आपके पास जीवन अनुभव की विशाल समृद्धि है। भले ही आपका वर्तमान जीवन प्रतिकूलताओ के दौर से गुजर रहा हो, किन्तु

आपने श्रुत सेवा के माध्यम से जो पुण्य प्रकर्षता और निर्जरा की सामग्री इकट्ठी की है उसके आधार पर आपका लोकोत्तर समुज्वल लगता है। मेरी शुभकामनाये सहानुभूति सदैव आपके साथ है। आपका आत्मीय भाव प्रवर्धमान रहे इसी शुभेच्छा के साथ।

६. महाप्रभावक मधुर वक्ता श्री कानमुनि म. सा. (खण्डवा) (धर्मदास संप्रदाय)

(५-१०-९५) आपका श्रुत प्रेम और आपकी श्रुत सेवा सराहनीय है। आप सुख पूर्वक इधर पधारने की कृपा करे- ऐसी नम्र तम प्रार्थना है। हम आपका यथाशक्य लाभ लेने की भावना रखते हैं। कुछ माह पूर्व महासती जी की श्रुत वाचना के अनुसधान मे आपका स्मरण हुआ था और आपके सानिध्य मे आगमो की कुछ वाचना हो तो अच्छा रहे, ऐसी विचारणा हुई थी। क्या आपका ईधर आना संभव होगा? आदि जिज्ञासा से आपसे सपर्क करने का पत्र व्यवहार द्वारा प्रयत्न भी किया था किंतु पत्र आप तक नही पहुच पाये थे। आज ही आपके समाचार निश्रागत सत सतियो को भेज रहे है।

७. वीरपुत्र पं. रत्न श्री घेवरचन्द जी म. सा. (ज्ञानगच्छ)

आपके भौतिक शरीर और संयम शरीर की सब तरह से सुखशाता बनी रहे ऐसी शुभकामना है।

आपके पत्र पर से आपकी ज्ञान पिपासा का सहज पता लगता है कि वह कितनी उत्कृष्ट है। आपका पठन पाठन और ज्ञान-ध्यान निरंतर चालू रहता है यह प्रशसनीय एव अनुकरणीय है।

(खीचन १४-११-८६) प्रेषक- आलोकचन्द

८. सुश्रावक श्री लालचन्दजी जैन 'विशारद' -रायपुर खीचन)

आप अपने कर्तव्य का पालन करते हुए कच्छ मे विराजित संत व सतियो को शास्त्रो के पठन पाठन का लाभ देकर आगे ज्ञान वृद्धि करते है यह धर्म वृद्धि का कारण है। आपका ज्ञान अपार है। आपने ३२ आगमो का जो लेखा जोखा साराश के रूप मे किया है वह सभी सत सतियो व श्रावको के लिये स्मरणीय रहेगा। कोई कोई बुराई करने वाले भी मिल जाते है उसका कुछ भी अन्य विचार नही लावे। अच्छे फलो मे सडे फल भी आते है। हाथी के पीछे सौ कुत्ते भसते हो तो भी वह अपनी मस्ती मे चलता है। आज समाज की यह हालात है कि अच्छो का साथ कम लोग देते है। बुरो का या अपनी प्रशसा करने वालो का साथ देने वाले ज्यादा होते है। हमे कोई गालियां देता है और वे अवगुण अपने मे नही है तो वे सारी गालिया देने वाले के पास वापिस जायेगी यह नियम है।

९. श्र. सं. उपप्रवर्तक श्री प्रेम मुनि जी म. सा. (गांव बडौद)

आप अभी कच्छ प्रदेश के साधु-साध्वी जी को सूत्रो की वाचना प्रदान कर रहे है यह ज्ञान दान का कार्य स्व पर के लिये महान कर्म निर्जरा का कारण है, हमे आपके इस परोपकार के कार्य से अति प्रसन्नता हो रही है। आप को आगम मनीषी होने पर भी कुछ विशेष परिस्थितियो मे अकेला विचरण करना पड़ रहा, यह भी एक सयोग समझना चाहिये। तथापि आप अपने धर्म कार्यो मे सदा जागृत रहकर प्रयत्नशील है यह बड़ी महत्व की बात है।

सूत्रो की वाचना सुनने की रुचि तो मेरी भी रहती है। मै आप

जैसे ज्ञानवान चारित्रवान सतो के प्रति बहुत श्रद्धावान हूँ। आपका हमारा बहुत दूर का फासला है इस कारण मेरी ओर से बुलाने का साहस नही जुटा पा रहा हूँ। हा कभी सयोग होगा आपकी भावनानुसार आप का इधर आने का होगा तो अवश्य ही साथ रहेगे। आपके संपर्क से हमारे रत्नत्रय मे अवश्य ही वृद्धि होगी। आपके जैसे आगम मर्मज्ञ साधु के साथ कम से कम एक साधु और साथ मे रहना चाहिये।

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि आप विचरण भी कर रहे है जिस से अनेक क्षेत्रो को धर्मलाभ मिल रहा है और साथ मे आगमो के अध्यापन कार्य मे भी आप प्रयत्नशील है। आपका प्रयास सफल हो ऐसी मै सद्भावना रखता हूँ एव आपके प्रति हृदय से स्नेह पूर्वक शुभमंगल कामना प्रेषित करता हूँ।

१०. स्पष्ट वक्ता प्रभावक धर्मोपदेशक श्री धर्ममुनि जी म. सा.

गुरुदेव आपके पुरुषार्थ को धन्य है आपके आगम साराश मिले हम धन्य धन्य हो गये है। मौका होगा भाग्य ने साथ दिया, समय अनुकूल रहा तो आपके चरणो मे आगम का अध्ययन करने का भाव है।

हमारे लिये कोई सेवा हो तो लिखना। श्री तिलोक मुनि जी आप विश्वास रखना हम आपको गुरुतुल्य समझते हैं, बिना सकोच के लिखे और पजाब आने का भाव रखे। आप श्री की सेवा करने की भावना रखता था मगर आप बहुत लम्बे चले गये। वह दिन धन्य होगा जिस दिन मुझे आपकी सेवा का मौका मिलेगा। आगम साराश

के सेट कुछ बाकी हो तो इधर सत सतियां जी म सा. इच्छा करते है। कृपा करेगे तो वितरण कर देगे।

आपको शाता हो आप श्री इधर पधारो। हरियाणा पजाब स्पर्श करके पवित्र करे। हम अपना भी सौभाग्य समझेगे, आप हमे भी सेवा का मौका देवे अति कृपा होगी। पाच सेट प्राप्त हुए महती कृपा की। धन्यवाद।

११. कच्छी श्रावक श्री विनोद कुंवर जी छेडा (बम्बई)

आपके द्वारा किये गये सशोधन तथा हमारे प्रश्नो के उत्तर प्राप्त हुए। प्रत्येक प्रश्नो के उत्तर सचोट एवं विस्तार पूर्वक होने से हमे समाधान हुआ है। आपने जो परिश्रम किया वह उल्लेखनीय प्रशंसनीय है। जैनागम नवनीत के आठो खड पढ़े है। स्था. जैन समाज पे आपका बहुत उपकार है। हम आपके ऋणी है। आपके सयम जीवन की एव आगम ज्ञान की अनुमोदना।

१२. सुश्रावक श्री दिनेश भाई महेता (भुज)

आप से ज्ञान चर्चा का लाभ प्राप्त हुआ था उससे काफी जानकारी प्राप्त हुई और प्रश्नो का सतोषपूर्ण समाधान हुआ था। लेकिन जब भी अवसर प्राप्त होगा तब और ज्ञान चर्चा करने की तमन्ना है। आप जैसे परमज्ञानी और साधु समाचारी के द्रढ पालक का आशीर्वाद मेरे जैसे श्रावक को भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिये सरलता प्रदान करता है। फिर से आपके परमज्ञानी आत्मा को भाव पूर्वक वदना।

१३. तत्त्व चिंतक आगम ज्ञानार्थी मुनि श्री प्रकाश चन्द्र जी म
सा.

(८-९-९२) आपके आगम सारांश सपूर्ण प्रकाशित हो जाने
बाद उनका गुजराती अनुवाद करने की पूरी भावना है ।

अहमदाबाद मे चार दिन साथ मे रहे थे वे दिन यादगार हो गये
अभी तक आपके ज्ञान और खोज से मै जितना प्रभावित हुआ हूँ उतन
अन्य कोई जैन सत से नही । आपके सानिध्य मे रहने की तीव्र भावन
है । कृपादृष्टि रखना ।

(२७-१०-९२) आगामी चातुर्मास हमारा भचाऊ कच्छ मे है
है यदि आप पधारेगे तो सुवर्ण सुरभि सयोग होगा । आपके पास से
ज्ञान प्राप्त करने की जो हमारी तीव्र भावना है वह साकार होगी और
गुजराती अनुवाद करने मे साथ मिलेगा ।

आप जब से मिले तब से कोई दिन भी ऐसा नही होगा जो मैंने
आपको याद न किया हो । हमारे सभी ज्ञान भडारो मे आपकी साराश
पुस्तके रखनी है ।

(१५-१०-९२) चातुर्मास बाद गुजराती अनुवाद करने की
शुभ शुरुआत करुंगा आपका आशीर्वाद अपेक्षित है ।

आपके साथ सत्सग करने का बहुत होश है । चार दिन का सत्सग
चिरस्मरणीय हो गया है ।

(३१-७-९४) विशेष आनद इस बात से हुआ कि आपका सानिध्य हमको प्राप्त हो सकेगा। आगामी चातुर्मास हम ऐसे क्षेत्र मे है कि सब अनुकूलता हो सकेगी। आपका अमूल्य सानिध्य मिलने के बाद सभी आगमो के साराश का गुजराती अनुवाद का कार्य आगे बढ़ सकेगा।

हम इस समय पाच सत चातुर्मास मे है। दूसरे सतो को भी जानकारी देगे। यदि कोई आगम अभ्यास के लिये साथ मे रहेगे तो अधिक आनद आयेगा, वरना हमको तो आपके द्वारा आगम वाचना लेने की पूर्ण भावना है ही।

(१२-१०-९४) कच्छ के सभी क्षेत्र सप्रदाय आधीन है। ज्ञान प्राप्ति के लिये आपको सघ द्वारा विनति कर सकते है यह सप्रदाय गत प्रणालिका है और कोई हरकत नही है। आप दो संतो का लाभ लेने की अभिलाषा होते हुए भी रुढिगतता के कारण लाचार बन जाते है।

आप सरल समयज्ञ और उदार हृदयी है इसलिये जो हकीतत है वह लिख दी है।

आपका सानिध्य प्राप्त कर आगम ज्ञान प्राप्त करने की तीव्र अभिलाषा है, शीघ्र पूर्ण हो ऐसी अपेक्षा रखता हूॅ।

(रापर १४-११-९४) अंतिम सफल विनती पत्र

सब की भावना ऐसी है कि आप कच्छ मे पधारे और आपके ज्ञान का लाभ सभी को दे। हमारी तो तीव्र इच्छा है ही परन्तु श्री सघ के सभी भाइयो की भी ऐसी भावना है कि आप कच्छ मे पधारें। शेष

काल मे तो लाभ मिलेगा ही और आपको अनुकूलता होगी तो प्रागपुर चौमासे मे भी लाभ मिल सकेगा।

आपको अनुकूलता हो तो अवश्य पधारिये। हमारे सभी का कच्छ मे मिलन हो सकेगा और आपका उपकार कभी भी नही भूल सकेगे।

(१४-११-९४) रापर संघपति का पत्रांश - विनती के साथ लिखना है कि हमारे प्रकाशमुनि महाराज साहेब को आपके ज्ञान का लाभ लेने की तीव्र भावना है तो आप हमारे कच्छ भूमि मे पधारे और सब को दर्शन का लाभ दे। नानू भाई का भावपूर्वक वदन।

(१३-३-९५) कच्छ प्रवेश के समय और मिलने के पूर्व का पत्रांश-

आपका पत्र प्राप्त हुआ। बहुत आनद के साथ अत्यत सतोष हुआ। कल्पवृक्ष फलने से जैसा हर्ष होता है ऐसा आनंद आपके आगमन से हो रहा है।

आपका आगमन हमारा आनद। बहुत वर्षो के बाद आपके पावन सानिध्य की भावना पूर्ण होगी।

भूखे को भोजन मिलने से और तृषित को अमृतजल मिलने से जैसा आनंद होता है वैसा आनद का हम आज अनुभव कर रहे हैं।

१४. श्रुत प्रेमी विद्वान संत श्री भास्कर मुनि जी म. सा. (आबूपर्वत) (वर्धमान महावीर केन्द्र)

(१-४-९५) आपका सौहार्द पूर्ण पत्र प्राप्त हुआ, पढकर बहुत

प्रसन्नता। आप सुखशाता पूर्वक हमारे कच्छ मे पधार गये है और हमारे सन्त सतिया जी आपके उत्कृष्ट ज्ञान सिंधु से यथाशक्ति लाभ उठा रहे है यह जानकर बडी खुशी हुई। जिनका महान पुण्योदय हो उनको आपकी सन्निधि प्राप्त हो सकती है। आपकी कच्छ यात्रा सफल व यशस्वी अवश्य बनेगी, यह हमे पूरा भरोसा है।

मुनिप्रवर श्री प्रकाश मुनि व अन्यान्य सत सतिया जी का पूरा सौभाग्य है कि वे आपके द्वारा प्रदत्त शास्त्रीय धारणाओ से लाभान्वित हो रहे है। सस्नेह हार्दिक सुखशाता पृच्छा व यथाविधि वदन

(५-५-९५) मुनि प्रवर श्री प्रकाश मुनि एव विशाल साध्वी गण आपके आगम ज्ञान से लाभान्वित हो रहे हैं, जानकर बहुत प्रसन्नता हुई। इन लोगो का सौभाग्य है कि अनायास आपका जोग मिल गया है

आपके ज्ञान एवं चारित्र से पूरा समाज प्रभावित है। साधु-साध्वी आदि चतुर्विध सघ इस दृष्टि से आपके प्रति बहुत बहुत श्रद्धान्वित है ऐसा अनुभव उत्तरगुजरात व आबू की स्पर्शना के दौरान हमे हुआ है इतनी श्रद्धा के केन्द्र आप बने हुए है। आप शास्त्र रहस्य वेत्ता गीतार्थ सत है। हमारे स्थानक वासी समाज के प्रति अन्य लोगो के द्वारा कोई प्रहार होता हो तो उसका निवारण करना, उसके लिये कलम उठाना आपके जैसे आगम मनीषी संतो का कर्तव्य है।

(२९-५-९५) आपके द्वारा ज्ञानामृत का लाभ प्रकाशमुनि जी व अन्यान्य सतिया जी उठा रहे है यह प्रसन्नता की बात है।

(१४-८-९५ भचाऊ) परम आदरणीय जैन शास्त्र विशारद मुनि प्रवर श्री तिलोक मुनि जी म सा.! यहा ठाणा ११ सुखशाति पूर्वक विराजमान है आपको यथा विधि वन्दना एव सुखशाता निवेदन किया है। आपके यहा आगमवाचना व स्वाध्याय का अच्छा क्रम चल रहा है जानकर प्रसन्नता हुई।

१५. शासन प्रभाविका संयम निष्ठा महासती जी श्री अनिला बाई म. सा. (भुज)

(२-४-९६) रापर लाकडिया रोकाण दरम्यान मलेला शास्त्र वाचनी नो लाभ पुनः पुन स्मरण पर आवता आत्म प्रसन्नता नी अनुभूति थई रही छे। खरेखर आपे उदारता पूर्वक अमने समय अने सहकार आप्यो छे ते भूली शकाय तेम नथी।

आप अमारा पर महान उपकार करी जे ज्ञान दान आप्यु छे अे सदा चिरस्मरणीय बनी रहेसे। आप श्री नु चिंतन शास्त्र निष्ठा अने अन्य ने ज्ञान दान आपवानी लगन, खूब खूब प्रशसनीय छे। समझाववानी सरल पद्धति ने कारणे फरी फरी लाभ लेवानो भाव थाय पण हवे तो ए दुर्लभ छे।

सप्रदाय ना सत सतीजीओ आपश्री ना अगाध ज्ञान नो लाभ लई चारित्र मा पुष्टी करे, रत्नत्रय नी आराधना मा जोगवत बने ए भावना आजपण अमारी रही ज छे।

अमे अमारी रीते आपनी पासे थी लीधेली वाचना नु पुनरावर्तन, शक्य तेटलू जीवन मां अवतरण करवा अवश्य कोशीश करशु। आर्या अनिला जी ना पुन वदन।

(मांडवी ७-५-९७) आपनी पासे थी लीधेली आगम वाचना अमारा जीवन मा घणी ज उपकारी बनी छे ।

आपना मार्ग दर्शन मुजब सयम् जीवन दरम्यान लागेला दोषो नुं आलोचन प्रतिक्रमण करी अत्यार सुधी अेटले के सयम जीवन ना २७ वर्ष नी शुद्धि माटे अमे "बहुसो वि" ने न्याये छः महिना नु उपवास नु (१८० उपवास छूटा) प्रायश्चित लई लीधु छे अने ते दिवस थी दररोज साझे प्रतिक्रमण बाद दैवसिक प्रायश्चित करीए छीए ।

आपनी सूचना मुजब आतर निरीक्षण करी जाणता अजाणता लागेला दोषो नु, आधाकर्मादिनु प्रतिदिन पाच उपवास नु प्रायश्चित लइये छीऐ । वली प्रायश्चित उतारवा माटे ना विकल्पो जणाववा कृपा करशो । आपनी तबियत साधना ने अनुरूप हशे । आगम वाचना चालू हशे । सौराष्ट्र मा तो घणाज जिज्ञासु मली जाय । आपनी ज्ञान पिपासा अने ज्ञान दान देवा नी भावना घणीज उत्तम छे । अमे बधा ज ठाणा घणीवार याद करीने हार्दिक अनुमोदना करीअे छीअे ।

१६. परम विदुषी महासती श्री झरणा बाई म. सा. (कच्छ)

आगम मर्मज्ञ पू. श्री तिलोक मुनि जी । हार्दिक वदन .. सुखशाता पृच्छा । धारणा अने व्याख्यानादिनी बुक आपे जे आप हती तेमाथी घणु जाणवा मल्यु अने लखी लीधु छै । वर्षो थी मेलवे ज्ञान. तेनी पाछल करेलो जब्बर पुरुषार्थ प्रत्यक्ष जणाय छे । तमा ज्ञान नो वारसो अवश्य चालशे । अमारी पाछल कीमती समय भोग आपे जो आप्यो छे ते भूली नही शकीअे । आपना सद्गुणो याद करीअे छीअे ।

१७. परम विदुषी बा. ब्र महासती श्री प्रफुल्ला बाई म. सा. (वीरमगांव) (खंभात संप्रदाय)

(५-३-९६) गुणवत गुणना भडार, आगमना ऊंडा अभ्यासी, अप्रमत्त, जिनशासन नी जब्बर प्रभावना माटे ज्ञान नु दान देनार बा. ब्र. मुनि श्री तिलोक मुनि जी महाराज साहेब . .आप पण महावीर ना मार्ग मा मस्त हशो अने स्वभाव मा स्वस्थ हशो ।

पूज्य गुरुदेव आपे खरेखर आगमो नी खूबिओनु चाबियो नु अगाध ज्ञान मेलव्यु छे. । साथे-साथे आपवा नी भावना पण आपनी तीव्रतम छे। आथी आपनु जीवन ज खूबज प्रशसनीय अने बखाणवा लायक छे... ।

आपने (कच्छ गुजरात) खूब-खूब सुखकारी रहे अने आप जिनशासन नी खूब-खूब प्रभावना करो, तेवी शक्ति मले, तेवी अतर नी भावना...... ।

१८. श्रमण संघीय विदुषी अनुभव वृद्ध महासती जी

आपका पत्र एव एक पत्र की प्रतिलिपी मिली। जो कुछ भी आपके साथ हुआ, घटा पढ़कर अफसोस हुआ। लगता है समय ऐसा आया है जहा अच्छो का साथ देने वालो का दुष्काल पड़ता जा रहा है। भला जहा कुए मे ही भाग पडी है वहा भला किससे क्या आशा की जा सकती है। चाहे भले कितने ही पदवी धरो के आगे पुकार गई, परिणाम आप देख ही चुके होगे। गलत करने वालो को सही दड मिलना और सही व्यक्ति को प्रोत्साहन मिलना यह बात तो आप भूल जाइये। यहा तो अधेरी नगरी चौपट राजा वाली कहावत चरितार्थ हो

रही है। कहने को आध्यात्म क्षेत्र है परन्तु यहा योग्यता एव गुणो की नही, प्रतिष्ठा की पूजा है, कीमत है।

बारह वर्ष के लिये आपने जो अध्यापन का निर्णय लिया है वह प्रशसनीय है। भाग्यशाली है वे जो आपसे आगम ज्ञान ग्रहण कर रहे है।

१९. मेनेजर सा. श्री अर्जुनसिंह जी श्री व. महावीर केन्द्र (आबूपर्वत)

(दिनांक २७-६-९६) आपने अपने सज्जनता, नम्रता, उदारता, शिष्टता तथा अपनी मधुर वाणी से मेरे हृदय पटल पर जो छाप छोडी वह मेरे जीवन की अतिम घडी तक भुला नही सकता। आपने यहा आबू पर आगम लिखने मे अथक परिश्रम किया। आपने अपने अदम्य साहस एव पुरुषार्थ से जो जो अच्छे कार्य किये हैं वे भूलने पर भी भुलाये नही जाते।

आप सूर्य के समान निरतर चिरकाल तक अपना ज्योतिर्मय प्रकाश प्रदान करते रहे। आप वास्तव मे सूर्य समान तेजस्वी, चद्र समान शीतल, भारण्ड पक्षी समान अप्रमत्त, गुणो के सागर, विद्या के भण्डार, एव सच्चे संत है। आप जैसे महान सतो पर भी लोग झूठा दाग लगाते है उनकी गति नही होगी, वे वैतरणी नदी मे गिरेगे, उनका नाश होगा, वे कर्मो के बधन बाधते है।

मैं आपके लिये हमेशा स्वस्थ यशस्वी तथा दीर्घ जीवन की मगल कामना करता हूँ। आपके पास तो सत्य शक्ति का अखूट खजाना है सत्य की शक्ति अनुपम होती है। साच को आच नही।

सत्य की हमेशा विजय होती है।

आप तो सुमेरु पर्वत की तरह चट्टान बन कर अन्यायो का छाती ठोककर मुकाबला करे और सकटो का सामना करते रहे। आप मे कितनी ही मौलिकता एव पवित्रता है। आपकी दिव्यवाणी हमेशा याद आती है।

इस विभाग में

सन् १९९० से १९९६ तक के सकलित समस्त प्रेरक पत्राशो के देने का आशय है– पाठको को जैनागम नवनीत रूप साराश पुस्तको के प्रति एव इनके लेखक मुनिराज के प्रति श्रद्धा निष्ठा केद्रित होकर अधिकाधिक आगम स्वाध्याय के लिये भव्यात्माओ को प्रेरणा मिले एव अतर मानस मे ऐसी लगन उत्पन्न हो कि समस्त आगमो का साराश हम भी एक बार तो अवश्य पढ़लें।

हमारे शुभ आशय की सफलता पाठको के पत्रो से ज्ञात हो सकेगी। इत्यल।

खोया-पाया

१ जैनागम नवनीत साराश जो लेना लेना सोचते रह गये है उन्हे अब वह सेट मिलना दुर्लभ है ।

किंतु उसकी पूर्ति में

२ जैनागम नवनीत प्रश्नोत्तर की ३२ पुस्तकें तैयार की जा रही है । अग्रिम बुकिग चालू है ।

प्रति सेट - ५००/- रु अग्रिम ग्राहक

सहयोग सौजन्य, सदस्य सहायता आदि के लिये इसी पुस्तक मे देखे

नोट - ज्यो ज्यों पुस्तके तैयार होती जायेगी भेज दी जायेगी । एक साथ के सकेत करने वालो को एक साथ यथा समय भेज दी जायेगी । राशि भेजने आदि का पता अन्यत्र पुस्तक मे देखे ।

३. सुविधा

किसी भी गाव नगर मे किन्ही साधु साध्वी जी को या श्रावक श्राविका को उक्त आगम साराश की पुस्तकें केवल अध्ययन करने मात्र के लिये प्राप्त करनी हो तो पत्र सपर्क श्री ललित भाई सेठ के पते से आगम मनीषी मुनिराज से सपर्क करे ।

उस ग्राम नगर मे किसके पास आगम साराश सेट गया है उसका पता भेज दिया जायेगा ।

आगम सारांश प्रचार विवरण

१ साराश पुष्प ३२ के सेट सप्लाई हुए— १०६०

२ जैनागम नवनीत ८ खड के सेट सप्लाई हुए — ८५०

सप्लाई हुए कुल सेट— १९१०

हिन्दुस्तान मे (लगभग सभी प्रातो मे)

१ गुजरात २ उत्तर भारत ३ पूर्व भारत ४ दक्षिण भारत

५ महाराष्ट्र ६ मध्यप्रदेश ७ राजस्थान

४ गावो नगरो की सप्लाई सख्या - ४७०

५ स्थानक सघ सस्था सप्लाई सख्या - ३७०

६. फ्री सप्लाई सख्या- साधु साध्वी को ७१

सघ स्थानक को ६९

१४०

७ सत सतियो को कुल सप्लाई सेट - १५०

८ अनेक सेट मगाने वाले (वितरण हेतु) -५४

नोट - (१) दोनो प्रकार के सेट लगभग अनुपलब्ध है ।

(२) छुटकर पुस्तकें कुछ उपलब्ध है जिसकी सूची इसी पुस्तक में देखें ।

गुजराती भाषा में सारांश

अजरामर लीम्बडी सघ के पूज्य मुनिराज श्री प्रकाशचन्द्र जी स्वामी जैनागम नवनीत आठ खडो का गुजराती अनुवाद सपादित कर रहे है जो सपूर्ण सेट १९९८ जनवरी तक उपलब्ध हो सकेंगे । अग्रिम बुकिग एव सहयोग के लिए पत्र **सपर्क सूत्र** - प्रफुल्ल कुमार कातिलाल तुरखिया

तुरखिया रेडीमेड स्टोर्स,ठे धागधा ना उतारा नी सामे,

पोस्ट- सुरेन्द्र नगर-३६३००१ गुजरातनोट -

नोट- इस आवृति में पुस्तक का नाम रहेगा- ''मीठी मीठी लागे छे महावीर नी देशना''

नई योजना (सहयोग-साभार)

जैनागम नवनीत प्रश्नोत्तर

सहायक सदस्य

१ श्री गौतम चन्द जी काकरिया, मद्रास
२ श्रीमति हसा बेन ललित चन्द्र जी सेठ, सुरेन्द्रनगर
३ श्री प्रतापमुनि ज्ञानालय, बडी सादडी
४ श्री अक्षयकुमार जी सामसुखा, बम्बई

अग्रिम ग्राहक

१ तिलोक चन्द्र जी कानूगा, अहमदाबाद
२ श्री ललित चन्द्र मणीलाल सेठ, रतनपर

आभार

विघ्न सतोषी महानुभावो ने एव छद्मवेषी आत्माओ ने अध्यापन प्रावधान मे प्रवृत्त आगम मनीषी मुनिराज के प्रतिभ्रम फैलाने हेतु गुजरात मे गुमनामी पत्र, आक्षेप पत्र, जाली दस्तक के व्रताक्षेप पत्र प्रेषित कर अध्ययन आकाक्षी आत्माओ के रुचि मे विघ्न पैदा करने के अश्लील कर्त्तव्य किये हैं। उन्हे क्षमा किया जाता है और मुमुक्षु आत्माओ के ज्ञान आकाक्षा वृद्धि हेतु यह प्रशसा पत्र सकलन युक्त प्रश्नोत्तर सुदीर्घ प्रावधान प्रारभ किया जाता है। ऐसे उच्च प्रावधान के उक्त निमित्तको के प्रति आभार इस पुष्प के माध्यम से प्रेषित है।